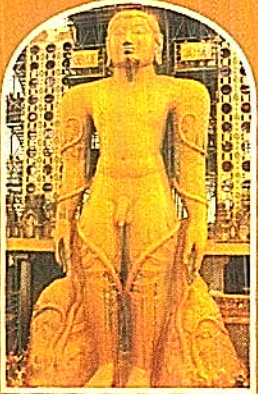

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2544

VOLUME : 8 | ISSUE : 8 | MUMBAI, FEBRUARY 2018 | PAGES : 72 | PRICE : ₹25

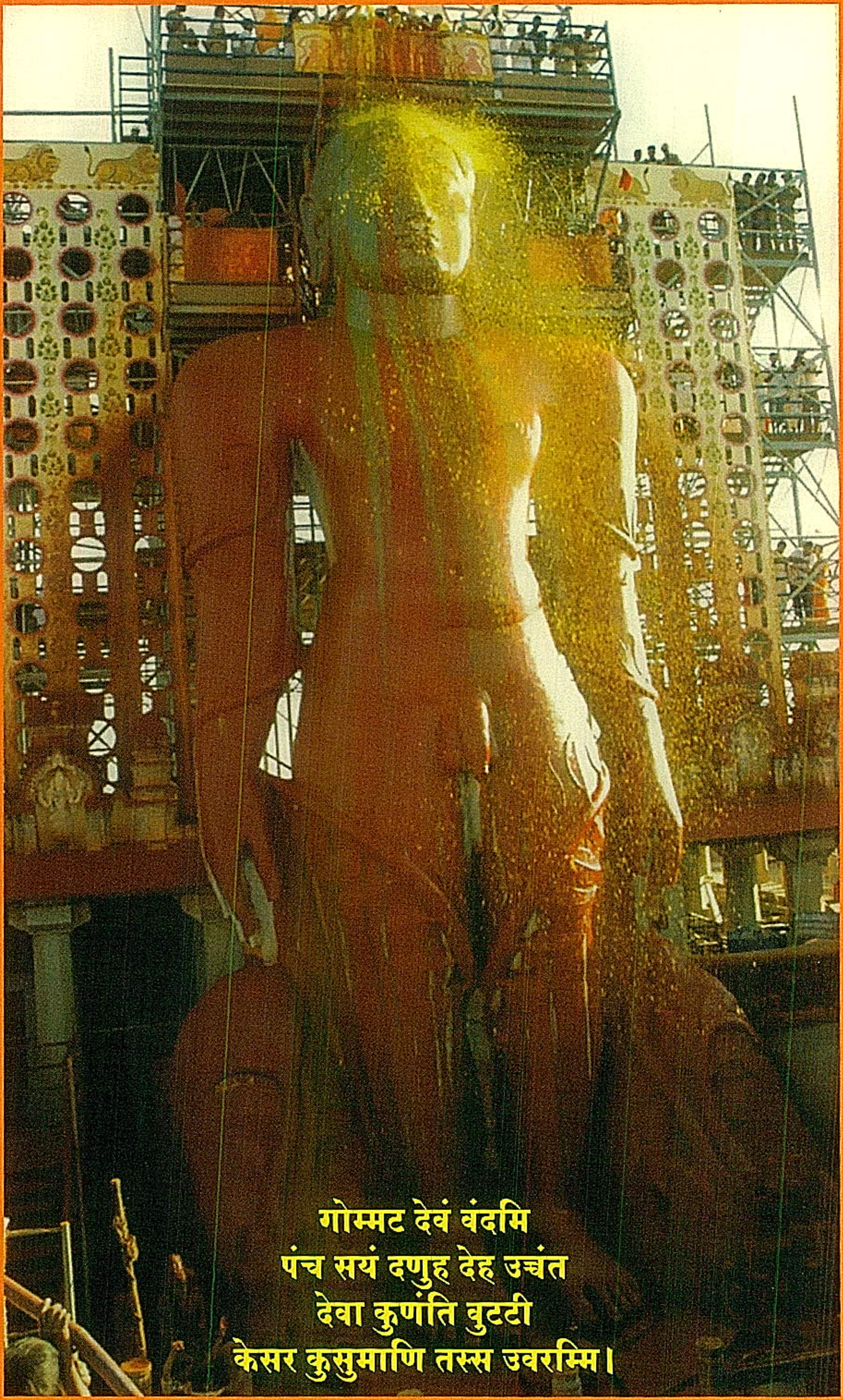
गोम्मट देवं वंदमि
पंच सयं दणुह देह उच्चंत
देवा कुणंति वुटटी
केसर कुसुमाणि तस्स उवरम्मि।

आईये! अवसर, जीवन का सौभाग्य बनकर आया है

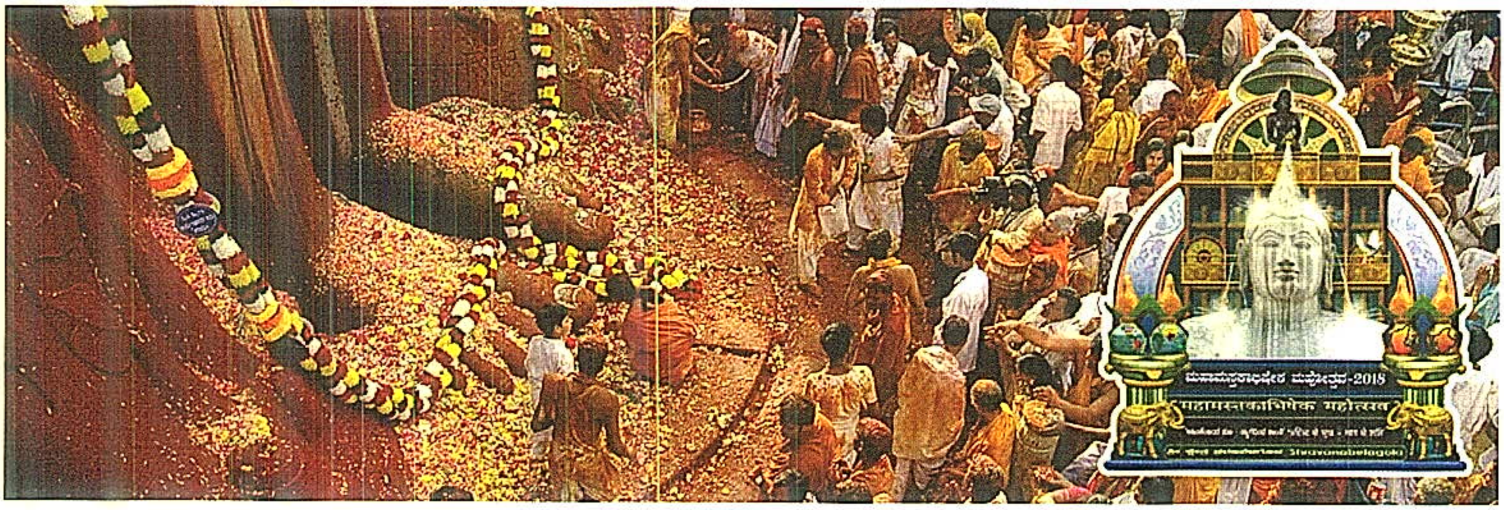

जिस क्षण, जिस पल का इन्तजार हम बारह वर्षों तक लगातर रूप दे करते हैं, वह अवसर आ चुका है। मेरा उद्बोधन जब आप पढ़ रहे होंगे तब श्रवणबेलगोला मे हमारी आस्था, श्रध्दा, विश्वास के प्रतीक, संपूर्ण विश्व मे दिगंबरत्व के संदेश के संवाहक गोम्मटेश्वर बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक प्रारंभ हो जायेगा। पिछले उद्बोधन में हमनें श्रवणबेलगोला की संपूर्ण व्यवस्थाओं के इतिहास का उल्लेख किया था।

मैं आपको इस प्रासंगिक विशेषांक के माध्यम से अवगत कराना चाहती हूँ कि संपूर्ण विश्व में श्रवणबेलगोला दिगंबरत्व का विश्वतीर्थ है, जहाँ प्रतिदिन देश-विदेश से हजारों श्रध्दालु आकर गोम्मटेश्वर के चरणों में नतमस्तक होकर दिगंबर जैन धर्म के बारे में बहुत सारी जानकारी लेकर जाते हैं, श्रवणबेलगोला इसलिये भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि बारह वर्षीय महामस्तकाभिषेक के माध्यम से हम सब शासन-प्रशासन के साथ मिलकर भारतीय दिगंबर श्रमण संस्कृती को मनाते हैं। इस महामस्तकाभिषेक महोत्सव में केवल दिगंबर जैन ही नहीं बल्कि संपूर्ण कर्नाटक मेजबान बन जाता है और विश्व को आमंत्रित करता है।

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक महोत्सव कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व जब मुझे परम पूज्य जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी ने मुझे सौंपा तो विचार आया कि एक छोटी सी लुटिया से गुल्लिका अज्जी जब महान प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक कर कल्याणी सरोवर को लबालब कर सकती है तो मैं संपूर्ण विश्व के श्रध्दालुओं को बुलाकर दिगंबरत्व के प्रति श्रध्दा से लबालब करने का कार्य करुंगी। संपूर्ण देश का दौरा किया, हमारी समाज की लोगों की श्रध्दा गोम्मटेश्वर बाहुबली स्वामीजी व भट्टारक स्वामीजी के प्रति अभूतपूर्व है। गोम्मटेश्वर का मौन आकर्षण है वही स्वामीजी का खिलखिलाता समन्वयपूर्ण व्यवहार सभी को इस ओर आकर्षित करता है। बच्चा-बच्चा गोम्मटेश्वर को अपना तीर्थ समझता है। जैन एकता का अभूतपूर्व समागम इस महामस्तकाभिषेक के माध्यम से देखनेको मिलता है।

मैं नतमस्तक हूं गोम्मटेश्वर के चरणों में जिनके निमित्त से यह अभूतपूर्व आयोजन होता है। ऐतिहासिक दृष्टी से भी श्रवणबेलगोला का भी बहुत महत्व है, ईसा से 300 वर्ष पूर्व अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामीने मध्यप्रदेश के उज्जैन में दुर्भिक्ष की

आशंका में अपने बारह शिष्यों के साथ यहाँ के लिये विहार किया था तब मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त ने भी उनसे प्रभावित होकर दिगंबर जैन धर्म स्वीकार किया था। आचार्य भद्रबाहु स्वामी से दिगंबर दीक्षा लेकर मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त ने जो अभूतपूर्व कार्य किया वह भद्रबाहु स्वामी की सल्लेखना में सेवा वैयावृत्ती की और स्वयं ने भी 12 वर्ष पश्चात् सल्लेखना-समाधिमरण धारण किय। इसी कारण यह पहाड़ चंद्रगिरि नाम से विख्यात हुआ। इतिहासकारों ने यहां के शिलालेखों के माध्यम से इस भूमि को अत्यंत प्राचीन बताया है।

आज हम जो जैन गणित पढ़ते हैं उन करणानुयोग के प्रमुख ग्रंथों गोम्मटसार, जीवकांड, कर्मकांड, त्रिलोकसार जैसे महान ग्रंथों को आचार्य नेमिचंद्राचार्य सिध्दांतचक्रवर्ती ने इसी भूमि पर अवतरित किया था।

उन्हीं महान आचार्यों के मार्गदर्शन में गंगराज्य के महाप्रतापी राजा राजमल्ल के सेनापति वीर मार्तंड महामात्य चामुंडराय ने अपनी माँ काललदेवी की इच्छा पूर्ण करने के लिये गोम्मटेश्वर श्री श्री श्री बाहुबली स्वामीजी की अद्वितीय, अनुपम प्रतिमा का निर्माण कराया, जो 1037 वर्षों बाद भी हम सबकी इच्छाओं का तृप्त करने में सहायक है। महान गुल्लिका अज्जी ने प्रथम महामस्तकाभिषेक के दौरान ही संदेश दे दिया था कि गोम्मटेश्वर के दरबार में राजा हो या रंक सबके प्रति समान दृष्टि है।

आज मुझे यह लिखते हुये प्रसनन्ता है कि इस ऐतिहासिक महान अवसर पर तीस दिगम्बर आचार्य, तीन सौ से अधिक पिच्छिधारी संत, हजारों प्रतिमाधारी श्रावक, चतुर्विध संघ व लाखों श्रध्दालुगण गोम्मटेश को नमन करने श्रध्दा से लबालब हो कर आये हैं। क्योंकि सबके जीवन में यह अवसर सौभाग्य बनकर आया है, जिसने अवसर का लाभ उठा लिया वह धन्य है। संपूर्ण देश में एक लहर सी चल रही है, 'श्रवणबेलगोला चलो, सौभाग्य आपको बुला रहा है'।

आईये! श्रवणबेलगोला आपके स्वागत सत्कार के लिये पूर्ण व्यवस्थाओं के साथ तैयार है। आपके लिये अत्याधुनिक आवास है, तो सुस्वादु भोजन भी है।

त्यागी नगर में आचार्य मुनिराजों का आशीष है वहीं गोम्मटेश का महान संदेश 'अहिंसा से सुख, त्याग से शांति, मैत्री से प्रगति, ध्यान से सिध्दि' जीवन को समुन्नत बनाने का संदेश प्रदान कर रहा है।

कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी ने अपनी दूरदार्शिता से हमें यहाँ तक पहुँचा दिया है। अब आपका और हमारा कर्तव्य है कि हम गोम्मटेश्वर का महामस्तकाभिषेक कर पुण्यार्जन करें। महामस्तकाभिषेक हमारी -

एकजुटता का महापर्व है।
श्रमण संस्कृति का गौरव उत्सव है।
उर्ध्व चेतना के आरोहण का पर्व है।
जैनत्व का गौरव है।
अहिंसा का संदेश वाहक है।
त्याग का अनूठा पर्व है।
बाहुबली के अटल ध्यान की महत्ता का परिचायक है।
काललदेवी की दृढ़ प्रतिज्ञा का सुफल है।
गुल्लिका अज्जी की श्रध्दा का प्रतीक है।
चामुंडराय की भक्ति का महोत्सव है।
आचार्य नेमिचंद्रजी के प्रतिष्ठा पाठ का मंत्र है।
अनाम शिल्पी के श्रम का महोत्सव है।
चारुकीर्ति की कीर्ति का पर्व है।
दिगंबरत्व के प्रति अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने का पर्व है।

आईये! श्रध्दा से अभिशिक्त होकर आईये और पुण्य से लबालब होकर जीवन में बाहुबली सी अखंड साधना को पाने का उपक्रम करके अपने जीवन को महान बनाईये।

आईये! सौभाग्य आपको बुला रहा है।

Sarita Jain

- सरिता एम. के. जैन, चैनन्ई
राष्ट्रीय अध्यक्षा

महामंत्री प्रतिवेदन

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से श्री श्री श्री गोमटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक 2018 के पावन प्रसंग पर पधारे आप सभी का सहर्ष स्वागत करता हूँ।

दिगम्बर जैन धर्म प्राचीन है, स्वाभाविक है इसके अनुयायी भी उसके उद्‌भव काल से रहे हैं। तीर्थंकर भगवान की परंपरा आदि प्रभु ऋषभदेव से भगवान महावीर तक चली है। इसके समानान्तर संतगणों में, प.पू. आचार्य, मुनि आर्यिका माता आदि होते रहे हैं। बाद मे श्रमण संस्कृति को जीवंत रखने में पूज्य भट्टारक स्वामी का भी पदार्पण हुआ है। साथ साथ पंचकल्याणक, प्रतिष्ठा, बिम्ब स्थापना का इतिहास भी प्राचीन है। हमारे आराध्य तीर्थंकर एवं असंख्य मुनिवरों ने घोर तपश्चर्या कर मोक्ष प्राप्त किया है वे सभी स्थान हमारे लिए पवित्र हैं। पूजनीय हैं, जिनकी वंदना कर हम अपना जीवन धन्य मानते हैं। ऐसे तीर्थक्षेत्रों, मंदिरों का संरक्षण, संवर्धन और सम्यक विकास करना हमारा पुनीत कर्तव्य है।

महानुभावों, इसी उद्‌देश्य से प्रेरित होकर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का गठन सन 1902 में हुआ। इसी कमेटी की ओर से भारत में फैले एक–एक तीर्थ का सर्वेक्षण कराकर डिरेक्टरी प्रकाशित करके तीर्थो की दशा और दुर्दशा के बारे में समाज को अवगत कराया, हमारे तीर्थों पर हकों एवं अधिकारों को लेकर विवाद होने लगे, अतिक्रमण की घटनाएं जोर पकड़ने लगी, इसके लिये कोर्ट–कचहरी के मुकदमे हुये, श्री तीर्थराज सम्मेदशिखरजी, श्री गिरनारजी, श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर, श्री केशरियाजी आदि क्षेत्र की रक्षा के लिये भारतवर्ष के वरिष्ठ विधिवेत्ताओं की सेवायें ली जा रही हैं तथा करोडों रूपये न्यायालय में खर्च हो रहे हैं, जिसमें कमेटी को भारी सफलता भी मिली है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, समूचे दिगम्बरत्व का प्रतिनिधित्व करते हुये, माननीय सर्वोच्च न्यायालय में स्वामित्व, व्यवस्थापन तथा अपने अधिकारों की रक्षा के लिये संघर्षरत है।

दिगम्बर जैन परम्परा में सबसे श्रेष्ठ स्थान यदि किसी परम्परा का है तो वह है गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामीजी के महामस्तकाभिषेक की विगत 1037 वर्षों से परम्परा निर्बाध रूप से जारी है। गोम्मटेश भगवान बाहुबली की प्रतिमा हम सबके जीवन में 'अहिंसा से सुख, त्याग से शांति, मैत्री से प्रगति, ध्यान से सिध्दि" का सन्देश देती हुई प्रतीत होती है ।

प्रति 12 वर्ष में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामीजी का महामस्तकाभिषेक 1008 कलशों से जल, दूध, इक्षुरस, नारियल पानी, दही, धृत, कल्क चूर्ण, हरिद्रा आदि 13 प्रकार की सामग्रियों के सम्मिश्रण से परम्परा अनुरूप होती है। सन 981 ई. से प्रारंभ इस महामस्तकाभिषेक की परम्परा का निर्वहन कर्नाटक राज्य के सहयोग से प्रारंभ से ही किया जा रहा है। समय–समय पर प्रक्रियाओं में परिवर्तन के साथ उसे और सुविधाजनक बनाया गया है। ऐसे अविस्मरणीय, अनमोल अवसर को अपने जीवन में चिरस्थायी करने के लिये आईये हम सब गोम्मटेश्वर का महासम्तकाभिषेक कर अपनी भावनाओं का अर्घ्य समर्पित करें।

अंत में मैं करबध्द निवेदन करता हूं कि हमारे तीर्थ, मंदिर, शिलालेख प्रशस्ति, पट्टावली, हस्तलिखित सिध्दांत ग्रंथ को जीवित रखने के लिए, उनके संरक्षण के लिए आप अपनी भक्ति का अर्घ्य समर्पित करें तथा कृपया तन–मन–धन से अपने आराध्य के चरणों पर दान रूपी पुष्प समर्पित करके इसे संरक्षित करें ।

जय जिनेन्द्र, श्री गोमेटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी

संतोष जैन पेंढारी

महामंत्री

श्रवणबेलगोल, गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली एवं महामस्तकाभिषेक की परम्परा

डॉ. अनुपम जैन

तीर्थंकरों की पुण्य भूमि भारत वर्ष में तीर्थों की परम्परा अनादिनिधन है यही कारण है कि शाश्वत जन्म भूमि अयोध्या तीर्थ एवं शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी हैं किन्तु हुण्डावसर्पिणी के कालदोष से इस युग में अयोध्या में मात्र 5 तीर्थंकरों का जन्म हुआ एवं सम्मेदशिखर जी में 20 तीर्थंकरों को निर्वाण प्राप्त हुआ। 15 अन्य जन्म भूमियाँ तथा 4 अन्य निर्वाण भूमियाँ भी जैनत्व के गौरव में अभिवृद्धि कर रहीं हैं। लेकिन पौराणिक आधार पर चिन्हित इन प्राचीन तीर्थों में से बहुत कम तीर्थ ऐसे हैं जो अपने पौराणिक संदर्भों के साथ–साथ ऐतिहासिक साक्ष्य भी समाहित करते हैं। चौबीसवें और अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाण 527 ई. पू. के लगभग 150–200 वर्षो के बाद ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में उत्तर भारत में पड़े भीषण 12 वर्षीय दुर्भिक्ष के पूर्व आचार्य भद्रबाहु ने अपने 1200 मुनियों के विशाल संघ के साथ दक्षिण की ओर गमन का निश्चय किया तथा श्रवणबेलगोल को अपनी साधना स्थली बनाया तो निश्चित ही उस समय इस पवित्र तीर्थ का अपना वैशिष्ट्य रहा होगा। आचार्य भद्रबाहु का जन्म बंगाल प्रान्त के पुन्डरवर्द्धन नगर में हुआ था। उनका काल 433 ई.पू. से 357 ई. माना जाता है।

आइये महामस्तकाभिषेक 2018 के पुनीत अवसर पर हम श्रवणबेलगोल के अतीत में झाँकने का प्रयास करें।

श्रवणबेलगोल के चिक्कबेटट स्थान से लगभग 600 ई. का प्राचीन शिलालेख मिला है, जिसमेंस्थल का नाम 'कटवप्र' दिया है। सातवीं शती के संस्कृत लेखों में इसका कटवप्र गिरि (या शैल) नाम मिलता है और यही नाम कन्नड़ में भी प्राप्त है। **'कट'** का तात्पर्य समाधि–स्थल तथा **'वप्र'** का अर्थ पहाड़ी है। यह नाम युक्तिसंगत भी है, क्योंकि इस पवित्र क्षेत्र में बहुसंख्यक मुनियों तथा अन्य जनों ने सल्लेखना द्वारा समाधिमरण प्राप्त किया। बेलगोल (या बेल–गोल) ग्राम–नाम भी यहाँ के लेखों में मिला है।

यहाँ के लेखों का सर्वाधिक धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व है। उनमें मूल संघ तथा कुंदकुंद आम्नाय के आचार्यों की नामावलियाँ मिलती हैं। अन्य स्त्रोतों से प्राप्त नामावलियों से मिलान के लिये ये बहुत उपयोगी प्रमाणित हुई हैं। अनेक लेखों से आचार्य भद्रबाहु और उनके साथ सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य सहित बहुसंख्यक जनों के इस क्षेत्र में आगमन संबंधी जैन अनुश्रुति की पुष्टि होती है। इस विषय में श्रवणबेलगोल के लेख संख्या 1, 34, 71, 77, 351, 254 तथा 364 विशेष उल्लेखनीय हैं। लेख संख्या 34 शक संवत् 572 (650 ई.) का है। इस लेख से ज्ञात होता है कि भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के कुछ समय बाद इस क्षेत्र में जैन धर्म में शिथिलता आ गयी। मुनि शान्तिसेन ने उसे पुनः प्रतिष्ठापित किया।

चन्द्रगिरि पहाड़ी पर सात सौ ऋषियों द्वारा समाधिमरण के उल्लेख मिलते हैं। आत्म–धर्म में लीन होकर देह–विमोचन 'सल्लेखना' या 'समाधिमरण' है। इस क्षेत्र के लगभग एक सौ लेखों से ज्ञात होता है कि यहा बहुसंख्यक मुनियों, आर्यिकाओं तथा श्रावक–श्राविकाओं ने समाधिमरण प्राप्त किया। गंगवंशी मारसिंह जैसे प्रतापी विजेता शासक ने भी अन्त में यहीं समाधि–साधना की।

अनेक लेखों में विद्वान आचार्यो का गुणगान है। यहाँ की दो पवित्र पहाड़ियाँ चन्द्रगिरि तथा विन्ध्यगिरि हैं। एक सौ से ऊपर लेखों में दक्षिण भारत से इन पवित्र स्थलों की तीर्थ यात्रा हेतु आए हुए संघों एवं यात्रियों का उल्लेख हैं। उत्तर भारत के विभिन्न भागों से आए हुए यात्रियों का वर्णन 53 लेखों में मिला है। यहाँ सबसे बड़ा 12,000 मुनियों के संघ का आगमन कहा गया है। (प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी)

श्रवणबेलगोल क्षेत्र में विद्वानों का बड़ा सम्मान था। इन विद्वानों ने सच्चे जीवन–दर्शन के प्रचार में तथा विविध विचार–धाराओं में समन्वय स्थापित करने में अत्यन्त उपयोगी कार्य निष्पन्न किये। अनेक राजवंशों के बीच मैत्री–संबंध स्थापित करने में भी उनके कार्य प्रशंसनीय हैं। राष्ट्रकूट और गंग राजवंशों के बीच मैत्री संबंध स्थापित करने में जैन धर्माचार्यों का विशेष योगदान था।

कर्नाटक क्षेत्र में पूर्व तथा उत्तर मध्यकाल में शैव तथा वैष्णव धर्मो का भी जोर था। ग्यारहवीं–बारहवीं शती से इन धर्मो का पुनरुत्थान हुआ। इन दोनों धर्मो के साथ जैन धर्म ने मैत्री स्थापित कर अनेक कल्याणकारी संश्लिष्ट तत्त्वों के विकास में महत्वूपर्ण भूमिका निभायी। इसका प्रमाण कर्नाटक ही नही, दक्षिण भारत के अन्य क्षेत्रों के साहित्य, कला एवं लोक जीवन में

दृष्टव्य है। अन्य प्रमुख धर्मों के साथ अनेकांतवादी जैन धर्म ने द्वेष या संघर्ष की स्थिति नहीं आने दी। दक्षिण के अनेक धर्मस्थलों में आज भी विविध धर्म साथ–साथ पल्लवित–पुष्पित हो रहे हैं। धर्मस्थल इसका जीवंत उदाहरण है।

600 से अधिक शिलालेखों से समृद्ध यह नगरी अत्यन्त प्राचीन काल से दि. जैन समाज के लिये परम पुनीत पावन तीर्थ तो थी ही किन्तु गंगवंशीय नरेश रायमल्ल चतुर्थ के सेनापति एवं अमात्य वीर चामुण्डराय द्वारा 981 ईसवी में भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली की विश्व में अद्वितीय मूर्ति की प्रतिष्ठापना से इस तीर्थ की गरिमा में अगुणित वृद्धि हुई है। इसी पत्रिका के आगामी पृष्ठों में आपको मूर्ति निर्माण का पूरा कथानक देखने को मिल जायेगा। ईसवी सन् 981 में 13 मार्च को जैन दर्शन के उद्भट विद्वान गोम्मटसारादि ग्रंथों के सृजन कर्ता **आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धांतचकवर्ती** के सान्निध्य में प्रथम महामस्तकाभिषेक के बाद अब तक अनेक महामस्तकाभिषेक हो चुके हैं लेकिन हमारे साधर्मी बंधुओं की रिकार्ड व्यवस्थित न रखने की आदत के कारण हमें पूरे संदर्भ नहीं मिलते हैं। जो भी संदर्भ हमें प्राप्त हुए हैं उनके आधार पर अब तक निम्नांकित महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हो चुके हैं।

981 ई.(13 मार्च)	चामुण्डराय द्वारा प्रथम अभिषेक
1398 ई.(31 जनवरी)	पण्डिताचार्य (संभवतः मठ के स्वामी जी) द्वारा
1612 ई.	शांतिवर्णी द्वारा
1659 ई.	मैसूर नरेश दोड्ड देवराज वाडियार द्वारा
1672 ई.	मैसूर नरेश दोड्ड देवराज वाडियार द्वारा
1675 ई.	मैसूर नरेश दोड्ड देवराज वाडियार द्वारा
1677 ई.	मैसूर राज के महामंत्री विशालाक्ष द्वारा (अनन्त कवि द्वारा प्रत्यक्ष दर्शन)
1800 ई.	मैसूर महाराजा भुम्मदी कृष्णराज वाडियार (तृतीय) द्वारा (शिलालेखीय साक्ष्य)
1825 ई.	पुनः कृष्णराज वाडियार द्वारा (पं. शांतिराज का शिलालेख)
1827 ई.	एक और महामस्तकाभिषेक हुआ (शिलालेख कमांक 118)
1871 ई.	कैप्टन मैकेन्जी द्वारा वर्णित इंडियन एक्टीक्केरी भाग–2 (प्रत्यक्षदर्शी)
1887ई.(14 मार्च)	भट्टारक लक्ष्मीसेनजी, कोल्हापुर द्वारा (Epigraphica Kamatika Vol.2, Indian Antiquary) में वर्णित
1900 ई.	वही
1910 ई.(30 मार्च)	भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा
1925 ई.(15 मार्च)	भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा
1940 ई.(26 फरवरी)	मैसूर राज्य के तत्वावधान में
1953 ई(5 मार्च)	मैसूर राज्य के तत्वावधान में
1967 ई.(30 मार्च)	कर्नाटक शासन एवं एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में
1981 ई.(22 फरवरी)	एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में
1993 ई.(14 दिसम्बर)	एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में
2006 ई. (8–19 फरवरी)	एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में
2018 ई.(17–25 फरवरी)	एस. डी. जे. एम. आई. मैनेजिंग कमेटी के तत्वावधान में (प्रस्तावित)

उक्त सभी महामस्तकाभिषेकों में सुदूर प्रान्तों से आकर लाखों भक्तों ने अपने नयनों को तृप्त किया है। मुझे भी 1981 का सहस्त्राब्दि महोत्सव, 1993 और 2006 के महामस्तकाभिषेक को देखने का अवसर मिला है। 2018 के महामस्तकाभिषेक की पूर्व बेला में आयोजित जैन युवा सम्मेलन, राष्ट्रीय विद्वत् सम्मेलन एवं अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत सम्मेलन के निमित्त श्रवणबेलगोल जाने के कारण कदम दर कदम चल रही तैयारियों और सतत आकार लेते निर्माण एवं विकास कार्यों को निहारने का भी मौका मिला और अब हम उम्मीद करते हैं कि इन पंक्तियों के लिखे जाने के चन्द दिनों बाद 17 फरवरी 2018 को एक बार पुनः भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक के दुर्लभ नयनाभिराम दृश्य को निहारकर ही यह नयन तृप्त हो सकेंगे।

यह सत्य है कि दुनिया में इससे बड़ी बुद्ध की अनेक मूर्तियाँ हैं। जंजम व स्पिइमतजल भी है किन्तु वे सब एक पाषाण से निर्मित नहीं हैं। भारत में इससे बड़ी एक पाषाण से निर्मित केवल 2 दि. जैन मूर्तियाँ हैं। 1. ऋषभगिरि–मांगीतुंगी में 108 फीट के भगवान ऋषभदेव 2. बावनगजा जी में 84 फीट के भगवान ऋषभदेव। किन्तु गोम्मटेश्वर की यह मूर्ति अद्भुत एवं निराली है। **इसकी शोभा बरनी न जायें।** इसका शरीर सौष्ठव, मोहक छवि एवं अंग विन्यास अनुपम है। नीचे के बाक्स में हमने इसकी कुछ माप दी हैं :–

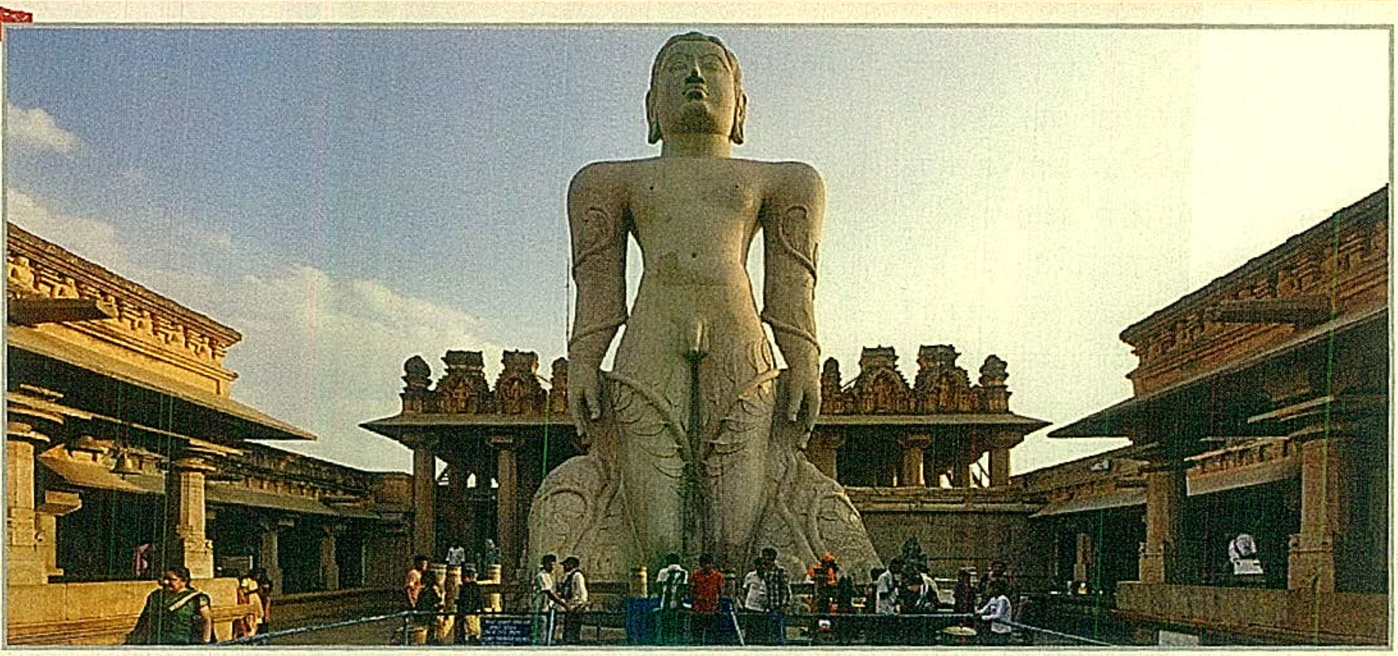

पाँव की ऊँचाई	2'8"	गर्दन से सिर की चोटी तक	11'0"
पाँव के आदि से घुटने तक	15'2"	बाहुओं की लम्बाई	30'0"
पाँव के आदि से कमर रेखा तक	31'4"	शिश्न की लम्बाई	4'0"
पाँव के आदि से नाभि तक	34'1"	कानों की लम्बाई	5'10"
पाँव के आदि से गर्दन रेखा तक	45'10"	नाक की लम्बाई	3'9"
घुटने से कमर रेखा तक	16'2"	हाथ की लम्बाई	
		(क) कलाई से बीच की अंगुली की लम्बाई	8'0"
कमर रेखा से नाभि तक	2'9"	(ख) कलाई से तर्जनी तक लम्बाई	7'0"
नाभि से गर्दन रेखा तक	20'11"	(ग) कलाई से अंगुठे तक लम्बाई	5'0"
गर्दन रेखा से गर्दन तक	2'8"		
		कुल ऊँचाई	**58'8"**

साभार – श्रवणबेलगोल, ष.शेट्टर

मैं तो यही चाहता हूँ कि अपने नयनों से भगवान बाहुबली की कभी धवल, कभी पीली, कभी लाल आदि इन्द्रधनुषी आभाओं से सराबोर हो सकूँ। यह महोत्सव इस कारण भी बडा विशिष्ट है क्योंकि इसमें आचार्य, मुनि एवं आर्यिका माताओं, क्षुल्लक, ऐलक, क्षुल्लिकाओं सहित लगभग 250–300 पिच्छीधारी संत एक साथ उपस्थित होंगे। इतने दिगम्बर संतों को देखना स्वयं में एक अविस्मरणीय छवि मन मस्तिष्क पर अंकित करेगा। दक्षिण भारत में महान दिगम्बर जैन संस्कृति की अपनी सूझबूझ से रक्षा करने वाले गेरूवें वस्त्रधारी पूज्य भट्टारक स्वामी जी भी उपस्थित होंगे क्योंकि यह तो उनका ही पर्व है।

आइये हम सब मिलकर उल्लास और उमंग से इस पर्व को मनायें। **सौभाग्य आपको बुला रहा है** किन्तु जिनका पुण्य प्रबल होगा, जो संसाधनों को जुटा सकेंगे वे प्रत्यक्ष में इस दृश्य को निहारेंगे शेष को टेलीविजन चैनलों के माध्यम से ही संतोष करना होगा। लेकिन मेरी दृष्टि में दिगम्बर जैन समाज का एक भी आबाल–वृद्ध ऐसा नहीं बचेगा जो इस महामहोत्सव को न देख सकें। हमारी मंगल कामनायें हैं हम सबको भगवान गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली तथा वहाँ उपस्थित विशाल मुनिसंघ का आशीर्वाद प्राप्त हो और हम अपने महान तीर्थों के संरक्षण, संवर्द्धन का पावन संकल्प लेकर जीवन को धन्य कर सकें। जय गोम्मटेश।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 8 अंक 8 फरवरी 2018

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री हुकम जैन 'काका'	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद वाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर
संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

वर्तमान पीठाधीश जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी	14
महामस्तकाभिषेक महोत्सव का भव्य शुभारंभ राष्ट्रपतिजी ने किया	16
अनुपम तथा अतिशय युक्त, भगवान बाहुबली	21
NONE LIKE BAHUBALI OF SRAVANABELAGOLA	22
Gommateshwar Bhagwan Bahubali Mahamastakabhisheka-2018	24
गोम्मटेश गाथा एक सांस्कृतिक विरासत	26
श्रवणबेलगोला स्थित चन्द्रगिरि का वैभव	30
हमारे देश का नाम भारतवर्ष न होता यदि बाहुबली न होते	32
श्रवणबेलगोला में जैन एकता का शंखनाद	34
जैनाचार्यों से प्रभावित कर्नाटक के राजवंश	36
स्तुतियों में गोमटेश	40
जैनगिरी (जटवाडा) भगवान बाहुबली प्रतिमा	43
बाहुबली महामस्तकाभिषेक : सौभाग्य बुला रहा है!	44
महोत्सव के लिए हो रहीं भव्य तैयारियाँ	48
भट्टारक जी सक्षम, समर्थ है, उम्मीद भी उन्हीं से	50
अनागार परमपूज्य आचार्यश्री आर्यनंदीजी मुनिराज का स्मरणीय योगदान	59

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढी, कम्पनी, चरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बाडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।
2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

कलशा ढारो रे......

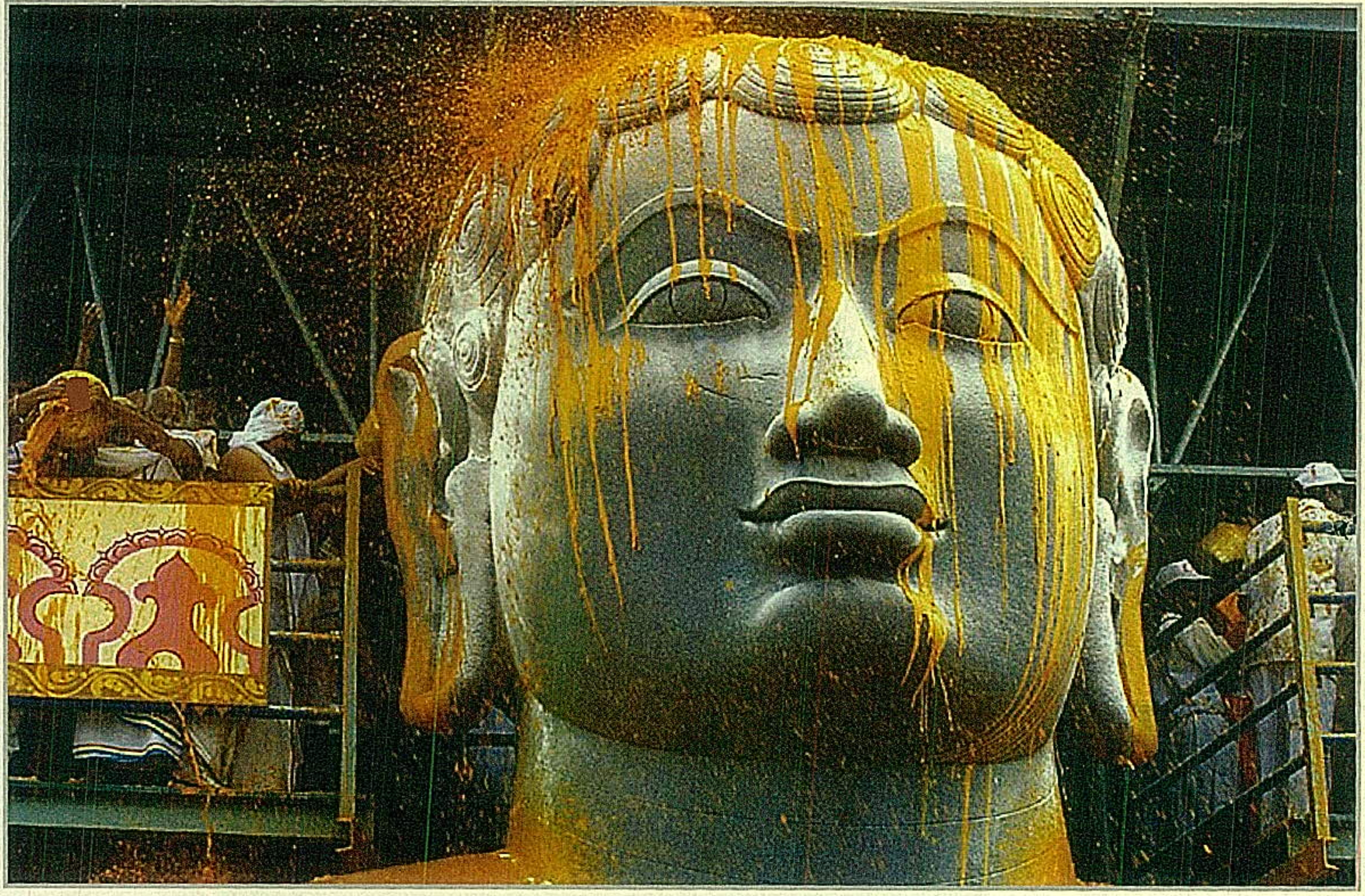

बाहुबलि-महामत्थयाहिसेगो

(बाहुबली महामस्तकाभिषेक-अनुष्टुप छंद)

आचार्य श्री सुनीलसागरजी

णमामि आदिपुतस्स, सुणंदाकुक्खिजं तहा।
भरहस्स लहुं भायं, वाहुवलिं महावलिं।।1।।

आदिनाथ महाराज के पुत्र, सुनंदा महारानी की कुक्षी से उत्पन्न भरत चक्रवर्ती के लघु भाता महावली बाहुबली को नमन करता हूँ।

काल्लल देवि-मादाए, चामुंडेण य णिम्मिदं।
णेमिचंद्राण संपुज्जं, णमामि गोम्मटेसरं।।2।।

काल्ललदेवी माता के लिए चामुंडराय द्वारा निर्मित व नेमिचंद्रचार्य द्वारा प्रतिष्ठापित गोम्मटेश्वर को नमन करता हूँ।

वरिसादो सहस्यादो, सम्मभावुवदेसगो।
रायसता गदा णेगा, गोम्मटेसो दु सुट्ठिदो।।3।।

हजार वर्षों से अनेक राजसता आई-गई किंतु साम्यभाव के उपदेशक गोम्मटेश बाहुबली आज भी सुस्थित हैं।

वारसवरिसा पच्छा, महामत्थयाहिसिगो।
महा-महुच्छवो होदि, णेगा रति-दिणाणि य।।4।।

बारह वर्ष पश्चात महामस्तकाभिषेक होता है, अनेक दिनों तक महा-महोत्सव होता है।

आणंदंति जणा सव्वे, सम्मिलंति वहुजणा।
णेगभासा विभूसा य, पुण्णो देसो पमोददि।।5।।

सभी लोग आनंदित होते हैं, अनेक भाषा और वेशभूषा वाले बहुत लोग सम्मिलित होते हैं, पूरा देश ही प्रमुदित होता है।

उग्घाडेइ मुहे काले, रट्ठज्झक्खो महुच्छवं।
मंती पहाणमंती वि, अणुमोदेदि णंददि।।6।।

शुभ मुहुर्त में इस महोत्सव का राष्ट्रपति उद्घाटन करते हैं तथा मंत्री व प्रधानमंत्री भी प्रसन्नता पूर्वक अनुमोदना करते हैं।

मुक्खमंती, रज्जवालो, अण्णदेसी जणा तहा।
अहियारी णयाहीसा, आगच्छंति हि सेट्ठी वि।।7।।

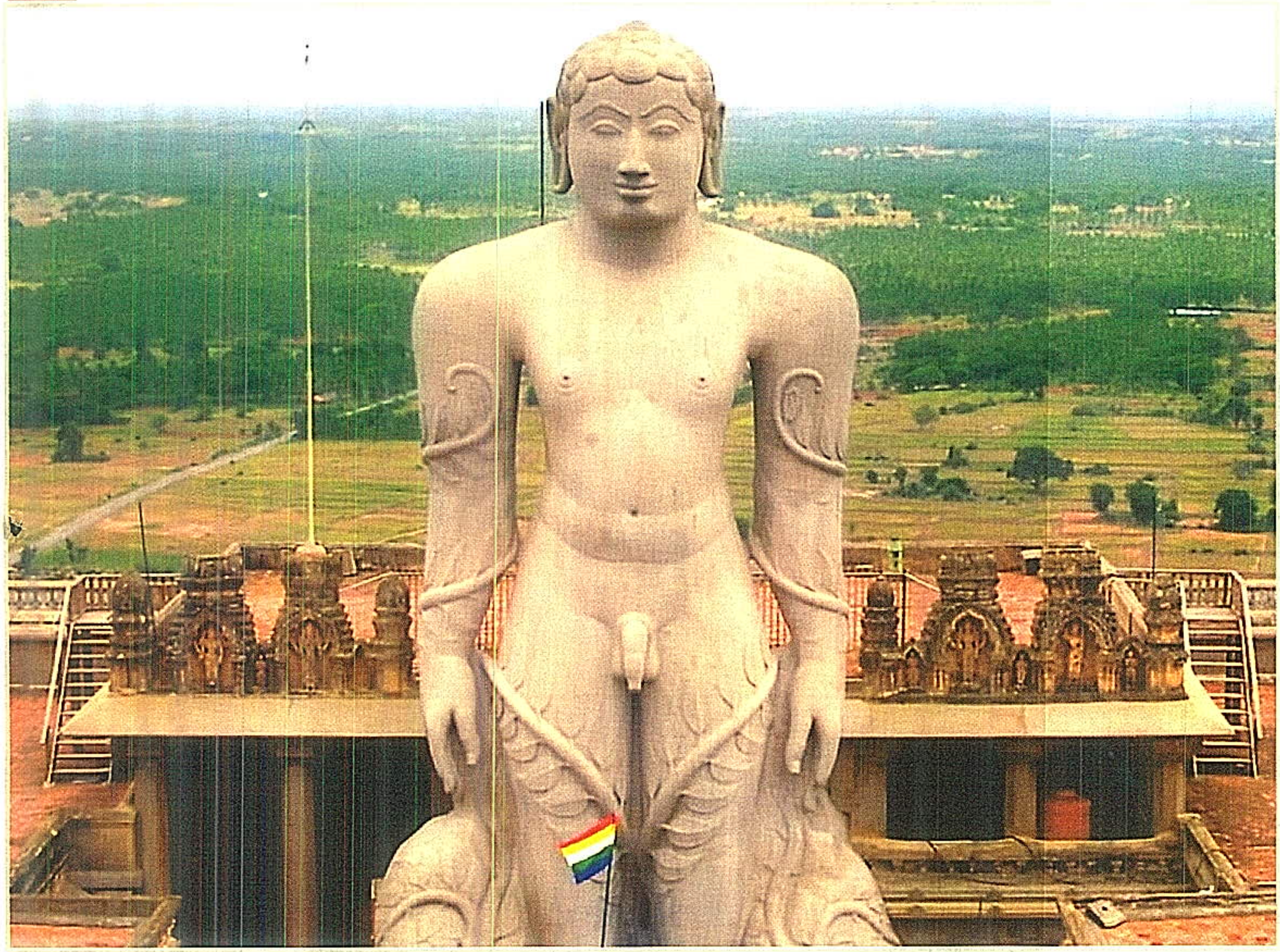

मुख्यमंत्री, राज्यपाल, अन्यदेशों के लोग, राज्याधिकारी, न्यायाधीश तथा श्रेष्ठी भी इस महोत्सव में आते हैं।

आइरिया मुणीसंघा, अज्जिगा खुल्लिगा तहा।
एलगा खुल्लगा भट्टा, णंदंति देससंजमी।।8।।

आचार्य, मुनिसंघ, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, भट्टारक तथा देशसंयमी सभी आनंदित होते हैं।

होदि महाहिसेगस्स, विज्जू-जंते पसारणं।
विस्सासंतिकरो संति-धारा कुंभेण होदि हि।।9।।

विद्युत यंत्रों (टी.वी. चैनल्स) में महामस्तकाभिषेक का प्रसारण होता है फिर कुंभ से विश्वशांति करने वाली शांतिधारा होती है।

गोम्मटेसस्स अच्चाए, वेरग्गभावुज्जइ।
वीदरागो णिरंगो वि. भतीपुण्णेहि रंजिदो।।10।।

वीतरागी निरंग होते हुए भी भक्तिपूर्ण जनों के द्वारा रंजित (रंगवाले) किए जाते हैं। किंतु वास्तव में गोम्मटेश प्रभु की भावपूर्ण अर्चना वैराग्य भाव को उत्पन्न करती है।

जोण्हधम्म-पहावत्थं, भासा पागिद वढ्ढणं।
अंतररट्ठियो गोट्ठी, होदि संसोहणं परं।।11।।

जैन धर्म की प्रभावना के लिए, प्राकृत भाषा के वर्द्धन के लिए, संशोधन परक अंतराष्ट्रीय विद्वत गोष्ठी होती है।

एज्जंति वहुविज्जाणा, बहुभासा विसारदा।
अक्खाराहिसिगं किच्चा, जिण्धर्म जयंति य।।12।।

गोष्ठी में बहुभाषा विशारद वहुत विद्वान आते हैं और अक्षराभिषेक करके जिनधर्म को जयवंत करते हैं।

चारुणिद्देस-दायारो चारुकिती भडारगो।
चारु-संचालणं धारु-समणणओ विसारदो।।13।।

सुंदर निर्देश देने वाले चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी, कार्यक्रमों का सुंदर संचालन व सामाजिक समन्वय साधने में विशारद हैं।

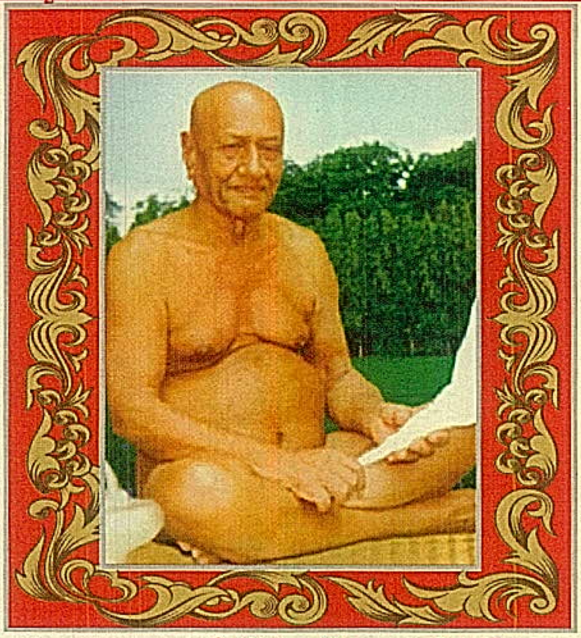

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज

मार्गदर्शन

परमपूज्य आचार्य 108 श्री विद्यानंद जी मुनि महाराज नवयुगीन सांस्कृतिक जागरण के प्रेरणा स्रोत हैं। उसकी धारा के प्रवाहमान करने वाले स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति स्वामी जी धर्म साधना के क्षेत्र में क्रियाशील हैं। स्वस्ति श्री चारुकीर्ति स्वामीजी ने वर्ष 2001 में चन्द्रगिरि में भगवान महावीर के 2600 वें जन्मोत्सव वर्ष पर "चन्द्रगिरि चिक्कबेट्ट महोत्सव" के आयोजन पर आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के आशीर्वाद देते हुए कहा कि श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला के भट्टारक पर आपका पदन्यास हुआ है। आपके निर्देशन में क्षेत्र ने भौतिक व आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में निरन्तर श्रीवृद्धि की है। उसी तरह 1981 में आयोजित महामस्तकाभिषेक महोत्सव आचार्य श्री के कुशल सान्निध्य में ही सम्पन्न हुआ और उसके बाद ही महामस्तकाभिषेक का कार्यक्रम निरन्तर नवीन सोपानों का सृजन करता रहा। अगर यूं कहा जाये कि श्रवणबेलगोला के इस समारोह को अन्तर्राष्ट्रीय जगत में विशेष पहचान आचार्य श्री के आशीर्वाद से मिली है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

आचार्य विद्यानंद जी मुनिराज की जन्मभूमि कर्नाटक में सेडवाल ग्राम है, आपका जन्म वि. नि. 2452 (वि.सं. 1982, 22 अप्रैल, 1925) को हुआ। गृहस्थ नाम सुरेन्द्र था। सन् 1946 में आचार्य महावीरकीर्ति जी से क्षुल्लक दीक्षा, 25 जुलाई, 1963 को आचार्य देशभूषण जी से मुनि दीक्षा ली, तभी से आप मुनि विद्यानंद जी कहलाये। वर्तमान में आचार्य पद को सुशोभित करते हुए अपना मार्गदर्शन समाज को दे रहे हैं। उदात्त विचार, प्रभावशाली प्रवचनशैली व पुरातन संदर्भों में आधुनिक व्याख्याएं कर भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया। "विश्व धर्म की रूप रेखा" आचार्य श्री के विचारों का प्रतिनिधित्व करती है। आप दिगम्बर परम्परा के विशेष प्रभावशाली विद्वान् आचार्य हैं, जिनका राजनैतिक हस्तियों पर भी विशेष प्रभाव रहा है। वर्ष 2018 के महामस्तकाभिषेक में अस्वस्थता के कारण आप उपस्थित नहीं हो सकेंगे किन्तु आपका को पूर्ण मार्गदर्शन व आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। हम उन्हें वंदन व नमन करते हुए उनके सुस्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की कामना करते हैं।

वर्धमान ग्रंथमाला

सान्निध्य

गंगराज्य के महामात्य एवं सेनापति श्री चामुण्डराय ने अपनी माता काललदेवी की इच्छापूर्ति हेतू श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवती आचार्यदेव की पुनीत प्रेरणा से श्रवणबेलगोला के चन्द्रागिरि पर्वत से इन्द्रागिरि पर्वत पर शरसंधान किया और जिस चट्टान में वह शर जाकर लगा उसी में बहुत द्रव्य खर्च कर अज्ञातनामा महाशिल्पी के हाथों में श्री चामुण्डराय ने 57 फुट उत्तुंग भगवान बाहुबली प्रगट करवाये तथा आचार्यद्वय श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती एवं श्री अजीतसेनजी के सान्निध्य में अब से 1037 वर्ष पूर्व प्रतिष्ठित करवाये। तब से इन्द्रगिरि पर विराजित भगवान बाहुबली का ऐतिहासिक महामस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पन्न होता आ रहा है।

20 वीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तिसागरजी के सान्निध्य में सन् 1925 का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ था। सन् 1981 में प्रतिमा स्थापना के 1000 वर्ष पूर्ण होने पर सहस्राब्दी महोत्सव आचार्य श्री विद्यानंदजी की पावन प्रेरणा एवं नेतृत्व में सैकड़ों साधुओं की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था। सन् 1981 के सहस्राब्दी महोत्सव के पश्चात् सन् 1993 व 2006 में दो महोत्सवों में अभिषेक देखने का सौभाग्य ससंघ हमें मिल चुका है। भट्टारक श्री चारूकीर्तिजी के निमंत्रण पर अब तीसरी बार सन् 2018 के महामस्तकाभिषेक महोत्सव में सम्मिलित होने का पावन अवसर ससंघ मिल रहा है।

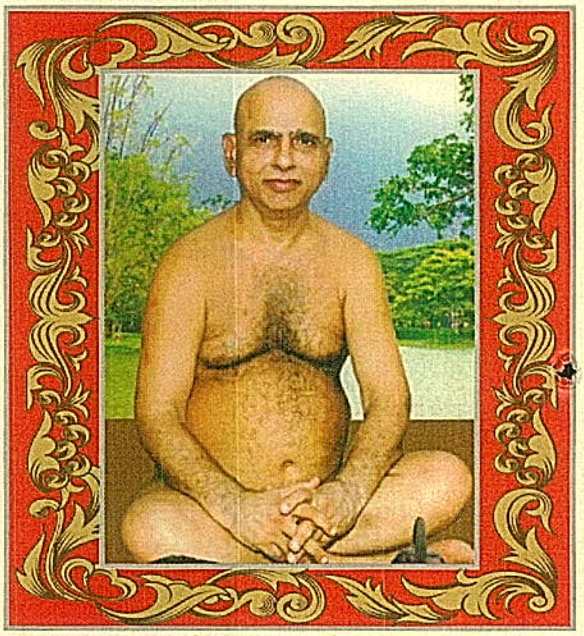

परम पूज्य आचार्य श्री 108 वर्धमानसागर जी महाराज

"अहिंसा से सुख और त्याग से शांति" भगवान् बाहुबली के इस परम संदेश से समग्र विश्व का वातावरण परिवर्तित हो सकता है। अपने बड़े भाई प्रथम चक्रवर्ती सम्राट भरत पर अहिंसक युद्ध में विजय प्राप्त करके भी सब कुछ त्याग कर आत्मशान्ति और परमात्म पद की यात्रा हेतु अपने ही पिता भगवान ऋषभदेव की चरण सन्निधि में दैगम्बरी दीक्षा धारणा कर सिद्धः स्वात्मोपलब्धिः के अनुसार आत्मवैभव को प्राप्त कर सिद्धपद को प्राप्त किया यानी संसार को तथा भौतिक वैभव की नृश्वर जाना-माना तथा आत्मोपलब्धि रूप सिद्धपद प्राप्त कर लिया। यही नका संदेश हम सबके लिए मुक्ति का कारण है और यही समीचीन मार्ग है।

हर बार की तरह सन् 2018 के फरवरी माह में सम्पन्न होने वाला महामस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पूर्ण जगत के लिए सुख-शांति और उन्नति का कारण बनें, ऐसी मंगल भावना के साथ सभी के लिए मंगल आशीर्वाद है।

आ. वर्धमानसागर ससंघ

स्वस्ति श्री नेमिसागर वर्णी चारुकीर्ति स्वामीजी

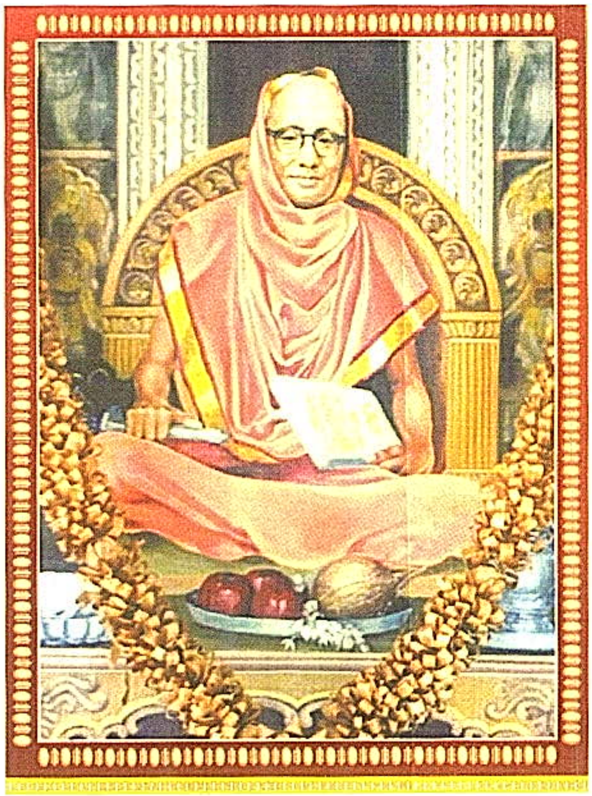

स्वस्ति श्री भट्टाकलंक चारुकीर्ति स्वामीजी

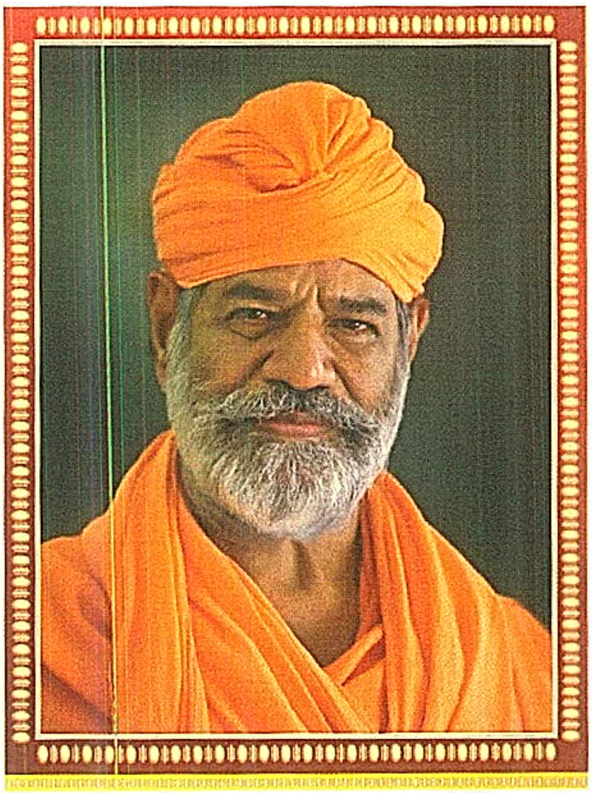

वर्तमान पीठाधीश स्वस्ति श्री चारुकीर्ति स्वामीजी

MAHAMASTAK
abhisheka
2018
17 Feb - 26 Feb

वर्तमान पीठाधीश जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी

पूर्व काल में ऐसे महर्षियों की कमी नहीं थी जो व्यक्ति को देखकर ही यह जान लेते थे कि यह भविष्य में क्या बनेगा और इसकी अभिरुचि किस किस्म की होगी। लक्षण शास्त्र वेत्ता तो अब भी यह बता देते हैं। हस्त रेखा या ललाट को देखकर उसके समस्त भूत, भविष्यत तथा वर्तमान की झांकी प्रस्तुत कर देते हैं। ऐसे ही एक महापुरुष थे जिन्हें ज्योतिष शास्त्र का अच्छा अध्ययन था। वे कुण्डली को देखकर उसके सारे भविष्य को हस्तामलक देख लेते थे। हमारे पूज्य भट्टारक स्वामीजी की कुण्डली भी ऐसे ही महापुरुष की दृष्टि से गुजरी और उन्हें अपना उत्तराधिकारी चुनने में देर नहीं लगी।

जैसे श्रवणबेलगोला का नाम जैन मठ से जुड़ा है वैसे ही जैन मठ से भट्टारक जी का नाम जुड़ा है। लोगों की भीड़ जब भट्टारक जी के दर्शनार्थ उमड़ पड़ती है तो लोगों को केवल इतना ही भान होता है कि जैन मठ कहा है। जैन मठ में प्रवेश करते ही पट्टाचार्य स्वामी श्री भट्टारकजी को पहचानने में देर नहीं लगती।

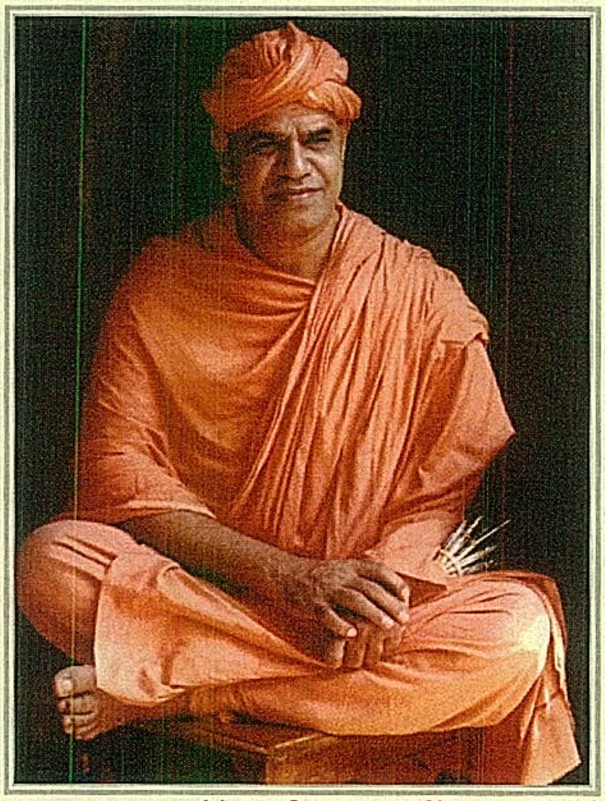

परम पूज्य जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामीजी श्रवणबेलगोला

जैन मठ में आप भी चाहें तो सीढ़ियों से बढ़कर ऊपर बायीं ओर के दरवाजे से हाल में प्रवेश कीजिये। सामने की चौकी पर प्रसन्नमुख मुद्रा मधुर मुस्कान, गौर वर्ण, केशरिया रंग के वस्त्रों से सज्जित एक गम्भीर शान्त व्यक्ति के आप दर्शन कर रहे होंगे। समझिये यही इस सम्पूर्ण प्रदेश की जनता के श्रद्धा और गौरव के प्रतीक पूज्य, कर्मयोगी, स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी विराजमान हैं। उदयांचल से उदित बाल सूर्य की आभा के समान वह विशाल भवन को प्रकाशित करते है और वात्सल्य की छलकती गागर ऐसी कि क्या मजाल कोई उनसे आत्मीयता का अनुभव किये बिना उठ जायें। वार्तालाप के कुछ क्षणों में ही जैसे व्यक्ति को उनकी आत्मीयता प्राप्त हो जाती है। वह प्रसन्नता का अनुभव करता हुआ बाहर आता है बार-बार उनके सरल एवं स्वभाव की चर्चा करता हुआ नहीं अघाता।

परिचय-दक्षिण कनारा जिले में एक सिद्धक्षत्र है वारंग। इसी सिद्धभूमि में 3 मई 1941 को किसी शुभ नक्षत्र में श्री चन्द्रराज इन्द्र के घर श्रीमती श्रीकान्ते की कुक्षी से एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। शुभ लक्षणों के आधार पर बालक का नाम रखा गया रत्नवर्मा।

श्री रत्नवर्मा का प्रारम्भिक शिक्षण ग्राम की प्राथमिक शाला में हुआ। माध्यमिक शिक्षा के लिये उसे कारकल के बाहुबली आश्रम में रखा गया। शायद तभी से रत्नवर्मा का व्यक्तित्व बाहुबली के साथ जुड़ गया। स्कूली शिक्षा समाप्त कर उन्होंने श्री कुन्दकुन्द विद्यापीठ ब्रह्मचर्या अश्रम कुंद्रादि में प्रवेश लिया, जहां धर्म, व्याकरण, साहित्य एवं न्याय का उनका अध्ययन पूरा हुआ। वहीं उन्होंने मैट्रिक परीक्षा भी उत्तीर्ण की। संयोग ऐसा जुटा कि उसी विद्यालय में रत्नवर्मा के जीवन में क्रांति का सूत्रपात शुरू हो गया।

श्रवणबेलगोला मठ के पीठाधीश श्री भट्टाकलंक चारुकीर्ति स्वामीजी अपने उत्तराधिकारी की तलाश कर रहे थे। उन्होंने श्री कुन्दकुन्द विद्यापीठ के अधिष्ठाता से किसी सुयोग्य विद्यार्थी का चयन करने के लिये कहा। अधिष्ठाता ने तीन कुण्डली आपके पास भेज दीं। जिस कुण्डली को स्व. भट्टारक जी ने गहराई से परखा वह कर्मयोगी भट्टारक जी की कुण्डली थी। आप उसी समय श्रवणबेलगोला आ गये। आपकी रुचि अध्ययन की ओर थी। कॉलेज में अध्ययन की सुविधायें आपको उपलब्ध हो गई।

दो वर्षो में स्व. भट्टारकजी ने अपनी आयु सीमा को जान लिया था। साथ ही अपने उत्तराधिकारी के स्वभाव गाम्भीर्य तथा चारित्रिक दृढ़ता को प्रमाण मान लिया था। अत: उन्होंने अपने जीवन काल में ही उन्हें यह जैन समाज प्रतिष्ठा के केन्द्र एवं श्रद्धा व गौरव के प्रतीक भट्टारक पद पर विधिवत प्रतिष्ठित कर दिया। पट्टाचार्य पद पर अभिषिक्त होने के समय स्वामीजी की आयु केवल 21 वर्ष की थी। श्री कर्मयोगी भट्टारक स्वामीजी के हाथ में मठ का उत्तरदायित्व सौंपकर पूर्ववर्ती भट्टारक जी सदा के लिये अपने भार से मुक्त हो गए।

मठ एवं क्षेत्र की स्थिति-पटटाचार्य पद पर आसीन होने के समय मठ एवं क्षेत्र की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालाओं और अतिथिग्रहों का अभाव था। आर्थिक दृष्टि से भी मठ सम्पन्न नहीं था किन्तु नवाभिषिक्त भट्टारक चारुकीर्ति स्वामीजी ने इस ओर अपना साहस और शक्ति बटोर कर कदम बढाया। अब आपके सामने क्षेत्र के विकास का चित्र घूमने लगा।

1970 में महावीर जयंती के पावन दिवस पर श्री रत्नवर्मा जैन जगत के इस सर्वाधिक महत्तवपूर्ण श्रीमठ के पट्टाचार्य पद पर आसीन हुए। उसी समय श्री दिगम्बर जैन मुजराई इन्स्टीट्यूशन मैनेजिंग कमेटी (एस.डी.जे.एम.आई.मैनेजिंग कमेटी) के पदेन अध्यक्ष बन गये। उसी दिन से स्वामी जी ने अपने आपको जैन संस्कृति की सेवा के लिये और श्रवणबेलगोला के विकास के लिये समर्पित कर दिया। यह उन्हीं की दूरदर्शिता और अथक प्रयत्नों का फल है कि आज श्रवणबेलगोला अपनी विकास यात्रा पर पूरी तीव्रता के साथ गतिमान है।

प्राकृत संस्कृत तथा कन्नड़ में जैन दर्शन के अभ्यास तक ही पूज्य स्वामीजी ने अपनी शिक्षा सीमित नहीं रखी। आपने इतिहास में मैसूर विश्वविद्यालय तथा दर्शनशास्त्र में बैंगलोर विश्वविद्यालय से एम.ए.की उपाधियां प्राप्त की हैं।

समर्पित कार्य से सम्मान-आपने श्रवणबेलगोला स्थित 30 से भी अधिक प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया तथा वहां प्रतिदिन प्रक्षाल पूजा की व्यवस्था कर दी है। भगवान् महावीर के निर्वाण को 2,500 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में धर्मचक्र का दक्षिण भारत में जो सफल प्रवर्तन हुआ था उसके संयोजन का श्रेय पूज्य स्वामीजी को ही प्राप्त है। भगवान् बाहुबली सहस्राब्दि महोत्सव के साथ महामस्तकाभिषेक के लिए स्वामीजी के योगदान के विषय में बहुत कुछ कहा जाता है। आपके नि:स्थार्थ सेवाभाव से सम्पूर्ण की सराहना हेतु ही है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधीजी ने आपको कर्मयोगी की उपाधि से सम्मानित किया।

समाजसेवा- समाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी पूज्य स्वामीजी का गहरा प्रभाव है। सहस्राब्दि महोत्सव के संदर्भ में श्रवणबेलगोला में नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर से 1,000 लोग लाभान्वित हुए। श्रवणबेलगोला के निकटवर्ती 10 ग्रामों को दत्तक लेकर उनके सर्वांग विकास का उत्तरदायित्व उठाया। इन ग्रामों को अब पेयजल, पाठशालाएं, सांस्कृतिक केन्द्र, रास्तों एवं बिजली आदि की सुविधाएं प्राप्त हैं। आपकी सेवा योजनाओं का लाभ किसी एक संप्रदाय तक ही सीमित नहीं बल्कि जनसामान्य को प्राप्त है।

ज्ञानदीप उजागर हो-श्रवणबेलगोला में ही पूज्य स्वामीजी द्वारा प्राथमिकपूर्व, प्राथमिक एवं प्रौढ़ शालाएं तथा फार्मेसी कॉलेज एवं पॉलिटेक्निक प्रस्थापित हैं। गोम्मटेश्वर विद्यापीठ द्वारा धार्मिक शिक्षा में विद्वानों का प्रशिक्षण होता है। प्राकृत में उपलब्ध विशाल ज्ञानभण्डार जनसामान्य तक पहुंचाने हेतु आपने प्राकृत ज्ञानभारती एजुकेशन ट्रस्ट, बैंगलोर में प्रस्थापित किया है जिसके द्वारा द्विवार्षिक राष्ट्रीय प्राकृत सम्मेलनों का आयोजन होता है। प्राकृत के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए चयनित दस विद्वानों को प्रतिवर्ष प्राकृत ज्ञानभारती पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता रहा है।

प्राकृत शोध संस्थान-पूज्य भट्टारक स्वामीजी के ही प्रयासों से राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान के रूप में श्रवणबेलगोला को एक महत्त्वपूर्ण संस्थान की उपलब्धि हुई है। कर्नाटक शासन के सहयोग से स्थापित इस महान् संस्थान का निर्माण लगभग डेढ़ करोड़ रुपये की लागत से आकार ग्रहण कर चुका है। इस हेतु कर्नाटक शासन ने 50 लाख की राशि प्रदान की थी। संस्थान का तीन मंजिला भवन बनकर तैयार है। तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा द्वारा 2 दिसम्बर, 1993 को उद्घाटन सम्पन्न हो चुका है।

संस्थान में प्राकृत की दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संग्रहालय है प्राकृत भाषाविज्ञान और साहित्य सम्बन्धी ग्रन्थों का संकलन हो रहा है और प्रारम्भ से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक प्राकृत तथा जैन विद्याओं के अध्ययन की व्यवस्था की गई है। अभी संस्थान के संचालन के लिये दस लाख रुपये वार्षिक का प्रावधान किया गया है।

श्रवणबेलगोला की, अथवा कर्नाटक की अनेक संस्थाओं को स्वामीजी का कुशल नेतृत्व और सार्थक मार्गदर्शन प्राप्त है। श्रुतकेवली एज्यूकेशन ट्रस्ट, प्राकृत ज्ञान प्रसारक ट्रस्ट जैसी अनेक संस्थाओं के वे अध्यक्ष हैं। इस वर्ष सम्पन्न होने वाले महामस्तकाभिषेक की राष्ट्रीय समिति के संरक्षक हैं और राज्य स्तरीय समिति में सदैव आपके परामर्शों को मान्यता दी जाती है।

प्रवचन प्रतिभा- पूज्य स्वामीजी का हिन्दी, अंग्रेजी,कन्नड़ आदि भाषाओं पर प्रभुत्व है। सरल एवं प्रभावी शैली में आपके प्रवचन श्रोताओं को मुग्ध कर जाते हैं। आपने विशेष आमंत्रण पर विदेशों में भी धर्मप्रचार हेतु कई बार भ्रमण किया है। विश्व धर्म एवं शांति सम्मेलन समिति, न्यूयॉर्क द्वारा आयोजित सम्मेलनों के संदर्भ में आप विदेशों द्वारा आयोजित सम्मेलनों के संदर्भ में आप विदेशों में सिंगापुर 1976, अमेरिका 1981, अफ्रीका तथा यूरोप 1984 हो आए हैं। 1988 में लिस्टर, इंग्लैण्ड में निर्मित जैन मंदिर की प्रतिष्ठापना का भव्य कार्यक्रम आप ही के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। भारत भर में कई जगहों पर आपके मार्गदर्शन में पंचकल्याणक प्रतिष्ठापना समारोह तथा विशेष विधान विधिवत संपन्न हुए।

विकासात्मक योजनाएं- पूज्य स्वामीजी के मार्गदर्शन में क्षेत्र को आने वाले दर्शनार्थी भक्तों एवं पर्यटकों के लिए सभी सुविधाओं से लैस धर्मशालाओं तथा अतिथिगृहों का निर्माण हुआ है। नयनरम्य उद्यानों से अब नगरी शोभायमान है। श्रद्धालुओं से प्राप्त दान की राशि का विनियोग विकासात्मक योजनाओं में किया जा रहा है। एक आयुर्वेदिक चिकित्सा केन्द्र तथा पैथोलॉजिकल प्रयोगशाला भी सेवारत हैं। ग्रामीण भागों में सुविधा हेतु संचारी अस्पताल सेवा भी चलाई जाती है।

आधुनिक दृष्टिकोण-पूज्य स्वामीजी ने धर्म के आचरण में आधुनिक दृष्टिकोण अपनाकर वर्तमान संदर्भ में धर्म के पालन को एक नई व्याख्या दी है। जनसामान्य के लिए धर्म सुलभ बना दिया है। तीर्थकरों की वाणी को आचरण में लाने के नए मार्ग दिखला दिए हैं।

पिछले 48 वर्षो में श्रवणबेलगोला का जितना विकास हुआ है, स्वस्तिश्री कर्मयोगी चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी के महनीय व्यक्तित्व का उससे अधिक विकास हुआ है। समता के साथ ममता का और नम्रता के साथ दृढ़ता का अद्भुत समन्वय स्वामी जी के व्यक्तित्व में प्रकट हुआ है। देवशास्त्रगुरु के प्रति समर्पित भक्ति और सन्तों के प्रति निरभिमान विनय उनके विशिष्ट गुण बनकर उभरे हैं। उनकी महिमा मण्डित शालीनता उन्हें राजऋषि की छवि प्रदान करती है, अलंकृत करती है। ऐसा बहुमुखी प्रतिभावान व्यक्ति बिरला ही होता है।

मठ की परम्परा के अनुसार भट्टारक स्वामीजी का पट्टाभिषेक बारह वर्ष के लिये होता है। यह अवधि समाप्त होने पर 1982 में श्री महावीर जयंती के दिन पूरे कर्नाटक के अनेक राज पुरुषों तथा जनप्रतिनिधियों ने मिलकर उन्हें पुन: पट्टाभिषिक्त किया। इससे आगे स्वामीजी द्वारा जो अविस्मरणीय कार्य लगातार किए जा रहे है उनका विस्तृत विवरण आगे आने वाले आलेखों से प्राप्त होगा। इसके बाद लगातर हर 12 वर्षों बाद स्वामी जी का महामस्तकाभिषेक किया जाता रहा है।

अहिंसा भाव भगवान बाहुबली के मुखमण्डल पर दिखाई देता है

– राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद

श्रवणबेलगोला में महामस्तकाभिषेक महोत्सव का भव्य शुभारंभ राष्ट्रपतिजी ने किया

– अनुपमा एवं राजेन्द्र जैन 'महावीर

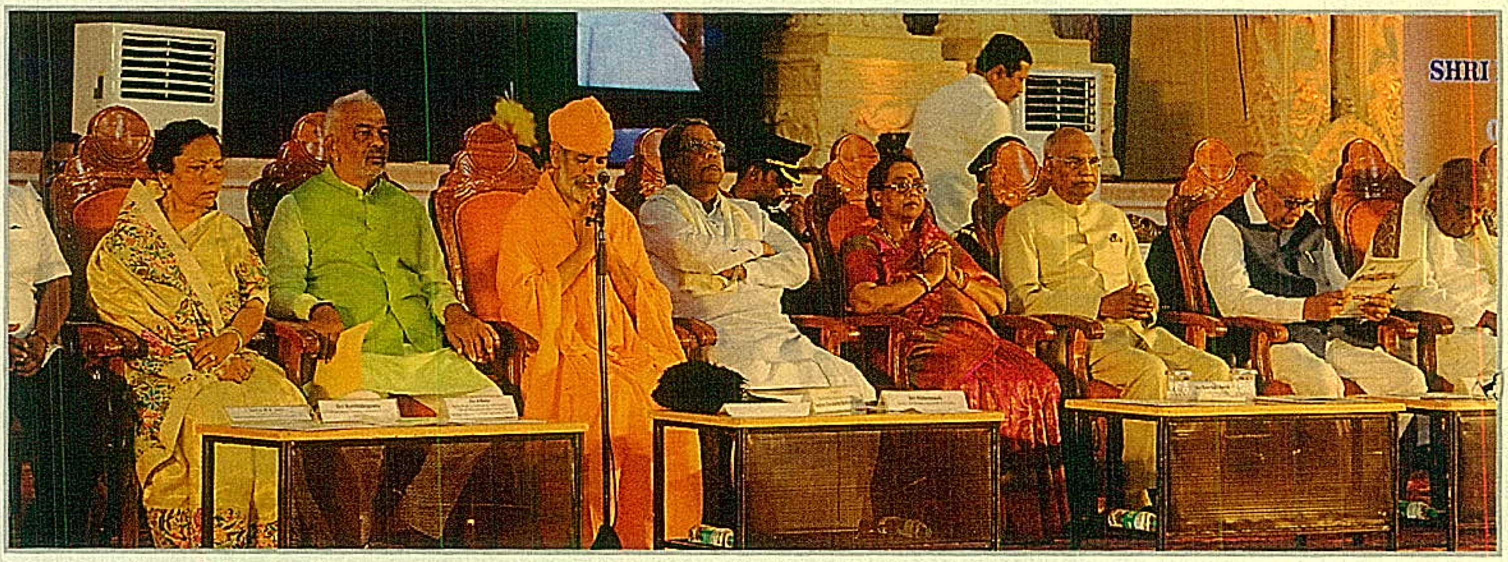

श्रवणबेलगोला। विश्व तीर्थ श्रवणबेलगोला में विगत 1037 वर्षो से जारी बारहवर्षीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव का शुभारंभ भारतीय गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने किया। इस शुभ अवसर पर श्रीमती सविता कोविंद, कर्नाटक राज्यपाल श्री वजुभाई वाला, मुख्यमंत्री श्री सिद्धारमैय्या, पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी.देवेगौड़ा, मस्तकाभिषेक प्रभारी एवं कर्नाटक राज्यस्तरीय कमेटी के अध्यक्ष श्री ए.मंजू, उपाध्यक्ष श्री के.अभयचन्द्र, महोत्सव अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन सहित अनेक राजनेता, समाजसेवी, प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे।

राष्ट्रगौरव आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज सहित 34 आचार्य, 1 बालाचार्य, 1 एलाचार्य, 4 उपाध्याय, 101 दिगम्बर मुनि, 92 आर्यिका माताजी, 67 ऐलक–क्षुल्लक, क्षुल्लिका माताजी अनेक त्यागी वृन्दों के साथ महामस्तकाभिषेक के नेतृत्वकर्ता **पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी**, कर्नाटक गौरव पद्म विभूषण धर्माधिकारी डॉ. वीरेन्द्र हेगड़े धर्मस्थल सहित हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने अपने भाषण का प्रारंभ कन्नड़ के शब्द "सहोदरा, सहोदरियरे तमगे एल्ली येप्पु नन्ना सप्रेम नमस्कारा गडु" से करते हुए कहा कि धर्म और अध्यात्म के साथ सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र यह क्षेत्र सदियों से मानवता का सन्देश देता आ रहा है। शांति, अहिंसा और करूणा के प्रतीक भगवान बाहुबली के दर्शन कर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। यह क्षेत्र आज देश–विदेश में आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। भगवान बाहुबली की यह विशाल प्रतिमा भारत की विकसित संस्कृति, स्थापत्य कला, वास्तुकला और मूर्तिकला का बेजोड़ उदाहरण है। अहिंसा परमो धर्म का भाव इस प्रतिमा के मुखमण्डल पर पूर्ण रूप में दिखाई देता है। भगवान बाहुबली प्रकृति के साथ पूरी तरह एकाकार थे और जैन मुनियों ने यह परम्परा आज कायम रखी है। उन्होंने जैन दर्शन के आदर्शो को प्रकृति प्रिय बताते हुए कहा कि जैनधर्म के आदर्शो से हमें प्रकृति का संरक्षण करने की सीख मिलती है। शांति, अहिंसा, भाईचारा और नैतिक चारित्र के द्वारा ही विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

आचार्य भद्रबाहु व चन्द्रगुप्त की संल्लेखना का उल्लेख किया

राष्ट्रपति श्री कोविंद ने अपने तथ्यपूर्ण व सारगर्भित उद्बोधन में श्रवणबेलगोला के प्रत्येक पक्ष का उल्लेख किया। श्रवणबेलगोला की ऐतिहासिकता के सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि 2300 वर्ष पूर्व मध्यप्रदेश के उज्जैन से जैन आचार्य भद्रबाहु यहाँ आए थे उनके साथ मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त भी अपनी शक्ति के शिखर पर रहते हुए भी सारा राजपाट अपने पुत्र बिंदुसार को सौंपकर यहाँ आ गए थे, और एक मुनि का जीवन अपनाकर तपस्या करते हुए सल्लेखना का मार्ग अपनाया। उन्होंने शांति करूणा पर आधारित परम्परा की नींव यहां डाली, धीरे–धीरे पूरे

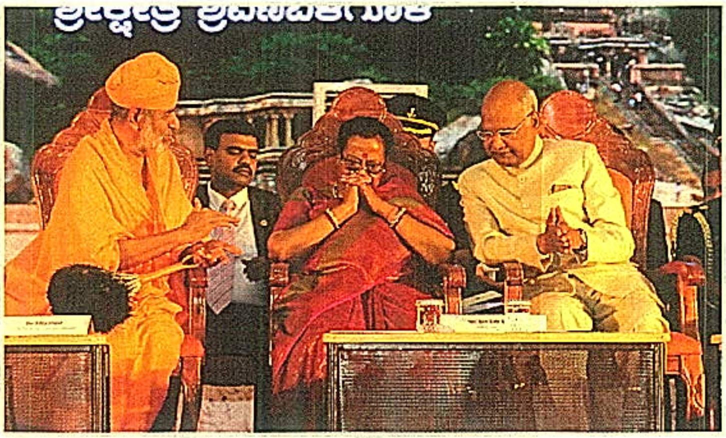
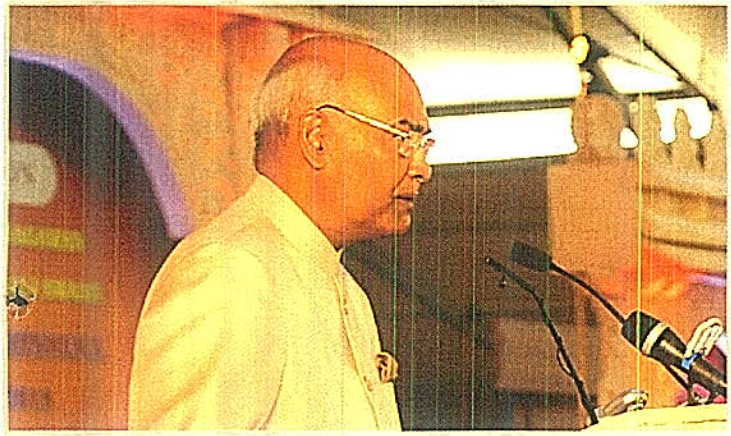
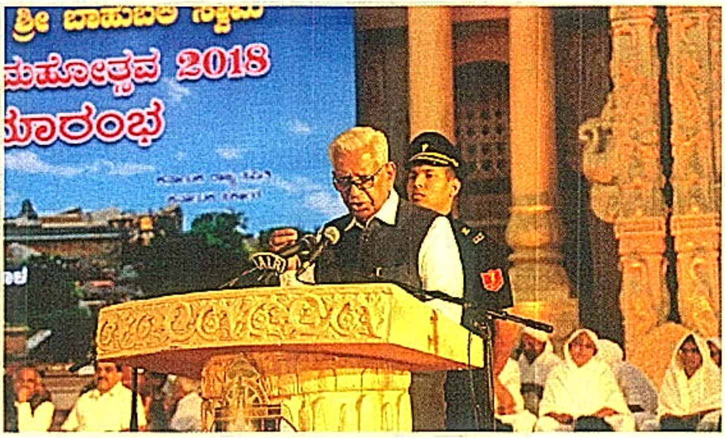

देश से यहाँ लोग आने लगे। जैन दर्शन की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि जैन परम्परा की धाराएँ पूरे देश को जोड़ती है। श्रवणबेलगोला धर्म, अध्यात्म और भारतीय संस्कृति का केन्द्र रहा है। और सदियों से मानवता के कल्याण का सन्देश देता आ रहा है। आदिनाथ भगवान के पुत्र भगवान बाहुबली चाहते तो अपने भाई भरत के स्थान पर राजसुख भोग सकते थे लेकिन उन्होंने अपना सबकुछ त्यागकर तपस्या का मार्ग अपनाया और पूरी मानवता के कल्याण के लिए हम सबके लिए उनके आदर्श प्रस्तुत किए।

लगभग 12 मिनिट के प्रेरणादायी उद्बोधन में राष्ट्रपतिजी ने श्रवणबेलगोला के महामस्तकाभिषेक का साक्षी बनने को सौभाग्य बताया वही बिहार के राज्यपाल रहने के दौरान भगवान महावीर की जन्मभूमि वैशाली व निर्वाणभूमि पावापुरी जाने का उल्लेख भी किया। वहीं सम्यकदर्शन–ज्ञान–चारित्र को भी आवश्यक बताते हुए कहा कि श्रवणबेलगोला में मोबाईल अस्पताल, नर्सिंग कॉलेज है, प्राकृत विश्वविद्यालय पर कार्य चल रहा है। धर्मपत्नी सविता कोविंद के साथ आए राष्ट्रपतिजी अपने निर्धारित समय पर श्रवणबेलगोला आ गए, मंच पर पूज्य भट्टारक स्वामीजी के साथ सपत्नीक सभी आचार्यों, मुनिराजों का आशीर्वाद लिया। पुलिस बैण्ड ने राष्ट्रगान के साथ शुभारम्भ किया। मंच पर पूज्य स्वामीजी के साथ राष्ट्रपतिजी ने क्षेत्र के बारे में जानकारी प्राप्त की।

सौम्या–सर्वेश जैन ने कन्नड़ में गोम्मटेश स्तुति प्रस्तुत की। स्वागत भाषण कर्नाटक सरकार के मंत्री व महामस्तकाभिषेक राज्य स्तरीय कमेटी के अध्यक्ष श्री ए.मंजू ने दिया।

अहिंसक युद्ध के जन्मदाता है बाहुबली स्वामी – आचार्य वर्द्धमानसागरजी

महामस्तकाभिषेक महोत्सव को लगातार तीसरी बार सान्निध्य प्रदान करने वाले चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की परम्परा के पट्टाधीश आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज ने इस अवसर पर अपने सारगर्भित प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि भरत–बाहुबली में जब युद्ध की स्थिति बनी तो दोनों मोक्षगामी थे। प्रजा का नुकसान न हो इसलिए दृष्टि–जल–मल्लयुद्ध हुआ, जिसमें बाहुबली विजयी हुए। यह विश्व के लिए आदर्श व दर्शनीय है कि बाहुबली भगवान ने जो कहा कि हिंसा से कभी सुख नहीं हो सकता, संग्रह से कभी शांति नहीं मिल सकती इसलिए अहिंसा–त्याग आवश्यक है, मैत्री प्रगति प्रदान करती है वहीं ध्यान से सिद्धि हो सकती है। भगवान बाहुबली दक्षिण से उत्तर की ओर देख रहे है और विश्व को सन्देश दे रहे है। आचार्यश्री के दर्शनार्थ आए राष्ट्रपतिजी को उन्होंने आशीर्वाद स्वरूप चारित्र चक्रवर्ती ग्रंथ भेंट किया।

भगवान बाहुबली की प्रतिमा में चैतन्यता का दर्शन करने आए है – राज्यपाल श्री वजुभाई वाला

कर्नाटक प्रदेश के राज्यपाल श्री वजुभाई वाला ने कहा कि हम आप सभी यहाँ भगवान बाहुबली की पाषाण प्रतिमा का दर्शन करने नहीं प्रतिमा में सत्य–अहिंसा–अस्तेय–ब्रह्मचर्य व जैन शासन के सिद्धान्तों की चैतन्यता का दर्शन करने आए है। चैतन्यता के माध्यम से संस्कारित होकर जाए कि हमारा जीवन भी दर्शनमय बन जाए हम यहाँ से संस्कारों को स्टोरेज करके जाए व बाहुबली के सन्देश को जन–जन तक पहुँचायें। उन्होंने कहा कि देश की संस्कारिता को जागरूक करने के लिए भौतिकवाद को छोड़कर आध्यात्मिकता की ओर ध्यान देना पड़ेगा। राजदण्ड पर धर्म का दण्ड आवश्यक बताते हुए उन्होंने कहा कि गुरू भगवंतो के आशीर्वाद के बिना शासन अच्छा नहीं हो सकता। सभी दानवीर भामाशाह की तरह कुछ न कुछ समाज को समर्पित करें, दान अवश्य करें, सत्य–अहिंसा अपने जीवन में अपनाए। उल्लेखनीय है कि भगवान बाहुबली से प्रभावित राज्यपाल श्री वजूभाई ने उपस्थित जनसमुदाय से बाहुबली स्वामी की तीन बार जय–जयकार कराई व अपने चिंतनपूर्ण उद्बोधन से उपस्थित जनों का मन मोह लिया।

महोत्सव का उद्घाटन राष्ट्रपतिजी का अधिकार – पूज्य भट्टारक स्वामीजी

लगातार 50 वर्षो से श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला की प्रगति के आधार स्तम्भ चौथे महामस्तकाभिषेक में नेतृत्व प्रदान कर रहे पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी ने कहा कि महामतस्काभिषेक महोत्सव का उद्घाटन करना राष्ट्रपतिजी का अधिकार है क्योंकि यह एक धर्म या समाज का नहीं बल्कि पूरे भारतवर्ष का कार्यक्रम है। मातृभक्त चामुण्डराय की माँ काललदेवी के दृढ़ संकल्प से इस विशाल प्रतिमा का निर्माण हुआ है। आज देश की प्रथम महिला राष्ट्रपतिजी की धर्मपत्नी श्रीमती सविताजी के आने से मातृत्व शक्ति मजबूत हुई है। पूज्य स्वामीजी ने राष्ट्रपतिजी को स्मृति प्रतीक के रूप में रजत कलश व विंध्यगिरि पर्वत की प्रतिकृति भेंट की। श्रीमती सरिता जैन, सतीश जैन ने अभिनंदन पत्र भी भेंट किया। सभी अतिथियों को स्मृति स्वरूप रजत कलश भेंट किए गए। डिप्टी कमिश्नर रोहिणी सिधूरी स्पेशल ऑफिसर राकेशसिंह, वर्किंग प्रेसिडेंट एस.जितेन्द्रकुमार ने स्वागत किया।

महामस्तकाभिषेक से विश्व शांति की कामना करेगें – पद्मविभूषण डी. वीरेन्द्र हेगड़े

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव कमेटी के परम संरक्षक व धर्मस्थल तीर्थ के धर्माधिकारी राजर्षि पद्मविभूषण श्री वीरेन्द्र हेगड़े ने अपने मार्मिक उद्‌बोधन में कहा कि हम बहुत पुण्यवान है जो हमें भगवान बाहुबलीजी के दर्शन करने को मिले है, सम्पूर्ण जैन समाज प्रतिदिन विश्वशांति के लिए प्रार्थना करता है। 'सम्पूजकानां प्रतिपालकानां' को बताते हुए उन्होंने कहा कि पशु–पक्षी सहित प्राणीमात्र के कल्याण की कामना हम सभी करते है। महामस्तकाभिषेक के माध्यम से भी हम विश्व शांति की कामना करेगें।

हमारा सौभाग्य है कि हमें यह अवसर मिला है – मुख्यमंत्री सिद्धारमैय्या

कर्नाटक राज्य के मुख्यमंत्री श्री सिद्धारमैय्या ने अपने व्यक्तव्य में कहा कि भगवान बाहुबली की प्रतिमा की भक्ति बातों से नहीं जीवन में उतारकर की जा सकती है। जीवन में त्याग होना चाहिये। बाहुबली सहित जितने भी महापुरूष दार्शनिक हुए त्याग से ही महान बने है। जाति नहीं त्याग मुख्य है, सर्वधर्म–सहिष्णुता का भाव होना चाहिये। मैं अत्यन्त धन्यता भाव से इस महोत्सव में भाग ले रहा हूँ। हमारा सौभाग्य है कि हमें यह अवसर प्राप्त हुआ है, सरकार की ओर से हमने सहयोग किया है, सभी अधिकारी, समिति के पदाधिकारी अभिनंदनीय है। पूज्य स्वामीजी हमारे लिए प्रेरणादायी है जो हमारा मार्गदर्शन करते है। भगवान बाहुबली के मंच से मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का भाव सभी में जागृत हो ऐसी कामना करते है।

पाण्डुकशिला पर बाहुबलीजी के जिनबिम्ब का पूजन कर हुआ शुभारंभ

पूज्य जगद्‌गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामी की अभूतपूर्व कल्पना अनुरूप पाण्डुकशिला पर बाहुबली स्वामी के जिनबिम्ब का अनावरण महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद व अतिथियों ने किया। पूज्य स्वामीजी ने उन्हें पूजन व आरती कराई, श्रद्धा से अभिभूत राष्ट्रपतिजी ने सपत्नीक हाथ जोड़कर भगवान बाहुबली की वंदना की वहीं बाहर सैकड़ो नगाड़ो व बैण्डबाजों की स्वर लहरियों ने उद्‌घाटन को आकाश में गुंजायमान कर दिया वही उपस्थितजनों ने करतल ध्वनि से अपनी अनुमोदना प्रकट की। उपरांत विशाल दीपक को प्रज्ज्वलित कर अतिथियों ने उद्‌घाटन समारोह सम्पन्न किया।

अत्यन्त गरिमामयी हुआ उद्‌घाटन समारोह

श्रवणबेलगोला की परम्परा अनुसार उद्‌घाटन समारोह गरिमामय हुआ। मंच दक्षिण भारत के ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को दर्शा रहा था, वहीं उपस्थित साधु संघ, आर्यिका संघ व रंग बिरंगी पोशाखों में उपस्थित जनसमुदाय की प्रसन्नता देखते ही बनती थी। मनमोहक मंच सज्जा व सुव्यवस्थित समारोह के लिए पूज्य भट्‌टारक स्वामीजी की नेतृत्व क्षमता व उनका समन्वयकारी व्यक्तित्व की चर्चा हर जगह थी। समारोह में महोत्सव कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता एम.के.जैन, कार्याध्यक्ष श्री एस.जितेन्द्रकुमार, कमेटी के सर्व श्री सतीश जैन, सुरेश पाटिल, विनादे डोड्ण्णवर, जयकुमार जैन, प्रमोद जैन, राकेश सेठी, राजेश खन्ना, प्रो. नलिन के.शास्त्री, कलश आवंटन उपसमिति के राजकुमार सेठी, जमनालाल हपावत, अशोक सेठी, हसमुख गाँधी, प्रचार उपसमिति के स्वराज जैन, पी.वाय. राजेन्द्रकुमार, राजेन्द्र जैन 'महावीर', अजित जैन, दिनेश कोठिया, पंचकल्याणक समिति के कमल ठोलिया, विधायक सी. एन.बालकृष्ण, भोजन समिति के विनोद बाकलीवाल, त्यागी समिति के श्रीपाल गंगवाल, विमुक्त जैन, तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री संतोष पेण्डारी, महासभा अध्यक्ष श्री निर्मल सेठी, शास्त्री परिषद अध्यक्ष डॉ. श्रेयांस जैन, विद्या विकास योजना के विजय जैन, जवाहरलाल जैन, नीलम अजमेरा, भागचंद जैन सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे। पुलिस बैण्ड के राष्ट्रगान के साथ उद्‌घाटन समारोह का समापन किया गया ।

देशभर में उत्साह की लहर, महामस्तकाभिषेक में आने की होड़

2400 वर्ष प्राचीन तीर्थ पर ईस्वी सन् 981 में प्रथम महामस्तकाभिषेक हुआ था, प्रति बारह वर्ष में आयोजित होने वाले इस अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन में 30 लाख लोगों के भाग लेने की सम्भावना है। 9 दिवस तक होने वाल महामस्तकाभिषेक में लगभग 55 हजार श्रद्धालु जल, दूध, हल्दी, केशर, अष्टगंध आदि से पंचामृत अभिषेक करेगें।

34 आचार्य सहित 350 से अधिक पिच्छीधारीयों का सान्निध्य

दिगम्बर जैन जगत के महाकुंभ में सम्मिलित होने देश के प्रमुख आचार्य, मुनिराज, आर्यिका हजारों किलोमीटर का पैदल विहार कर पधारे है। प्रमुख सान्निध्य आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी के साथ, आचार्य पुष्पदंतसागरजी, वासुपूज्यसागरजी, पद्मनन्दीजी, देवनन्दीजी, गुप्तिनंदीजी, देवसेनजी, विशुद्धसागरजी, मुनि अमितसागरजी सहित 34 आचार्य, शताधिक मुनि, 160 आर्यिका माताजी, ऐलक क्षुल्लक महाराज सहित सैकड़ो त्यागीगण सम्मिलित है।

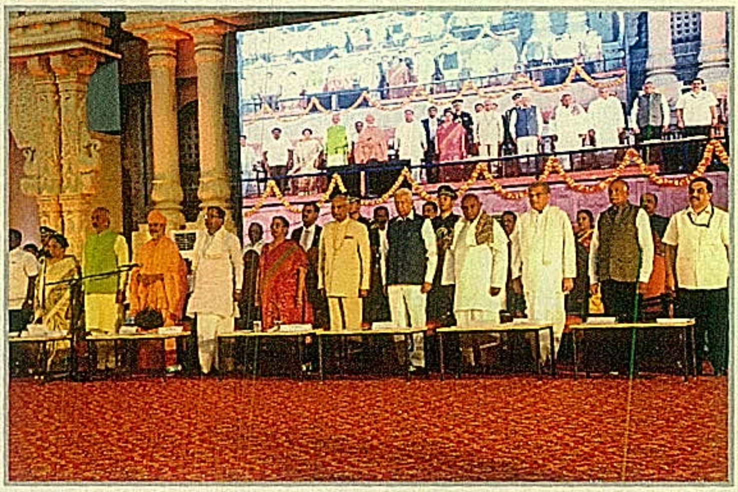

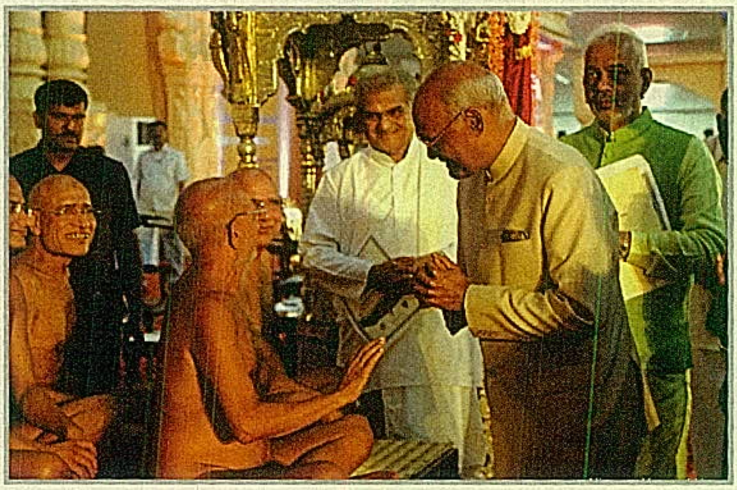
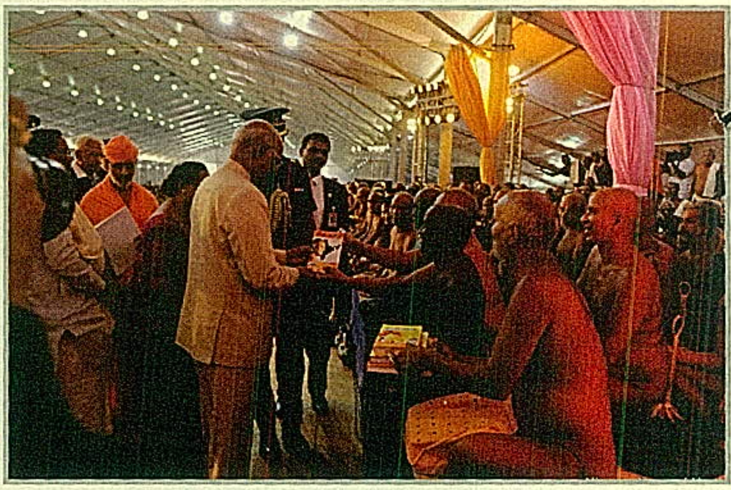

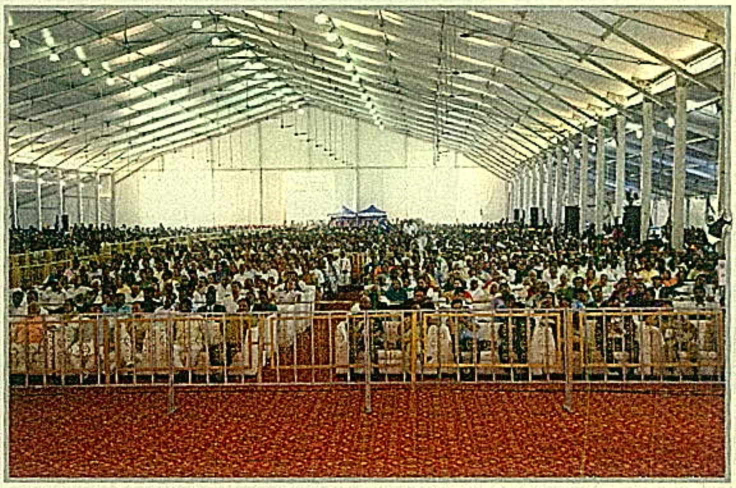

श्रद्धालु भेज रहे है भोजन सामग्री

महामस्तकाभिषेक में पुण्य कमाने हेतु होड़ लगी है, कोई कलश बुक कर रहा है तो कोई खाद्य सामग्री पहुँचा रहा है तो कोई सेवा कर रहा है। सेक्रेटरी जयकुमार जैन ने बताया कि राजस्थान से श्रद्धालुओं ने गेहूँ भिजवाएं है। भोजन समिति के विनोद बाकलीवाल ने बताया कि तेल, घी, शक्कर, मसाले आदि खाद्य सामग्री भिजवाकर श्रद्धालु व्यवस्थाओं में सहयोग कर रहे है।

श्रद्धा से सराबोर इस महामस्तकाभिषेक महोत्सव के प्रति उत्साह व उमंग श्रवणबेलगोला में महसूस किया जा सकती है कि मौन साधक गोम्मटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा हजार वर्ष बाद भी अपने आप को सबके मन में जीवित रखे हुए है।

अनुपम तथा अतिशय युक्त, भगवान बाहुबली

डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन भारती, सनावद

भारतभूमि कपर युगों-युगों से अनेक महान पुरुषों ने जन्म लिया है तथा अहिसादि महाव्रतों की प्रेरणा देते हुए असंख्य प्राणियों को सन्मार्ग पर लगाकर रत्नत्रय का वरण कर मोक्ष प्राप्त किया है। ऐसे ही महान पुरुषों में एक थे तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव। भगवान ऋषभदेव परमात्मा हैं, तीर्थंकर हैं। प्रजापालक के रूप में उसने षट कर्मों के माध्यम से लोगों को जीविकोपार्जन की शिक्षा दी थी। इन्हीं प्रथम तीर्थंकर के भरत एवं बाहुबली आदि 100 पुत्र थे। भगवान बाहुबली ने तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया और सिद्ध परमात्मा बनकर जन-जन के पूजनीय बने। घर में ही बैरागी रहे भरत ने भी मोक्ष प्राप्त कर सिद्ध परमात्मा का पद पाया। जैन धर्म में अरहंत और सिद्ध, परमात्मा की ये दो श्रेणियाँ हैं। भगवान ऋषभदेव अरहंत परमात्मा और भगवान भरत एवं बाहुबली सिद्ध परमात्मा है। जिन मन्दिरों में विराजमान एवं पूजनीय इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना कर व्यक्ति अपने को धन्य मानकर प्रतिदिन पूजा-अर्चना करते हैं ताकि सांसारिक कर्म बंधनों से मुक्त होकर व्यक्ति निर्वाण (मोक्ष) को प्राप्त हो सके।

भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमायें सभी जगह मिलती हैं जो भारतीय धार्मिक एकता की परिचायक है। लेकिन दक्षिण भारत के प्रांत कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में विन्ध्यगिरि पर्वत पर खड़गासन विराजमान भगवान बाहुबली की 58 फुट उत्तुंग प्रतिमा आज भी लाखों जैन अजैन यात्रियों के चित्त को आहलादित करती है। इस मूर्ति के निर्माण में महान पुरुष श्री चामुण्डराय जी ने ग्रेनाइट पाषाण का उपयोग किया। भगवान बाहुबली की यह खड़गासन प्रतिमा लगभग 1100 वर्षों से खुले आकाश में खड़ी रहकर अहिंसा और शांति का सन्देश देते हुए जनमानस को प्रेरित करती है कि हे भव्य आत्मन्! यदि सच्चा सुख प्राप्त करना है तो सांसारिक सुख और बाह्य विभूति का त्याग कर तपस्या में संलग्न रहकर अपने आप (एवं आत्मा) में लीन हो जाओ ताकि अनुपम निधि मोक्ष सुख मिल सके। यह प्रतिमा विश्व के आश्चर्यो में से एक मानी जाती है, इसका कारण इस मूर्ति का अनुपम अतिशय है। हर वर्ग जाति, धर्म और सम्प्रदाय का व्यक्ति अपनी मनोकामना की पूर्ति यहाँ आकर करना चाहता है। इस मूर्ति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि इस मूर्ति पर कभी किसी ने किसी पक्षी को आश्रय लिए हुए नहीं देखा, न इसकी छाया पृथ्वी पर पड़ती है। इसलिए पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी. देवगोड़ा ने विद्वानों की एक सभा में 1 आक्टूबर को कहा कि- आज तक इस प्रतिमा को कोई हिंसक पदार्थ जैसे सांप, बिच्छू आदि विकृत नहीं कर सके।

यह प्रतिमा प्रेम, संयम, वात्सल्य और अहिंसा का सन्देश विश्व को देती है। अहिरंक ढंग से भी जय पराजय सुनिश्चित की जा सकती है। विजय पराजयता का आभास करा सकती है। इन सबकी शिक्षा हमें भगवान बाहुबली के जीवन दर्शन से मिलती है। ग्रहस्थ अवस्था के पिता तथा भगवान ऋषभदेव स्वामी ने सभी पुत्रों को राज्य का विभाजन कर सभी अधिकार सौंप दिये परन्तु चक्रवर्ती भरत बनने के लिए षटखंड के राजाओं की अधीनता आवश्यक थी, इसलिए भरत ने बाहुबली को भी अधीनता स्वीकार करने हेतु आग्रह किया परन्तु बाहुबली ने अधीनता स्वीकार नहीं की। तत्पश्चात् सठान बलशाली बड़े और छोटे भाइयों को पारस्परिक युद्ध से रोकने के लिए अहिंसक युद्ध की नीती का सहारा लेना पड़ा जिसमें जल युद्ध, मल्लयुद्ध और नेत्रयुद्ध हुए। भगवान बाहुबली विजय हुए। भरत ने क्रोधित होकर चक्ररत्न के माध्यम से अपनी पराजय को विजय में बदलना चाहा परन्तु यह भूल गये कि चक्रवर्ती का चक्र भी अपने परिजनों के समक्ष प्रभाव हीन हो जाता है। चक्र प्रभावित हो गया, भरत का अहंकार नष्ट हो गया परन्तु बाहुबली को तत्क्षण संसार की आसारता को बोध हो गया। उन्होंने जान लिया कि, त्याग में ही सुख और प्रेम निहित है, इसलिए त्यागकर तपस्या में संलग्न हो गये, शरीर पर बेले चढ़ गई, परन्तु शरीर को नश्वर समझकर तपस्या रत भगवान बाहुबली को न डिगा सके। भरत के प्रति न राग न द्वेष यह उनकी अहिंसा थी। जब तपस्यारत भगवान बाहुबली के समक्ष ज्येष्ठ भ्राता चक्रवर्ती भरत उनकी स्तुति करने पहुँचे तब उन्हें यथेष्ठ फल मिला। भरत का बाहुबली के चरणों में नतमस्तक होना विजय में पराजय के भाव को ही व्यक्त करता है। इस घटना ने सम्पूर्ण विश्व को सन्देश दिया कि युद्ध अस्त्रों से नहीं रक्तहीन क्रान्ति से भी जीता जा सकता है। रक्तहीन क्रान्ति का अर्थ यहाँ अहिंसा क्रांति से है। जहाँ न राग है न द्वेष वरन कर्तव्य महत्वपूर्ण है। आज हम सम्पूर्ण वातावरण को देखते हैं तो धन और सम्पत्ति को लेकर झगड़े तो देखे जाते हैं परन्तु उन झगड़ों के बीच उच्च अहिंसा के मार्ग पर चलने का भाव दिखाई नहीं देता। भगवान बाहुबली के जीवन से हमें यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि परिग्रह दु:ख का कारण है अत: निर्मल विचारों को जागृत कर अहिंसा, त्याग तपस्या, मित्रता और शांति के मार्ग का वरण करो।

मुझे तीन-चार बार श्रवणबेलगोला जाकर भगवान बाहुबली स्वामी की स्तुति, दर्शन, वंदन और जलाभिषेक करने का अवसर मिला। जहाँ मस्तक झुकता है वही से अप्रतिम शांति की अनुभूति जागृत होने लगती है, मन तनावग्रस्त हो जाता है ऐसा लगता है कि भगवान गोमटेश के चरणों में ही बैठा रहूँ। यहाँ बैठकर करुणा, सद्भावना और मैत्री का भाव ही आता है। हिंसा का भाव तो आता ही नहीं है। जिसे देखकर ऐसा लगता है कि प्रतिमा निर्माणकर्ता चामुण्डराय ने जब शस्त्र छोड़कर शास्त्र धारण किया होगा, वस्त्र छोड़कर मुनिपद धारण किया होगा। उस समय उनकी भावना अत्यंत निर्मल थी उनका मस्तक भगवान बाहुबली के चरणों में झुका और उन्होंने सन्देश दिया कि यह मूर्ति एक जीवंत मूर्ति है जिसमें वीतरागता के साक्षात् दिग्दर्शन होते हैं। इसी वीतरागता के दर्शन करने के लिए देश-विदेश से लोगों का आवागमन होता है। इस मूर्ति की महत्ता प्रकट करते हुए प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु जी ने कहा था- यहाँ आकर भगवान बाहुबली के आगे मस्तक झुकाने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि यहाँ आकर मस्तक खुद व खुद झुक जाता है।

वर्ष 2018 का, 12 वर्ष में आने वाला यह महामहोत्सव लोकोपयोगी कार्यों के साथ सम्पन्न होगा। ऐसी आशा है। भगवान बाहुबली का बताया गया जीवन दर्शन हम सभी को मोक्ष प्राप्ति में सहायक बनेगा, विश्व शांति की प्रेरणा देगा, दिगम्बरत्व की धर्म ध्वजा को फहराकर अहिंसा के मार्ग पर चलेन के लिए लोगों को प्रेरित करेगा।

NONE LIKE BAHUBALI OF SRAVANABELAGOLA

J. MANUEL

Jainism, one of the oldest religions of the sub continent, has been active in creating art and architectural splendours through-out the country during the past millenniums. According to Jaina tenets the ages are marked by ascending and descending half cycles, with each half cycle going back to inconceivably large span of time. The present age is part of ascending half cycle having set of 24 Tirthankaras, as in the past Though, due to the great antiquity of the tradition, material concurrences may not be available for the earlier Tirthankaras, but Parshvanath and Mahavira are widely acknowledged as historical personages on account of concurrences with historic geographic settings. Fortunately, evidence of art as seen in some figures and seals obtained from major Harappan sites has shown that the time span of the Tirthankaras could be stretched back to at least 2000 years before the advent of Mahavira. Small free and erect standing terracotta male figures of Harappan times are not unlike the much later images in stone continuing even to the present times. These figures are shown standing erect with arms straight down; having half closed eyes, without any attachment to things material, and oblivious of the world around. Such is the rigorous penance envisaged in Jainism for achieving emancipation from the cycle of birth and death.

Bahubali, was not only mere namesake strong of arms but very much so in actual life. The tradition says that Adinath(Rishabnath) the first Tirthankara of this age before embarking on his spiritual quest bequeathed his empire between his two sons, Bharata and Bahubali. Bharata, spurred by his ambition to become the paramount emperor of the world asked Bahubali to accept his suzerainty. Bahubali refused to do so, whereupon a battle between the two kingdoms became imminent. Wiser counsel prevailed over them and the two decided to engage in direct combat. In the wrestling bout and other competitions, Bahubali emerged the clear winner. Enraged at this, Bharata commanded his chakra (a divine wheel) to attack Bahubali, which on the contrary paid obeisance to the latter and became passive. In this moment of glory, Bahubali, instead, saw the other side of the material world. He was disgusted that pride and greed could even lead to fratricidal conflicts. At that very moment he renounced his kingdom and all worldly possessions. He decided to take sanyasa and undertake meditation and purification of his soul. Bahubali stood without food and water meditating continuously for one year, so much so that ant hill developed around him and creepers encircled his arms. Snakes used to emerge from the ant hill and crawl over his body, but he stood absorbed in meditation. His rigorous penance bore fruit as he achieved the state of omniscience (*kevalya*).

Though the legend of Bahubali is set in a backdrop enveloped in the mist of time, one comes to know about the increasing following he had from about the middle of first millennium AD. Presently, the earliest known image of Bahubali, is believed to be not later than 4th century AD. This early image, made of bronze is shown standing on a large pedestal, although has creepers entwining the body but in this early image the ant hill has not been portrayed In Karnataka, the earliest known images are dated to early 7th century AD and are carved out in relief in caves of Badami and Aihole. These with many other later ones in the region set the conceptual stage for the carving out of the huge Bahubali of Sravanabelagola. Though Sravanabelagola, was thriving even earlier; according to traditional claims, this sacred place has been associated with *srutkevali* Bhadrabahu who is reputed to have come here in 3rd century BC along with Chandragupta Maurya, the first emperor of Mauryan dynasty, who after abdicating the throne had become a Jaina. There are many hundred inscriptions carved on the

portrayed as ant hill- the image is carved completely in the round. The creepers seen over the ant hill emerge from between the thighs and entwine the arms up to the shoulder. The broad shoulders, muscular arms dangling free away from the chest and the well-proportioned physique, all gives a majestic appearance to the body. Interestingly, the rear is also as painstakingly carved out as the front. Though material appearances are, in Jaina sculptural traditions not the crux of the religion, as the essence, of total renunciation by a *kevalin* is conveyed by the nudity of the figure. The grand master artisans have even successfully managed the sublime composition of such a large face with sharp and sensitive nose and half closed meditative eyes. The slightly projected chin and pouted lips with a benign smile all show a charming serene face so typical of divine entities. This colossus, carved out in the round, in the later part of 10th century AD is by far the greatest achievement of the Ganga dynasty unequalled by any other later ones, including those as at Karkala, 42 feet carved out in 1432 AD and that of Venur 38 feet dated to the year 1604 AD. A Tirthankara image along the cliffs of the Gwalior fort inches up close to Bahubali of Sravanabelagola having a height of 57 feet, but is a relief image. In fact, scholars opine, nothing grander or more imposing exists anywhere out of Egypt and, even there, most of them are attached to the mother rock. The great Buddhas on the faces of the cliffs of Bamian in Afghanistan are at best reliefs,' while the Bahubali image is in round for most of its height above the knees

two hills of Sravanabelagola: Chandragiri and Vmdhyagiri, datable from 6th to 19th century AD, showing the continuation of the site as an active pilgrimage centre. An inscription dated to about 600 AD - and several others that followed- associate Bhadrabahu and Chandragupta; the latter, lived on the Chandragiri hill, and as per the Jaina beliefs forsook his soul by undergoing *sallekhana*. On the Chandragiri hill the Bhadrabahu cave has a lustrous relief of the foot print of Bhadrabahu, the last of the *srutkevalis*. There is an array of images in stone, though later, depicts the migration of Bhadrabahu and Chandragupta to the south. Some scholars, however, are averse to believe and opine that the inscription of much later date mentioning the Mauryan emperor migrating to a then obscure place like Sravanabelagola, should be taken with circumspection. However, like the Aihole Jaina inscription of Ravikriti dated to 634 -35 AD, which mentions about the years after the Mahabharata, now 5119 years (Yugabd), is believed to be true, similar inscriptions, that too, after lesser passage of time should be believed with greater ease.

The earliest and the tallest among the free standing colossus- the one and the only one- stands on top of the over 140 m tall Vindhyagiri hill at Sravanabelagola, located about 140 km from Bangalore. This image was carved out in the round from a tall granitic tor looming large on the hill Whether it Is serendipity or exhaustive survey which led to the site selection endowed with homogeneous fine grained textured rock of such gigantic size without any flaw or fracture is a question that remains unanswered. The Bahubali image is a stupendous 58 feet high, which unless seen could be visualised by the fact that the head of the colossus is about 8 feet high Baring the rear and the flanks below the thighs -

The Bahubali image, temples and historical monuments on the two hills Vindhyagiri and Chandragiri, and the beautiful tank ensconced between, are a visual treat and awe inspiring even for those who are not religiously inclined; worth one full day visit from Bangalore. True to its grandeur, Bahubali of Sravanabelagola was voted, a decade back, as the first of the Seven Wonders of India, by readers of a reputed national daily. Keeping up the unbroken tradition of anointing the image of Bahubali every 12th year from early 11th century AD onwards, spectacular ceremonies are to be held this year between 17th to 25th February. Lakhs of visitors are expected to reach the place from around the world to witness the Mahamastakabhisheka and a proud achievement of the nation, over thousand years ago.

Gommateshwar Bhagwan Bahubali Mahamastakabhisheka-2018

- Swaraj Jain

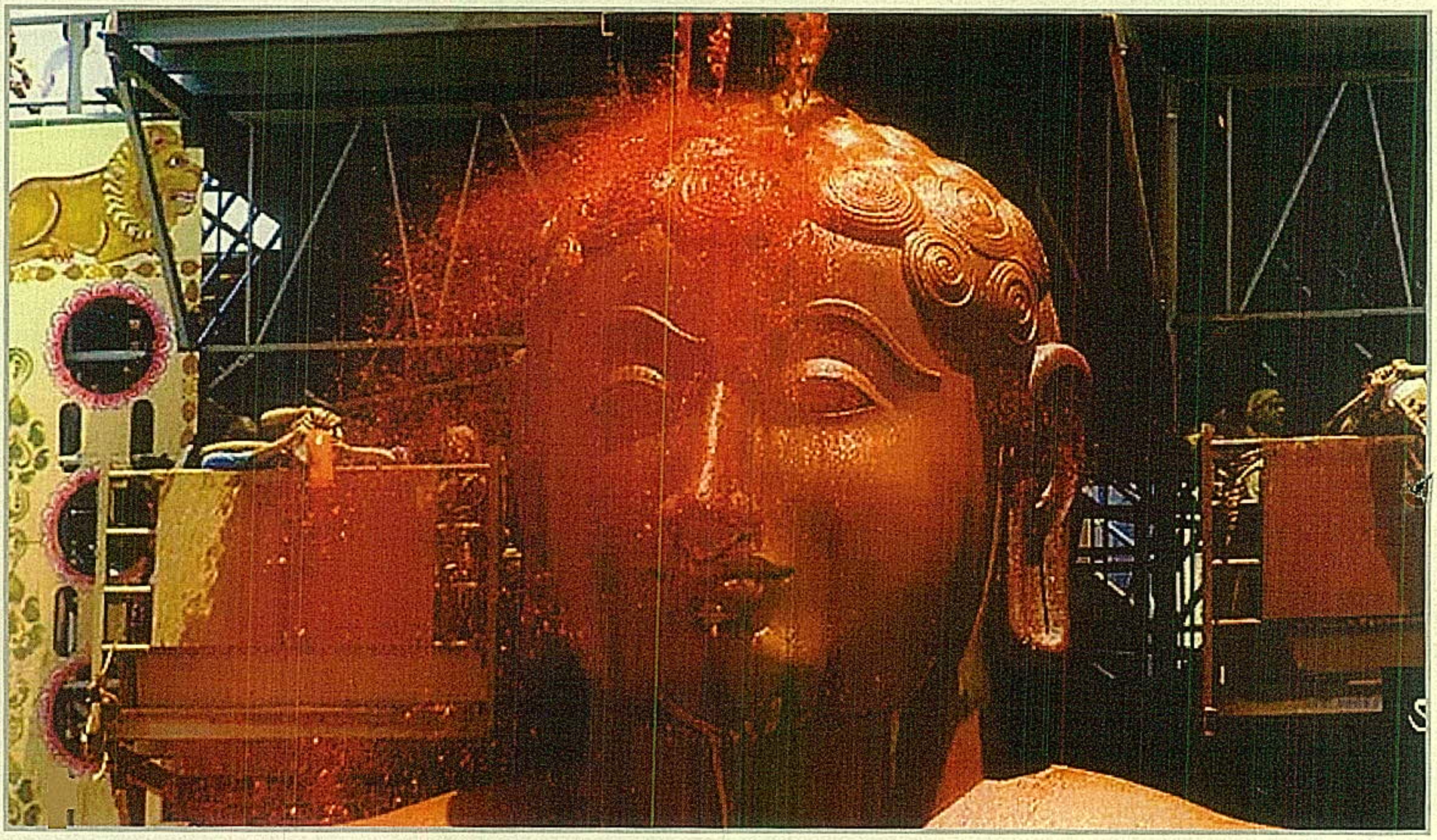

As the year 2018 beckons, curtain goes up on the serenely majestic spectacle of the Mahamaslakabhisheka of 18-metre - tall stature of Lord Bahubali at Shravanabclagola in Karnataka. Tens of thousands of devotees from all over India and abroad are expected to converge on this ancient pilgrim Centre for the celebration. The gathering will include very eminent persons from all walks of life- diplomats, scholars, spiritual leaders, professionals, Ofllcials, businessmen and so on.

Moulded in colossal calm with a delicate soft smile of benevolence, Bahubali, set in a solid, granite statue in the heart of Southern India, has been showering his benediction and message of peace and non- violence for over a thousand years.

Shravanabelagola nestles between the twin hillocks of Chandragiri and Vindhyagiri, its scenic beauty enhanced by the shimmering waters of a lake in the foreground from which the place derives its name.

'Shravana' is a variant of 'Shramana' meaning a lain ascetic. 'Belagola' in Kannada means a lustrous lake. It is not only a holy place for the jains, but also a national treasure - it abounds with shrines and temples of remarkable beauty bearing testimony to ancient and medieval India's splendor in sculpture and architecture. By 4[01] Century B. C. it was already famous as a sacred place - that is why. the sage Bhadrabahu, migrated in 290 B. C., from the North to this distant place in the south, with 12,000 followers, because Northern India was then ravaged by a severe famine. His royal disciple, the Maurya Emperor Chandragupta, gave up his throne and joined him there.

Tradition associates it with Adinath Rishabhdeo, the first Tirthankar, and his sons, Bharat and Bahubali. The Jains worship 24 Tirthankaras, the spiritual leaders, who showed the path to salvation. Though Bahubali is not in the galaxy of Tirhthankaras, he has always got the highest respect and is glorified so much that the largest statues are dedicated to him. Bahubali, for them, is such a siddha- the Soul who attained Nirvana before his father, their first Tirthankara, Adinath Rishabadeo. Known as the tallest, the bravest and the most handsome prince, in fact, the first Kamadeva in lain tradition, he rose above violence and greed at the precise moment of his victory over his own brother, Bharat, after whom our country is known as Bharat It was a unique combat. To avoid bloodshed and violence on both sides, the brothers decided to settle the Issue by non- violent duels like Drishti Yuddha (sight due), jala Yuddha (Water duel) and Malla Yuddha (wrestling); thus, giving the world, the first message of Disarmament Vanquishing his anger and pride, Bahubali sacrificed the royal pomp and glory, chose the path of peace and Nirvana and

embraced the life of mendicancy and penance.

The carving and consecrations of the Bahubali statue is ascribed to the great Chamundrai who was Commander in - Chief as well as Prime Minister of the Ganga King Rachmall during late 10th century A. D. Chamundrai entrusted the task of chiseling the statue out ofgranite rock to the most skilful sculptor of the land under the guidance of Arishtanemi. Chamundrai agreed to pay wages of the sculptor in the form gold of the same weight as the stones and dust of the scooping that fell in the process of chiseling of Gommateshwar statue. Tradition says that when the first load of gold was taken by the sculptor in all pride and jubilation, to be given to his mother, his hands got stuck with the lumps of gold which would not separate. Seeing the agony of her son, his mother consulted Acharya Nemichandra and as advised, went back to her son and told him: "Cast away your greed of gold and your pride. Don't you realize that one son. Chamundrai, is getting rid of gold for the sake of his mother's wish to have the statue of Bahubali carved in a big hillock and here, you, my son, are making a gain. It is this greed that has in the shape of gold, chung, clung to your soul.

You are thinking of sculpting a stone- statue and not of carving Bahubali's banning face, though you have before you the example of the devotion of great Chamundrai". Tears came trickling down the cheeks of Arishtanemi in repentance and his hands were instantaneously freed and so was his greed for gold. He thereafter, began seeing Bahubali's beatitude emerging out of his hammer and chisel. And thus the statue emerged out of a single rock from top downwards on the pinnacle of Vindhyagiri - to fulfil the pious desire of Chamundrai's Mother. "Nothing grander or more imposing exists anywhere than the statue of Bahubali", said Ferguson, a Western scholar, jawahar Lai Nehru, when he first saw the statue, was spell - bound by its majestic charm.

Since Chamundrai' childhood name was Gommat, [Bahubali is also called the Ishwar of Gommat: Gommateshwar. However, incident during the consecration of Bahubali statue show not only how his pride was humbled by a poor old woman, but also depict the eminence accorded to the status of women and the high regard given to the lowliest of women in Jain society. Chamundrai, filled with pride of achievement, set out on Sunday, the 13th March 1981 A. D., with great pomp and show to perform Mahamastakabhisheka of the statue. Erecting a platform around it, Chamundrai, having collected coconut milk and the five nectars, performed anointing of the statue four times. But the anointing liquids would not descend lower than the navel. Greatly distressed, he besought all priests there to perform the anointing. Still the liquid would not go below the navel. At that moment, as the legend goes, gullikayaj ji, and old woman presented herself with a little milk in the shell of half of a white Gullikayi fruit and entreated. "Let my faith be tried and let me anoint the statue with the milk I have brought." Many derided her, but Acharya Nemichandra advised Chamundrai to invite her. Bent with age, the neglected old woman came forward to complete the Abhisheka and as that humble devotee of Bahubali poured all the milk that could be contained in the small Gullikayi shell, it instantly ran down the image, reached the feet of the statue and covered the hill around. There are many such legends about the statue which make it so popular with the masses.

Mahamastakabhisheka 2018 being celebrated from 17th to 25th February 2018 evokes great enthusiasm and joy. People from all walks of life expectantly await the signal to herald the ceremonies. At the auspicious time, meticulously fixed, the Mahamastakabhisheka commences amidst scriptural incantations. Conches are blown, and cymbals and trumpets sound signifying the ceremonial start of the grand libation. As incantations interspersed with devotional notes and array of bands and a choir of piped music rise to a crescendo, the first few devotees position themselves on the high - rise scaffolding... Greeted by ecstatic exclamations of "jai Bahubali - jai Gommatesha" from the swelling sea of devotees they shower consecrated water on the towering Bahubali. An ambience of sanctity descend on the vast assemblage crowding the 500 feet high Vindhyagiri. Multitudes perched on the Chandragiri Peak situated opposite at a lower height and other at vantage points, near and far, expected to watch the rare spectacle - for many, once-in-a-lifetime.

In the second stage, the statue would be bathed with hundreds of liters of milk, sugarcane juice and pastes of saffron and sandal wood, besides a prescribed variety of herbal lotions of therapeutic and preservative value. Then follows a torrent of powders of coconut turmeric, saffron, Vermillion and sandalwood, would rain on the divine figure. The cascade of colors could present a dazzling aura of a fascinating rainbow-effect, playing on the contemplative countenance of the Saint - extraordinary, wreathed in a serene smile. Precious offerings of gems, gold and silver petals and coins are showered, as symbolic of reverential homage.

Mahamastakabhisheka is indeed the most thrilling act of worship seen anywhere. That perhaps, is the reason why large numbers of foreign tourists and visitors besides thousands of Indians, love to be present at Shravanbelgola when the spectacular Mahamastakabhisheka is joyously held.

The life history of Bahubali and his great statue signify to the world certain ethical and spiritual values. Bharat's ambitions for power and violation of norms of combat almost amounting to an attempt on the life of his younger brother, were met by Bahubali with forgiveness, restraint, detachment, renunciation and a resolution to embrace asceticism. Retaining egoistic attitude, even in a small degree, was a hindrance to the perfect purification and complete enlightenment of Bahubali's soul. Bharat's bowing down at the feet of Bahubali ultimately confirms the eternal Indian belief of victory of the good over the evil.

गोम्मटेश गाथा एक सांस्कृतिक विरासत

- श्रीमती सुषमा जैन, भिलाई

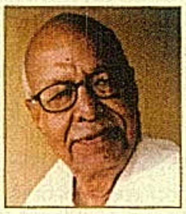

अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के पश्चात् अंतिम श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी की श्रवणबेलगोला में सल्लेखना समाधि हुई। उनके शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य जो मुनिदीक्षा के पश्चात् अपने गुरु के साथ उत्तर भारत से आये थे उन्होंने भी यहीं पर सल्लेखना पूर्वक समाधि ली। उसी काल में प्रस्थापित धर्माचार्य पीठ आज भी इस पावन क्षेत्र पर धर्म तथा समाज की सुरक्षा साहित्य व कलाओं का प्रोत्साहन और जैन संस्कृति के संरक्षण के लिए समर्पित कार्य कर रही है। गंगराज राचमल्ल के सेनापति चामुण्डराय ने अपनी माता कालल देवी की इच्छा से 981 ई. में भगवान बाहुबली की 58 फीट ऊँची प्रतिमा उत्कीर्ण करायी। तब से हर बारह वर्ष में भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक एक गौरवपूर्ण महोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

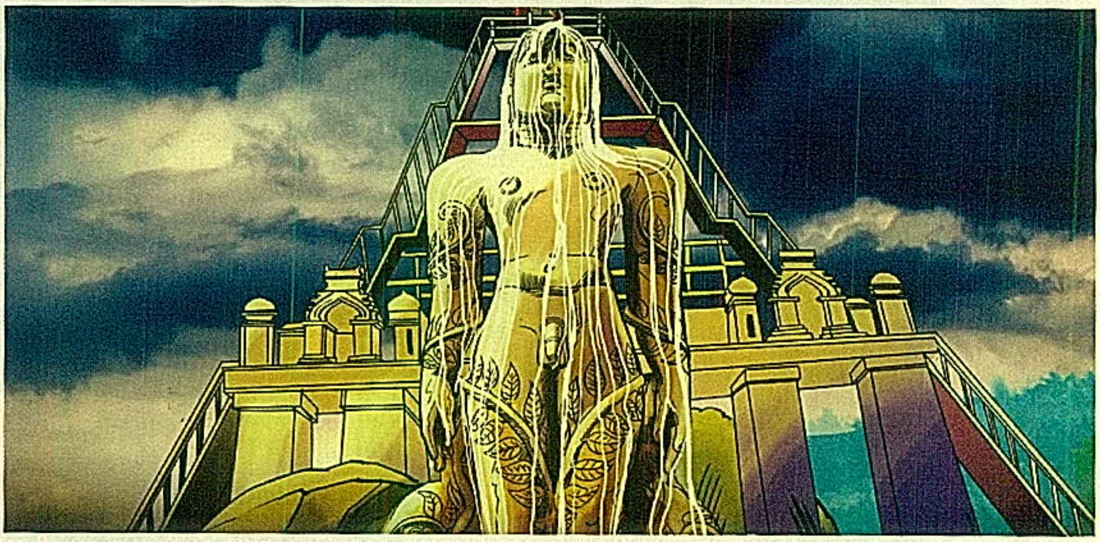

नीरज जैन तीस वर्षों से जैन विधाओं पर लिखने और बोलने वालों में जाना पहचाना नाम रहा। गोम्मटेश-गाथा के लेखक से उन्होंने पौराणिक कथाओं को आधुनिक भाषा और नवीन पद्धति में प्रस्तुत करने का जो अभिनव प्रयास किया, उसे पाठकों की भरपूर सराहना मिली। मूक पर्वत को नायक बनाकर उसके मुख से इतिहास का बखान हिन्दी में अपने ढंग का नवीन प्रयोग था। हिन्दी, मराठी और कन्नड़ में इसके कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

1981 में भगवान गोम्मटेश्व र के सहस्त्राब्दी महामस्तकाभिषेक के अवसर पर गोम्मटेश गाथा एक कालजयी कृति के रूप आई। इस अवसर पर लिखे गये साहित्य में गोमटेश गाथा का शीर्षस्थ स्थान है। इसमें भगवान बाहुबली की कथा के साथ श्रमण संस्कृति का संपूर्ण इतिहास चिंतन और आचरण के साथ भारत के गौरवमय इतिहास की भी प्रस्तुति है। इतिहास एवं पौराणिक कथाओं जो मूक पर्वत चंद्रगिरी के मुख से मुखरित कर अतीत को वर्तमान में बड़ी जीवन्तता के साथ ले आये।

लेखक श्री नीरज जी ने इतिहास और संस्कृति की वृहत्त संपदा चाहे वह कलचक्र का प्रवर्तन, भोगभूमि, कर्मभूमि का विकास आचार्य व श्रुतज्ञान की परंपरा आचार्य भद्रबाहु एवं चंद्रगुप्त का आना, चंद्रगिरी के अनेकों नाम के इतिहास के साथ सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमिचंद्राचार्य तथा भगवान बाहुबलि की मूर्ति निर्माता गंगराज राचमल्ल के प्रधान सेनापति महामात्य चामुण्डराय कि जिन भक्ति एवं माँ कालल देवी की बाहुबली दर्शन की अभिलाषा आदि सभी कुछ सार रुप में गोमटेश गाथा में प्रस्तुत किया है।

यह पुस्तक उपन्यास रूप में बहुत रुचिकर शैली में है। पाठक के हाथ में पहुंच कर उसे संस्कृति इतिहास का वर्तमान परिपेक्ष्य में सारे घटनाक्रम के साथ भगवान श्री बाहुबली के दर्शन कराती है। यह कृति एक अनमोल सांस्कृतिक विरासत है। यह ऐसी धरोहर है, जिससे पाठक जब चाहे तब जैन संस्कृति की निर्देशिका के रूप में सहायता ले सकते है।

गोम्मटेश गाथा में आर्यिका विशुद्धमती माताजी का आशीर्ववचन अन्तर्ध्वनि में माताजी ने लिखा इस गोमटेश गाथा में कहीं अकम्प और निश्चल गोमटेश्वर की महिमा का अपूर्व दर्शन होता है, कहीं भद्रबाहु स्वामी की परम समाधि रूपी विजयपताका की उपलब्धि का दृश्य दिखाई देता है, कहीं चंद्रगुप्त नरेन्द्र को आत्म-द्रव्य की राजधानी में आत्मगुण रूपी असंख्य प्रजा और रत्नत्रय धर्म रूपी अक्षय कोष के उपभोग का आधिपत्य मिलता है।

साहू श्री श्रेयांस प्रसाद जी ने गोम्मटेश गाथा में आमुख लिखकर पुस्तक के प्रति विचार व्यक्त किये, उसके कुछ अंश इस प्रकार है- गोम्मटेश गाथा के प्रारंभ के अध्यायों को इस प्रकार नियोजित किया गया है कि श्रवणबेलगोल से संबंधित सारी परिचयात्मक सामग्री बड़ी कुशलता से प्रस्तुत कर दी गई। संघ की यात्रा को सजीवन संपूर्ण बनाने के लिए नीरज जी ने चामुण्डराय के पुत्र जिनदेवन, पुत्रवधू, सरस्वती और पौत्र सौरभ को रूपांकित किया है। एक भरा पूरा राज परिवार श्रावकोचित मर्यादाओं के सारे आयोजनों को, धर्म गुरुओं के निर्देशन में, सम्यक दर्शन सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र की महिमा से मंडित करता है, नीरज जी की यह कल्पना दृष्टि, कथा को नया आयाम देती है।

साहित्यिक लेखन प्रेरक भी हो, गोमटेश गाथा इसका उदाहरण है।

गोमटेश गाथा की कथा वस्तु के विभिन्न आयाम जिन्हें लेखक श्री नीरज जैन ने चंद्रगिरी पर्वत को मुखरित कर कहलाया है उसे लेखक के ही शब्दों में प्रस्तुत है।

नामों की सार्थकता- श्रवणबेलगोल का अर्थ है श्रमणों का धवल सरोवर। श्रवण शब्द संस्कृत के श्रमण का अपभ्रंश है। अर्थ है जैन मुनि। बेल और गोल कन्नड़ के शब्द हैं, जो क्रमश: धवल और सरोवर का अर्थ देते हैं। इस ग्राम के लिए, श्वेत सरोवर, धवल सरसतीर्थ, धवल सरोवर, और बेलगुलु आदि पर्यायवाची नाम भी मैंने यदा-कदा सुने हैं। अब अपनी बात करें। हम दोनों के प्राथमिक नाम हमारे आकार की अपेक्षा ही प्रचलित हुए। मैं चिक्कबेट्ट-छोटा पर्वत और वह दोड्डबेट्ट-बड़ा पर्वत।

एक के उपरांत एक सहस्त्रों मुनियों ने तुम्हारे इसी चिक्कबेट्ट पर समाधि-मरण प्राप्त किया। स्वर्गारोहण भूमि के नाम से लोग मुझे जानने लगे। समाधि-साधनास्थली होने से ही मेरा नाम कटवप्र हुआ। भद्रबाहु स्वामी ऋषिराज थे। सम्राट चंद्रगुप्त प्रभाचंद्र स्वामी बनकर राजर्षि हुए। इन ऋषियों की साधना-भूमि होने से ही मैं ऋषिगिरि भी कहलाया। चंद्रगिरि नाम सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की स्मृति में ही मुझे प्राप्त हुआ। दिगम्बर मुनि होकर वे यहाँ आये और मेरी ही गोद में उन्होंने पार्थिव शरीर का परिहार किया। तभी से मैं चंद्रगिरि हुआ।

इन तप:पूत महात्माओं की चरणरज पाने से, और अनेक देवायतनों जिनालयों को अपने मस्तक पर धारण करने से मैं अनायास ही तीर्थ हो गया। इसलिए तीर्थगिरि भी मेरा नाम हुआ। अपनी अर्थवत्ता के कारण ये संबोधन मुझे गौरव प्रदान करते रहे हैं। मैंने कहा था न, बड़ी सार्थकता है हमारे नामों में।

देवशास्त्र गुरु की पावन शिरोमणि चंद्रगिरि पर्वत बड़े गर्व से कहता है कि तुम्हारे पूर्वज सहस्त्रों वर्षों से चिक्कबेट्ट की इसी विशाल पीठ पर देव शास्त्र और गुरु की उपासना करते रहे हैं। इस प्रकार देव शास्त्र और गुरु की पावन त्रिवेणी का संस्पर्श अतीत में अनवरत रूप से मुझे प्राप्त होता रहा है। वर्तमान में प्रचुरतापूर्वक हो रहा है और मुझे विश्वास है कि भविष्य में युगांत तक वह अविछिन्न रूप से मुझे मिलता रहेगा।

चंद्रगिरि पर्वत पर पधारने वाले आचार्यों का गुणगान करते हुए पर्वत के मुख से लेखक ने वर्णन किया- श्रुतकेवली आचार्य चंद्रबाहु की समाधि के उपरांत उनके पद-चिन्हों की वंदना का संकल्प लेकर, भद्रबाहु की समाधि-गुफा में बैठकर एक बार ध्यान करने की अभिलाषा लेकर, तुम्हारी मूल परम्परा के प्राय: सभी महान आचार्य समय-समय पर यहां पधारते रहे हैं। अपने पावन चरणों के पुण्य स्पर्श से मुझे पवित्र करते रहे हैं।

आचार्य नेमिचंद्राचार्य का आगमन एवं चामुण्डराय जब चंद्रगिरि पर आये उस समय का एक प्रसंग लेखक के शब्दों में- तुमने सुना होगा, एक बार जब नेमिचंद्राचार्य महाराज षट्खण्डागम ग्रन्थ का स्वाध्याय कर रहे थे, तभी चामुण्डराय उनके दर्शनार्थ उपस्थित हुए। जिन्हें देखते ही आचार्य महाराज ने ताड़पत्रों की वह पोथी बांधकर रख दी। इतना भर नहीं, चामुण्डराय के पूछने पर उन्होंने उसका कारण भी स्पष्ट कर दिया-यह सिद्धांत ग्रन्थ अत्यंत क्लिष्ट है। तुम्हारे भीतर अभी उसके अवलोकन की पात्रता नहीं है। चामुण्डराय का मन निर्मल अभिप्राय से ओतप्रोत था और जिनवाणी अमृत के लिए उनकी पिपासा अनन्त थी। उन्होंने तत्काल निवेदन किया- सिद्धांत का वह सार, मेरे जैसे जड़ बुद्धि जिज्ञासुओं के अनुग्रह के लिए, सरल शब्दों में उपलब्ध करा दीजिये महाराज।

आचार्य श्री ने अनुकम्पापूर्वक उसी समय शिष्य के इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया। अपने स्वाध्याय के साथ ही उन्होंने षट्खण्डागम के विषय का संक्षिप्त लेखन भी प्रारंभ कर दिया। इस ग्रंथ का नाम रखा गया पचसंग्रह गोमट चामुण्डराय का ही एक नाम था, इसी कारण कालांतर में यह प्रारंभ गोम्मटसार नाम से प्रसिद्ध हुआ। चामुण्डराय ने इस महान ग्रंथ की एक विशाल टीका कन्नड़ में लिखी थी जिसे वीर-मार्तण्डी टीका कहा गया है।

बाहुबली प्रतिमा निर्माण- गोमटेश भगवान बाहुबली की एक ही पाषाण में निर्मित अद्भुत प्रतिमा के कारण इस स्थान की प्रसिद्धि समुचे विश्व में है। कठोर ग्रेनाइट की खुरदरी चट्टान में उत्कीर्ण की गई यह मूर्ति सत्तावन फीट ऊँची है, यहां वे जनमानस के सच्चे लोक देवता है। ध्यानस्थ योगी की वीतरागी छवि के साथ-साथ उनके चेहरे पर बाल सुलभ मुस्कान दिखाई देती है। कर्नाटक में गंगराज्य के प्रतापी राजा रावमल्ल के सेनापति वीर मार्तण्ड महामात्य, चामुण्डराय थे। चामुण्डराय का प्यार का नाम गोमट था। उनके द्वारा निर्मित बाहुबली गोमटेश बाहुबली कहलाये। इतिहासकारों ने कर्नाटक के इतिहास में वीर सेनापति चामुण्डराय का यशोगान किया। महिलारत्न काललदेवी का यह सपूत राजनैतिक उत्कर्ष के साथ-साथ एक जिनभक्त श्रावक था। आचार्य श्री अजितसेन उनके गुरु थे। आचार्य नेमिचंद्राचार्य के संपर्क के कारण ही चामुण्डराय के व्यक्तित्व का ऐसा निर्माण हुआ कि वह एक हाथ में शस्त्र और एक हाथ में शास्त्र एक साथ ग्रहण करता था उनके हाथों में शस्त्र और शास्त्र दोनों की मर्यादा सदा सुरक्षित रही है।

मंदिर में विराजमान एक मुनिराज से काललदेवी ने यह सुना कि भरत चक्रवर्ती ने बाहुबली की सवा पांच सौ धनुष अवगाहना वाली तदाकार प्रतिमा पोदनपुर में स्थापित की थी। काललदेवी ने उन बाहुबली के दर्शन तक दूध का त्याग कर दिया। मातेश्वरी की इच्छा की पूर्ति हेतु उनके पुत्र चामुण्डराय ने यह धर्म यात्रा प्रारंभ करी। श्रवणबेलगोला पहुंचे। वहां आचार्य नेमिचंद्राचार्य, चामुण्डराय एवं काललदेवी तीनों निरंतर विचार मग्न रहते। काललदेवी के मन में बाहुबली बस गये थे उनके दर्शन काललदेवी की अंतिम अभिलाषा थी।

स्वप्न में आचार्य श्री को कुछ संकेत प्राप्त हुआ कि चामुण्डराय दृढ़ संकल्पि हो जाये तो इसी स्थान पर बाहुबली को प्रकट किया जा सकता है। दुर्लभ संयोग ही था कि चामुण्डराय ने भी कुछ ऐसा स्वप्न देखा और चंद्रगिरि पर्वत से विन्ध्यगिरि पर शर संधान किया। जिस शिला को वह बाण चिन्हित करेगा वहीं तक्षण करके बाहुबली प्रगट होंगे। आचार्य महाराज बोले- गोमट

हम ऐसे ग्रहयोग स्पष्ट देख रहे है, जिनके अनुसार तुम्हारे द्वारा स्थापित यह प्रतिमा हजारों वर्षो तक करोड़ों जनों को आनंद प्रदान करती हुई स्थित रहेगी। भव्य जनों के धर्म साधन में निमित्त होगी। यहीं बाहुबली प्रकट होगें। आचार्य श्री की यह वाणी सुनकर कालल देवी सहित सभी प्रसन्न हो उठे। चामुण्डराय के पुत्र जिनदेवन ने शिल्पी की खोज करी। शिल्पी बोला प्रथम दर्शन की न्योछावर राशि ही मेरा पारिश्रमिक होगी। तब महामात्य चामुण्डराय ने अपनी उदारता दिखाई और बोले पहले मोटा-मोटी तक्षण द्वारा शिला को आकार दो फिर अंगोपान कर तक्षण करते समय शिला से जितना पाषाण निकलेगा उसे तुला पर चढाकर उसके वजन बराबर स्वर्ण तुम्हारा पारिश्रमिक होगा। शिल्पी ने सहर्ष स्वीकृति दे दी। शिला शुद्धि के साथ विन्ध्यगिरि पर अनुपम प्रतिमा का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ।

आचार्य महाराज की आज्ञा से महामात्य ने समय-समय पर शिल्पी को बाहुबली चरित्र सुनाने का कार्य अपने ऊपर ले लिया था। उन्होंने बाहुबली भगवान के संदर्भ में मोक्ष मार्ग के प्रथम पथिक, कामदेव बाहुबली, हुण्डकाल में चक्रवर्ती का मान भंग (पराजय) बाहुबली की दीर्घकाल की योग साधना उनके व्यक्ति की अनासक्ति और क्षमाशीलता का अवलोकन कराया। इनके व्यक्तित्व की इन्हीं विशेषताओं के कारण बाहुबली की प्रतिमायें बनाई जाती है और तीर्थंकर की मूर्तियों की तरह ही इनकी पूजा आराधना की जाती है। श्री नेमिचंद्राचार्य महराज जब ध्यानस्थ होते तो शिल्पी उनकी स्थिर मुद्रा निहारता और सोचता कि ध्यानमग्न एकाग्र स्थिरता बाहुबली की मूर्ति में होना चाहिए। कामदेव बाहुबली के सौन्दर्य की झलक के लिए तरूण वय यति श्री जिनचंद्र महराज की छवि को आत्मसात करता। बाहुबली के आंतरिक आनंद की अभिव्यक्ति के लिए चामुण्डराय के पौत्र जिनदेवन एवं सरस्वती के पुत्र सौरभ की मनोहारी मुस्कान को हृदयंगम करता और इन्हीं विशेषताओं को संजोकर बाहुबली का विग्रह शिला पर अकंन का प्रयास करता था।

एक रात्रि में शिल्पी ने स्वप्न देखा कि उसके पास स्वर्ण भंडार है सब कुछ सोने का है, यहां तक कि भोजन भी स्वर्ण का हो गया, उसकी आकुलता बढती गई और इस लोभ के कारण स्वर्ण ही दिखता। बाहुबली की छवि हृदय से तिरोहित होती प्रतीत होती। अपने बेटे की विकलता देखकर उसकी माता ने कहा- एक भाग्यवान मां वह है जिसका बेटा जो मां की इच्छा पूर्ति के लिए अपना कोष उदारता से लुटा रहा है और एक अभागी मां मैं हूँ कि मेरा बेटा मेरी इच्छा पूर्ति करने योग्य होकर भी स्वर्ण कोष के लोभ में निष्क्रिय हो रहा है। उसने पुत्र को समझाया कि तेरे पूर्वजों ने कभी अपनी कला का सौदा नहीं किया। अच्छा हुआ अब तू समझ गया, अब परिश्रमिक का त्याग ही तेरे मन को पवित्र करेगा। अपन आचार्य महाराज से निवेदन कर शिल्पी ने दृढता पूर्वक कहा कि क्षमा करें महाराज मेरे स्वर्ण कोष से मेरी साधना मुझसे दूर हो रही, मैं पारिश्रमिक से मुक्त होकर ही यह कार्य कर पाऊंगा।

बाहुबली की मनोहारी मूर्ति का निर्माण पूर्ण हुआ कुछ काल तक पर्वत पर प्रवेश का निवेध रहा। प्रथम दर्शन के लिए सब पर्वत पहुंचे। आचार्य महाराज ने मंत्र जाप कर मूर्ति की दिशा में नमन किया तभी शिल्पी ने पट खींच दिया। अब भगवान बाहुबली की मूर्ति क्या मानों साक्षात बाहुबली ही प्रकट हो गये थे, जय गोमटेश के नारों से सारा क्षेत्र गुंजायमान हो गया। सभी जन समुदाय अपलक उन बाहुबली को मंत्रमुग्ध होकर निहार रहे थे। आचार्य नेमीचंद्राचार्य अत्यंत भावुक होकर गोमटेश की छवि की वीरतागता का दर्शन कर रहे थे। मस्तक से चरणों तक उस मनोहरी छवि का अवलोकन करते करते उनकी भक्ति ने स्वरों का रूप लिया महाकवि आचार्य महराज ने प्राकृत में गोमटेश स्तुति करी।

तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं
विंज्झायलग्गे पविभासमाणं, सिंहामणि सव्व-सचेदियाणं।
तिलोय-संतोलय पुण्णाचंदं, तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं।।

इस स्तुति के अर्थ को हिन्दी में प्रस्तुत किया गोमटेश गाथा में पं. श्री नीरज जैन ने-

विन्ध्य-शिखर पर दुर्द्धर तप की आभा से जो दमके,
भव्यों के वैराग्य महल पर कनक-कलश-सा चमके।
तीन लोक के ताप-निवारण चन्द्र चरण उर लाऊं.
गोमटेश के श्रीचरणों में बार-बार सिर नाऊं।।

महामस्तकाभिषेक प्रारंभ हुआ। चामुण्डराय और अजिता देवी तथा जिनदेवन और सरस्वती रत्न मुकुट धारण कर इन्द्र इन्द्राणी के रूप में मंच पर अभिषेक के लिए खड़े हुए। प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न होने के बाद मंत्रोचार के साथ ही कलशों की दुग्ध धारा गोमटेश के मस्तक पर गिरी और शरीर पर प्रवाहित होने लगी। कलश के कलश रीत गये पर भगवान का अभिषेक पूर्ण न हुआ। भगवान के घुटनों तक आकर वह धारा विलीन हो जाती। महामात्य पंडिताचार्य और आचार्य महाराज ने विचार विमर्श किया और सामान्य जनों को भी अभिषेक के लिए आमंत्रित किया गया।

गुल्लिका अज्जी- महामात्य के पुत्र जिनदेवन और सरस्वती की दृष्टि अचानक एक दैदीप्यमान मुख वाली वृद्धा मां पर पड़ी जो वनफल की छोटी सी गुल्लिका लिये खड़ी थी। दोनों ने आदर पूर्वक उनसे अभिषेक करने का निवेदन कर उन्हें ऊपर ले गये और जब कलश देने लगे तो उन्होंने मना करते हुए अपने पात्र के दुग्ध से ही अभिषेक करने की इच्छा जतायी। उनका छोटा सा पात्र मानों अक्षय पात्र हो गया, उससे दुग्ध धारा निकली तो निकलती चली गई। गोमटेश भगवान का पूर्ण अभिषेक हुआ, वह दुग्ध धार विन्धागिरि पर्वत का अभिसिंचन करती हुई नीचे सरोवर तक जा पहुँची। कष्ट निवारण की कल्याणी शक्ति उस जल में समाहित हो गई, तभी से सरोवर का नाम कल्याणी सरोवर हुआ। जिनदेवन ने विस्मय से ऊपर देखा कि अज्जी कहां गई, वे जाने कहां अर्न्तधान हो गई। चामुण्डराय के अंतस में मान को विसर्जित कराने के लिये गुल्लिका अज्जी (देवी शक्ति) को ये कौतुहल करना पड़ा।

नारी हृदय की सहिष्णुता एवं वात्सल्य-चक्रवर्ती भरत की दिग्विजय के समय बाहुबली ने युद्ध की चुनौती स्वीकार तो कर ली, परंतु उनके मन अवसाद में डूब गया, तब बाहुबली की जीवन संगिनी जय मंजरी मे संतप्त

हृदय पति से कहा, लेखक के ही शब्दों में- प्राणेश्वर की प्रतिष्ठा खंडित होती देखना पड़े ऐसी हतभाग्या मैं नहीं हूँ। आपका पौरुष अजेय है, और मेरा भाग्य, इन्द्राणी भी जिसकी स्पर्धा करें ऐसा महान है। अयोध्या की युवराजी बनकर उस राज-भवन में प्रवेश करते समय, मैंने सर्वप्रथम बड़ी मां के चरणों का ही आपके साथ वंदन किया था। अखंड सौभाग्यवती भव उनके मंगल आशीष के ये तीन शब्द, त्रिलोक की सम्पदा से भी अधिक सम्पन्नता मुझे दे गये थे। उस अमृत आशीष की सत्यता पर संदेह करूं ऐसी पापिष्ठा मैं नहीं हूँ। मुझे उस वाणी पर, और अपने अखंड सौभाग्य पर अटल विश्वास है। मन की आस्था का वही कवच लेकर कल यह दासी भी इन चरणों की अनुगामिनी होकर स्वामी के पराक्रम का दर्शन करेगी।

चक्रवर्ती भरत और बाहुबली का युद्ध जानकर माता सुनंदा और यशस्वती के हृदय की पीड़ा महामंत्री के समक्ष व्यक्त हुई, लेखक श्री नीरज जैन के ही शब्दों में- आपसे यही आशा है महाभाग! आप भरत के मंत्री भर नहीं, इक्ष्वाकु वंश की मर्यादा के संरक्षक भी है। जैसे भी हो यह संघर्ष आपको टालना है। आज यहीं इस संतप्त जननी की प्रार्थना और अनुरोध, आदेश और निर्देश सब कुछ है। एक बात और कहती हूँ, भरत और बाहुबली दोनों यशस्वती के ही पुत्र हैं। अपने सम्राट से कह देना, पुत्र का पराभव और जननी का जीवन, एक साथ अयोध्या की प्रजा नहीं देख पायेगी। इस सेवक को और लज्जित न करें महादेवी! दोनों पक्षों के मंत्रियों तक यह मन्तव्य पहुंचाऊगां। चक्रवर्ती की आज्ञा से अधिक राजमाता की भावना का सम्मान होगा और दोनों पक्षों को रक्तपात से बचाने का कोई मार्ग निकलेगा, ऐसा मुझे विश्वास है। इन चरणों का आशीर्वाद ही मेरी शक्ति होगी।

दृष्टि युद्ध, जल युद्ध और मल्लयुद्ध- माता सुनंदा और माता यशस्वती की ममता और महामंत्री के नीति कुशलता से ऋषभदेव के धर्मशासन में हिंसा पर अहिंसा विजय का यह प्रथम प्रयास था। तीनों युद्धों में लेखक ने भरत बाहुबली की भावनाओं का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है। बाहुबली के हृदय में वैराग्य की भावना फलीभूत हुई, वे भरत से बोले- कषाय के वशीभूत होकर आज हम दोनों ने उस पराजय का पीड़ा भोगी है भ्रात! भविष्य में ऐसी पराजय न देखना, पड़े इसी का उपाय अब हमारे जीवन का पुरुषार्थ है। पिताश्री के मार्ग का अनुसरण करके हम अब उस युद्ध में उतरना चाहते है जिसमें अंतर के शत्रु परास्त हो जाते है। जीतने पर जहां शाश्वत विजय प्राप्त होती है।

मां जिनवाणी-फूल की चार पांखुरियों में लेखक ने सरस्वती को एक उदाहरण देकर मां जिनवाणी से चारों अनुयोगों की व्याख्या बताई। जैसे इस बालक की मंगल कामना के लिए, उसके सुख के लिए, तू सदैव नाना प्रकार के उपाय करती है, उसी प्रकार वह जिनवाणी माता तीनों लोकों में भटकते हुए अपनी अनन्त संतानों के लिए, मंगल और सुख का विधान करती है। उनकी वही कल्याणी अनुकंपा, आचार्यो ने चार अनुयोगों की प्रणालियों में बांधकर इस लोक में प्रवाहित की है।

रूपकार की कार्यकुशलता, सुझबूझ का वर्णन और मूर्ति कला की विशेषता का वर्णन आने पर श्रमण-संस्कृति, श्रमण-कला और श्रमण-धर्मका आदर्शवादी उपन्यास गोमटेश गाथा के लेखक श्री नीरज जैन की पुस्तक के समीक्षक डॉ. भोलानाथ भ्रमर के अनुसार प्रस्तुत कृति की एक उल्लेखनीय विशेषता है, मूर्ति निर्माण कला का आद्योपान्त वर्णन और बाहुबली का विभिन्न मुर्तियों का उल्लेख। ऐसा लगता है कि नीरज जी स्वयं ही, रूपकार है, 981 ई. में उन्होंने ही भगवान बाहुबली की यह प्रतिमा उत्कीर्ण की थी और उन्हें मूर्ति बनाने की उस काल की समस्त उक्रियाएवं आज तक याद है। मूर्तिकार की समस्त मानसिक प्रक्रियाएं, समस्त स्थूल कार्यकलाप, मन की एकाग्रता और आलम्बन की पवित्रता के अनुरूप ही कलाकार के भी तन और मन की पवित्रता का यह वर्णन है।

गोमटेश गाथा के सागर में से चुनिंदा मुक्ता माणिक्य श्री नीरज जैन के शब्दों में:-

यह श्रवणबेलगोला तो शाश्वत और पवित्र तीर्थ है। बाहुबली की यह प्रतिमा कला जगत की अनोखी निधि है। हमने और आपने मिलकर जैसे आज यह महोत्सव यहां देखा है, उसी प्रकार हमारे और आपके वंशज ऐसे अनेक महोत्सव यहां देखें। दीर्घकाल तक इन भगवान की पूजा, आरती-अभिषेक वे करते रहे, हम यही कामना करते हैं।

-प्रतिष्ठापना महोत्सव में कहा चामुण्डराय ने

जिस चित्त ने दीर्घकाल तक बाहुबली के क्षमानिधान रूप का चिन्तवन किया है, उस चित्त में सांसारिक जय-पराजय का चिंतवन अब शोभा नहीं देगा। जिन हाथों ने गोमटेश्वर भगवान, के महाभिषेक के कलश उठाये हैं, उन हाथों में किसी के तन-मन को संक्लेशित करने वाले उपकरण उठाने का अब कोई औचित्य नहीं है। शास्त्र के पत्रों से ही अब उनकी शोभा है।

चामुण्डराय से कहा था नेमिचन्द्राचार्य ने

चरणों के अभिषेक का भी बड़ा पुण्य होता है, अज्जी। अभिषेक तो भगवान के चरणों का ही होता है, मस्तकाभिषेक को उसकी भूमिका हैं।

-कहा सरस्वती ने

बाहुबली तो इस शिला में पहले से ही विराजमान थे। अपने अभ्यास और अनुभव से मैं उनका दर्शन भी करता था। ऊपर-ऊपर का कुछ अनावश्यक पाषाण काटकर झरा दिया सो आपको भी उनका दर्शन होने लगा। अनावश्यक के विमोचन में क्या परिश्रम और उसका कैसा पारिश्रमिक?

-निवेदन किया रूपकार ने

गोमटेश्वर की महिमा अपरम्पार है। इन्द्रधनुष उनका भामण्डल बम जाता है। मेघमालाएं उनका अभिषेक करती है। उनचासों पवन उनके चरणों में अर्ध्य चढाते हैं। दामिनी उनकी आरती उतारती है। प्रतिक्षण नूतन उनके रूप अनन्त है। कौन उन्हें समझ पायेगा? कौन उनके दर्शन से अघायेगा?

-कहा चन्द्रगिरि पर्वत ने

श्रवणबेलगोला स्थित चन्द्रगिरि का वैभव

डॉ. कमलेशकुमार जैन, वाराणसी

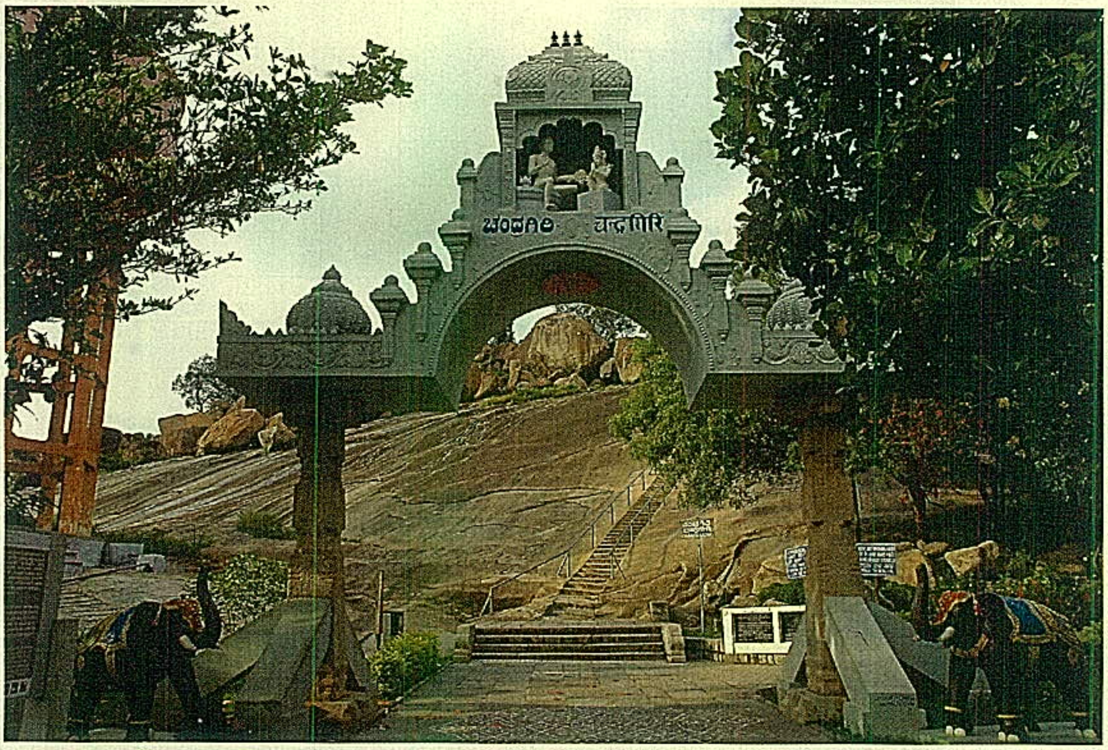

कर्नाटक प्रदेश के अन्तर्गत जिला हासन में श्रवणबेलगोला नामक तीर्थ अत्यन्त प्रसिद्ध है। वहाँ जैन मठ के साथ ही आमने-सामने दो पर्वत हैं- चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि। चन्द्रगिरि को स्थानीय कन्नड़ भाषा में चिक्कबेट्टा (छोटा पर्वत) और विन्ध्यगिरि को दोड्डवेट्टा (बड़ा पर्वत) कहा जाता है। ऊँचाई की दृष्टि से चन्द्रगिरि यद्यपि छोटा है, किन्तु ऐतिहासिकता की दृष्टि से यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन है, क्योंकि इसी छोटे पर्वत पर अनेक आचार्यों, मुनियों एवं श्रावक श्राविकाओं ने अपने जीवन के अन्त में समाधि से प्राप्तकर अपना मानव जीवन सफल किया है। निराकुलता पूर्वक सल्लेखना समाधि धारण करने के लिये यह पर्वत आज भी विख्यात है। इतना ही नहीं ईसा की शताब्दी में अन्तिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु स्वामी और उनके प्रिय शिष्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसी पर्वत पर समाधि पूर्वक देह-विसर्जन किया था।

इसी चन्द्रगिरि से महामात्य चामुण्डराय ने अपनी माता काललदेवी की इच्छापूर्ति हेतु अपने धनुष-वाण से लक्ष्य भेदकर विन्ध्यगिरि की शिला को चिन्हित किया था तथा विन्ध्यगिरि पर गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबलि स्वामी की प्रतिमा का निर्माण कराया था।

चन्द्रगिरि पर स्थित सोलह जिनालयों के समूह वाले विशाल परिसर में निर्मित सभी जिनालय अपनी ऐतिहासिकला एवं कलात्मक कारीगिरी के लिये प्रसिद्ध हैं, किन्तु इनमें महामुनि चन्द्रगुप्त की स्मृति में निर्मित चन्द्रगुप्त बसदि सबसे प्राचीन है। इसमें श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु के ससंघ उत्तर भारत से दक्षिणभारत आने की कथा शिला पट्टों पर उकेरी गई है। 10 भागों में वियक्त इस मूर्ति अंकन कथा में आचार्य भद्रबाहु के निष्क्रमण, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य की जैनेश्वदी दीक्षा और तपस्या सम्बन्धी दृश्य सभी भक्तों का मन मोह लेते हैं।

प्रवेश द्वार के ठीक पीछे जिननाथ पुरम, की ओर वाली चहारढ़ीवारी से सटा हुआ एक जिनालय है, जो चामुण्डराय बसदि के नाम से पसिद्ध है। इसके ऊपरी भाग पर लगाई गई बाड़ी-बाड़ी कलात्मक चट्टाने इसके वैभव को प्रदर्शित करती हैं। यह जिनालय अत्यन्त आकर्षक है। चन्द्रगिरि पर स्थित यही एक ऐसा इकलौता जिनालय है, जो दो मंजिलों में निर्मित है। इसका निर्माण गोमटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिष्ठा के तत्काल बाद वीर चामुण्डदाय ने कराया था। इसकी ऊपरी मंजिल का निर्माण बाद में वीर चामुण्डराय के पुत्र जिनदेव ने कदाया था। ऊपरी मंजिल पर स्थापित भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर जिनदेवन का नामोल्लेख है। ऊपरी मंजिल की सीढियाँ सकरी, छोटी-छोटी और घुमावदार है तथा सीढियों का ऊपरी द्वार भी छोटा है, जिससे भक्त गण झुककर, बैठकर किसी प्रकार ऊपरी मंजिल पर जाते हैं। वृद्ध एवं भारी-भरकम शरीर वाले भक्त प्रायः उपरी मंजिल पर नहीं जाते हैं।

उपर्युक्त दो जिनालयों के अतिरिक्त चन्द्रगिरि पर सवतिगन्धवारण वसदि भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसका निर्माण वैष्णव धर्म के प्रति आस्था रखने वाले धर्म के प्रति आस्था रखने वाले होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन की पत्नी महारानी शान्तलादेवी ने कराया था। शान्ततादेवी का जैनधर्म के प्रति विशिष्ट अनुराग एवं भक्ति थी। इस जिनालय में सोलहवें तीर्थकर भगवान शान्तिनाथ की मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान है।

महारानी शान्तलादेवी की सात सौतने थीं, जो इनसे द्वेष रखती थी। इसलिये ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपनी सौतनों की द्वेष रूपी गन्ध का वारण-निवारण करने के लिये इस जिनालय का निर्माण कराया था। इसीलिये इस जिनालय का नाम सवतिगन्धवारण है।

जैन धर्म के प्रति आस्था रखने वाली महारानी शान्तलादेवी ने धवल-जय धवल आदि आगम-ग्रन्थों के संरक्षण से भी अपनी महती भूमिका निभाई है।

सोलह जिनालयों के समूह वाले प्रवेश द्वार के ठीक सामने एक ध्वजस्तम्भ है, जो लगभग एक हजार वर्ष प्राचीन है। ऐसा प्रतीत होता है कि चन्द्रगिरि पर जिनालयों के निर्माण काल के साथ ही इसका निर्माण कराया गया होगा। चूंकि इस स्तम्भ के ऊपरी भाग में शासन यक्ष ब्रह्मदेव का चित्र अंकित है, इसलिये इसे कूगे ब्रह्मदेव स्तम्भ कहा जाता है। ऐसी किंवदन्ती है कि जब सभी रात्रि में जिनालयों के आसपास चोर आते तो ब्रह्मदेव आवाज (कूका) देते थे कि चोर है, चोर है। इसीलिये ब्रह्मदेव के नाम के आगे विशेषण लगाया गया है।

चन्द्रगिरि पर स्थित जिनालय समूह के परिसर में अनेक स्तम्भ-शिलालेख एवं भू शिलालेख हैं, जिनमें चन्द्रगिरि के वैभव का लेखा-जोखा अंकित किया गया है। सम्प्रति उनकी दक्षा हेतु स्तम्भ शिलालेखों को छतरी के माध्यम से और भूशिलालेखों को सफेद मोटे एवं मजबूत प्लास्टिक से ढँककर उनका संरक्षण किया गया है।

➤ चन्द्रगिरि के जिनालय समूह के प्रवेश द्वारा के ठीक पीछे वाली चहारदीवारी में एक छोटा द्वार है, जिससे जिननाथ पुरम के जिनालय की ओर जाने का दास्ता है। यह छोटा द्वार पहले खुला रहता था, किन्तु अब सुरक्षा की दृष्टि अथवा अन्य किन्ती कारणों से प्राय: बन्द दहता है।

चन्द्रगिरि पर स्थित जिनालय समूह के प्रवेश द्वार के बाह्य भाग में ठीक सामने से थोड़े बांई ओर तिरछे में आचार्य भद्रबाहु स्वामी के चरणचिन्हों से अंकित अत्यन्त प्राचीन एवं प्रसिद्ध गुफा है, जिसमें प्रवेश कर भक्तगण उनके चरणसिद्ध पर उन्मुक्तभाव से अपना मस्तक झुकाते हैं तथा गुफा में बैठकर अनेक मुनिजन एवं श्रावकगण आज भी ध्यान लगाकर अपना इह भव एवं परभव सुधारते हैं।

इस प्राचीन पर्वत को स्थानीय भाषा में यद्यपि चिक्कबेट्ट (छोटा पर्वत) कहा जाता है, किन्तु अपने गुरु, आचार्य भद्रबाहु स्वामी के प्रति सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य की अपार भक्ति एवं समर्पण के कारण इसका नाम चन्द्रगिरि पड़ गया।

चन्द्रगिरि जिनालय समूह के प्रवेश द्वार के बाह्य भाग के ठीक सामने अथवा आचार्य भद्रबाहु स्वामी की गुफा से निकलने पर बाई ओर चट्टानों वाली एक ऊँची पहाड़ी है जिसके शीर्ष भाग पर एक विशाल चट्टान पर किन्हीं, मुनिराज के चरणचिन्ह अंकित हैं। यह पहाड़ी सम्प्रति कटीली झाड़ियों से युक्त है और इस पर चढ़ने के लिये न तो कोई जीना हैं और न कोई रास्ता। हाँ? कुछ साहसी युवक युवतियाँ अवश्य झाड़ियों को पकड़ पकड़कर रिपटते फिसलते हुये ऊपर चढ़ने में सफल हो जाते हैं।

चन्द्रगिरि के जिनालय समूह के प्रवेश द्वार से बाहर निकलकर जब सीढियों से नीचे की ओर आते हैं तो वहाँ दो स्थान और महत्वपूर्ण है. एक वह शिलाखण्ड जहाँ खड़े होकर वीर चामुण्डराय ने सामने वाले विन्ध्यगिरि पर धनुषबाण चलाकर गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा के निर्माण हेतु शिलाखण्ड निर्धारित किया था और द्वितीय वह स्थान जहाँ उतरते हुये सीढ़ियों के दाहिनी ओर आचार्य कुन्दकुन्द के चरणचिन्ह अंकित है।

इस प्रकार चन्द्रगिरि अपने अतीत के ऐतिहासिक वैभव को अपने संजोये हुये एक सजग प्रहरी की तरह सीना ताने हुये खड़ा है और मौनभाव से सब कुछ मुखरित कर देता है।

★★★★

भगवान बाहुबली और उनके प्रसिद्ध जिनालय एवं तीर्थक्षेत्र

इंजी. आई.एम.जैन (पहाडिया) इन्दौर

जैन धर्म में तीर्थकरों की प्रतिमाओं के निर्माण के साथ-साथ भगवान बाहुबली की प्रतिमाओं के निर्माण की परम्परा रही है। भगवान बाहुबली तीर्थंकर ऋषभनाथ के पुत्र थे। इस युग के सर्व प्रथम निर्वाण प्राप्त करने के कारण तीर्थंकरों के समान उनकी मूर्ती बननेलगी तथा मंदीर में प्रतिष्ठित की जाने लगी। उनकी मूर्ती लांछन विहीन होती है किन्तु वह ध्यानस्थ कार्योत्सर्ग में ही मिलती हैं, उनके दीर्घ तपश्चरण की स्मृती के स्वरुप उनके शरीर पर लिपटी हुई लता बेले अंकित की जाती है।

ऐसे तो भारतवर्ष के हर क्षेत्र पर बाहुबली स्वामी की प्रतिमा विराजित है परन्तु यहाँ सिर्फ प्रसिद्ध क्षेत्रों एवं जिनालयों की जानकारी दी जा रही है:-

1) मध्यप्रदेश:- में सबसे ज्यादा क्षेत्रो पर आपकी प्रतिमायें अद्भुत एवं मनोज्ञ प्रतिमायें, गोमटगिरी (जिला बहोरीबंद इन्दौर), (कटनी) बजरंगगढ़ (गुना), सिद्धवरकुट (वड़वाह), लखनादौन (सिवनी), सिरोंज (विदिशा), ग्वालियर किले पर तेली मंदीर के सामने, खजुराहो (छतरपुर), खंदारगिरी (अशोकनगर) सोनागिरजी (दतिया) के पहाडीपर मंदीर क्र.57, पपरोजी, आहारजी (टीकमगढ़) पुष्पगिरी (देवास), श्रेयांसगिरी (नचनाग्राम) बुन्देलखण्ड,

2) कर्नाटक प्रांत:- धर्मस्थल (चन्द्रनाथस्वामी मंदीर 37), कारकलअतिशयक्षेत्र 42, श्रवणबेलगोला विश्वप्रसिद्ध 58 फीट की प्रतिमा जिला हसन, बाहुबली अतिशयक्षेत्र वेणूर 35

3) विहार के आरा में विशाल एवं अद्वितीय प्रतिमा विराजित है।

4) झारखण्ड के शिखरजी सिद्धक्षेत्र के तीस चौबीसी मंदीरजी के पास

5) राजस्थान के बांसवाडा जिले के कालिजरां बावनडेरी मंदीर

6) महाराष्ट्र चैतन्यवन सोनगिर (जिला धुलिया), जटवाडा (औरंगाबाद) कुम्भोज बाहुबली, अतिशयक्षेत्र (कोल्हापुर), कुथलगिरी (उस्मानाबाद) पोदनपुर बोरीवली मुंबई (त्रिमूर्ति मंदिर)

आधुनिक समय में बाहुबली स्वामी की प्रतिमायें काफी तादात में निर्मित होकर हर क्षेत्र में विराजित की गई है।

★★★★

हमारे देश का नाम भारतवर्ष न होता यदि बाहुबली न होते

- पुनीत जैन

चौथे काल के प्रथम केवल ज्ञानी व प्रथम मोक्ष प्राप्त करने वाले व्यक्ति भगवान बाहुबली ही थे। यह प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र थे। ऋषभदेव भगवान को विभिन्न वेदों और पुराणों व शास्त्रों में आदिनाथ (आदम) अथवाकदेशी आदि, अनेक नामों से जाना जाता है। तीर्थंकर ऋषभदेव को शिव व आदि मानव का रूप भी माना जाता है। ऋषभदेव भगवान राम के पूर्वज थे तथा इक्ष्वाकु वंश के प्रथम तीर्थंकर थे उनकी राजधानी अयोध्या थी। भगवान आदिनाथ सभी पुराणों, ग्रंथों के अनुसार बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति थे जो चौदहवें कुलकर राजा नाभिराय के पुत्र थे और उनकी महत्ता इसलिए भी मानी जाती है कि, इनका अवतरण उस समय हुआ जब मनुष्य पेड़-पौधों पर निर्भर रहने से हटकर सामाजिक व्यवस्था की ओर अग्रसर हुआ। यह वही पुरूष थे जिन्होंने लोगों को जगलों में रहने की बजाए एक सामाजिक संगठन में बंधने की बात कही। इन्होंने असि (युद्ध.) मसि (लेखन), कृषि (खेती). वाणिज्य (व्यापार), विद्या (शास्त्र रचना, नृत्य, गायन आदि) तथा शिल्प (हस्तकला चित्रांकन आदि) आजीविका के छः कर्मों की शिक्षा दी और इसी क्रमानुसार उन्होंने क्षत्रिय, वैश्य, किसान व अन्य प्रकार के कर्मों को करने वाले व्यक्तियों को सामाजिक व्यवस्था भी दी। उनका राज्य भरत खण्ड के अलावा अफगानिस्तान व ईरान तक भी था। यह वही व्यक्ति है जिन्होंने जब प्रयाग में राज्य त्याग किया तब से उस महान त्याग के कारण इलाहाबाद प्रयाग कहलाया।

भगवान ऋषभदेव के दो रानियां थी, यशस्वती और सुनन्दा। महारानी यशस्वती के गर्भ से अनेक पुत्र जन्में जिनमें भरत भी थे तथा उनके एक पुत्री ब्राह्मी उत्पन्न हुई। रानी सुनन्दा की कोख से एक पुत्र बाहुबली और पुत्री सुन्दरी ने जन्म लिया। आदिनाथ के जंगलों में चले जाने के बाद जब उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत को राज्य सौंपा तो उनके मन में चक्रवर्ती बनने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। आदिनाथ भगवान ने अपना राज्य अपने 100 पुत्रों को बाँट दिया था जिसमें से आज भी 50 से अधिक राज्यों की सीमाओं को पहचाना जा सकता है, लेकिन जब अश्वमेध का घोड़ा बाहुबली के राज्य में पहुँचा तो बाहुबली को यह बहुत बुरा लगा। मेरा बड़ा भाई भरत नमस्कार करने योग्य है, लेकिन तलवार और बल के जोर पर मेरे से आधीनता स्वीकार करने के लिए कह रहा है। वह मुझे स्वीकार नहीं है। क्योंकि बाहुबली ने राजा भरत के चक्रवर्ती होने में बाधा उत्पन्न की और उन्हें चुनौती दी इसलिए दोनों भाइयों में युद्ध के नगाड़े बज उठे। दोनों ओर से सेनाएं युद्ध के लिए कूच कर रणक्षेत्र में आमने-सामने पहुंच गई, लेकिन कुछ बुद्धिमान मंत्रियों ने दोनों भाइयों को समझाया कि यह भाइयों की बात है, इसलिए लाखों लोगों को युद्ध के द्वारा मौत के घाट उतारना उचित नहीं, अगर युद्ध करना है तो आप दोनों भाई महान व्यक्ति है। यह युद्ध में बिना सेना के ही आपस में लड़कर ही निर्णय निकाले कि कौन बलशाली है। इस प्रकार मंत्री की सलाह को स्वीकार करते हुए दोनों भाइयों ने निर्णय किया कि हम तीन प्रकार से आपस में युद्ध करेंगे और जो जीतेगा वह विजयी घोषित किया जायेगा।

प्रथम युद्ध नेत्र से टकराने का था कि जिसकी पलक पहले झपक जायेगी वह हार जायेगा। इस युद्ध में भरत बाहुबली से हार गये, दूसरा युद्ध जल युद्ध था, जिसमें एक बड़े सरोवर के एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ लगानी थी और एक दूसरे पर हथेलियों में पानी भरकर एक दूसरे पर पानी की बौछार का प्रहार करना था। इस युद्ध में क्योंकि भरत बाहुबली से कद में काफी छोटे थे तो जब वह प्रहार करते थे तो बाहुबली के वक्ष तक वह जल पहुँचता था, लेकिन जब बाहुबली जल का प्रहार करते थे भरत की आंखें धुंधिया जाती थी। बाहुबली की ऊंचाई इस युद्ध में उनकी विजय का कारण बनी। तीसरा युद्ध था मल्ल युद्ध दोनों ही भाई अत्यन्त बलवान थे और यह युद्ध काफी समय चला लेकिन क्योंकि बाहुबली ज्यादा शक्तिवान थे इस कारण से उन्होंने भरत को अपनी दोनों हथेलियों पर जमीन से ऊपर उठा लिया और जैसे ही बाहुबली सम्पूर्ण विजय की ओर अग्रसर हो रहे थे, उनके मन में एक विचार उत्पन्न हुआ कि मैं कितना गिर गया हूँ, कि अपने बड़े भाई को युद्ध में हराकर व मारकर मुझे क्या प्राप्त होगा? क्या मैं जमीन व धन के लिए ऐसा कर रहा हूँ? उनका मन तुरन्त संसार से इस बात को सोचकर विरक्त हो गया और उन्होंने भरत को पटकने के बजाए आराम से नीचे उतार दिया, लेकिन भरत ने अपने चरम आवेग में क्रोध के कारण चक्र चला दिया जो बाहुबली के तीन चक्कर लगा कर वापस भरत के पास आ गया, क्योंकि भरत भूल गये थे कि चक्र अपने कुल के वंशजों पर कोई प्रहार नहीं करता।

तत्पश्चात बाहुबली ने निर्णय किया कि वह क्रोध और लोभ से दूर सन्यास धारण करेंगे और राज्य को छोड़कर मुनि मुद्रा में तपस्या करेंगे। यह निर्णय सुनकर भरत चक्रवर्ती ने अपने छोटे भाई बाहुबली के चरण पकड़ लिए और कहा कि अगर आप ही चले गये तो मैं इस चक्रवर्तीके वैभव का क्या करूंगा? लेकिन बाहुबली अपने निर्णय पर अडिग रहे और जगलों की ओर प्रस्थान कर गये, लेकिन एक मंत्री ने उनको जाते समय यह कहा कि आप जिस जमीन पर तपस्या करेंगे वह भी भरत की ही जमीन होगी।

एक वर्ष तक बाहुबली ने घोर तपस्या खड़े होकर की और वह तपस्या इतनी गहन थी कि उनके चारों ओर दीपक व अन्य कीड़ों ने घोसले बना लिए तथा उनके शरीर पर बेलें चढ़ गई और उन पर सांप और बिच्छू भी चलने लगे। इस तपस्या को देखकर भरत चक्रवर्ती तथा अन्य लोग भगवान आदिनाथ के पास गये जो कैलाश पर्वत पर तपस्या कर रहे थे और उनसे प्रार्थना की कि हे भगवान इतनी घोर तपस्या आज तक किसी व्यक्ति ने नहीं की फिर भी उनको केवलज्ञान क्यों नहीं प्राप्त हो रहा है इस पर भगवान आदिनाथ ने अपने पुत्र भरत चक्रवर्ती से कहा कि बाहुबली के मन में एक विचार अभी भी है जिस कारण से इतनी घोर तपस्या के बाद भी उनको केवल ज्ञान नहीं मिल रहा है। उसका कारण है आज भी बाहुबली के मन में यह बात खटक रही है कि जिस जमीन पर खड़े है वह भरत की है जिस दिन उसके मन से यह विचार निकल जायेगा उसी समय बाहुबली को केवलज्ञान प्राप्त हो जायेगा। इस मुनि मुद्रा में घोर तपस्या को तोड़ने का कार्य भरत चक्रवर्ती तथा ब्राह्मी व सुन्दरी ने लिया और जहाँ बाहुबली अपनी तपस्या कर रहे थे वहां पर इन बहनों ने उन्हें संबोधा (वीरो भाइया हमारे गज से नीचे उतरो) बाहुबली ने जब यह शब्द सुने तो उनको क्रोध आया कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हूँ और यह मुझे गज से उतरने की बात कर रहे हैं लेकिन दूसरे ही क्षण बाहुबली के मन में बिजली सी कौंधी और उन्हें अपनी भूल का आभास हो गया। उन्होंने सोचा कि सचमुच भरत की जमीन पर खड़ा होने का संवेदन शूल मेरे अहंकार के गज पर आसीन था उन्हें स्वयं जैसे ही हल मिला तो वह केवल ज्ञानी ही गये और अपने पिता ऋषभदेव से पहले प्रथम केवलज्ञानी कहलाये और तुरन्त उनको मोक्ष प्राप्त हो गया। भगवान बाहुबली ऐसे महान व्यक्ति थे जो प्रथम केवल ज्ञानी अआदिनाथ (ऋषभदेव) से पहले इस विश्व में मोक्षगामी व्यक्ति हुए। यही कारण है कि सभी जैन भाई जो कि सिर्फ 24तीर्थंकरों की पूजा करते हैं उनके अलावा भगवान बाहुबली की पूजा करते है। जबकि वह तीर्थंकर नहीं थे। यह इक्ष्वाकु वंश के प्रथम दिग्गज व्यक्ति थे जिनको कि यह उपलब्धि प्राप्त हुई।

भगवान बाहुबली व भरत चक्रवर्ती ने लाखों वर्षों पहले विश्व को यहां सत्य, अहिंसा का रास्ता दिखाया वही पर प्रथम निशस्त्रीकरण (डिसारमामेंट) की बात भी दुनिया को दी। उन्होंने समझाया कि विश्व की हर प्रकार की समस्या और बात का बगैर हिंसा किये ही निर्णय किया जा सकता है।

भगवान बाहुबली का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि भौतिक सुखों से ऊपर अहंकार से दूर मोह माया से अलग रहकर ही आत्म कल्याण और विश्व शांति संभव है।

चामुण्डराय ने आज से एक हजार वर्ष पूर्व भगवान बाहुबली की विश्व की सबसे विशाल मूर्ति बनवाकर इस महापुरुष को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की जो आज हजार साल से ऊपर विश्व को यह शांति का संदेश दे रही है। यह मूर्ति अपने आप में विशाल ही नहीं अनूठी भी है, क्योंकि कोई भी जीव या व्यक्ति इसके चरणों में जाकर और इसकी मुद्रा को निहारे तो कोई कारण नहीं कि उसको शांति न मिले। मूर्ति का अभिषेक हर 12 वर्ष में होता है और यह मूर्ति विंध्यगिरि पहाड़ पर खड़ी मुद्रा में 58 फीट की है।

आज भारत वर्ष का नाम सभी इतिहासकारों के अनुसार इक्ष्वाकुवंशी भरत चक्रवर्ती जो आदिनाथ के पुत्र थे उनके नाम पर माना जा रहा है, यह तभी संभव हुआ जब भगवान ने अपने मान, लोभ और अहंकार पर विजय पाकर एक जीती हुई बाजी को हार कर भरत को चक्रवर्ती बनाया। हम इस महामस्तकाभिषेक से यही संदेश लें कि सत्य, अहिंसा द्वारा भौतिक सुखों से दूर आत्मा कल्याण और 84 लाख योनियों से छुटकारा पाकर मोक्षगामी बनें।

★★★★

।। श्री बाहुबली तप ।।

किशोरीलाल बादल , भिण्ड

जय बोलो गोम्मटेश्वर जी की, जय बोलो बाहुबलि स्वामी की।
जय बोलो ऋषभ के नन्दन की, जय प्रथम मोक्ष पद गामी की।।
भाई से भाई लड़कर के, प्रायश्चित करते अपने मन में,
जब भाव क्षमा का प्रकट हुआ, वैराग्य हुआ उनको छन में।
एक पल में सिंहासन छोड़ा, अपनाया मार्ग खुद तरने को,
पोदनपुर की गद्दी त्यागी, चल दिये स्वयं तप करने को।
अविवेकी भक्त भरत का था, यूँ बोला कहाँ ये जायेंगे,
छह खण्ड में राज्य भरत का है, तप त्याग कहाँ कर पायेंगे।।
श्री आदि प्रभु के समवशरण, जा पहुंचे जिनवाणी सुनने,
दीक्षा ले आदि जिनेश्वर से, वन गमन किया मुनि तप करने।
दृढ़ निश्चय मन में ठान लिया, खड़गासन में तप करना है,
यह सारी भूमि भरत की है, आहार नहीं अब करना है।
नहीं ध्यान रहा अपने तन का, तप करते इतने लीन हुए,
लिपटी शरीर से वृक्ष लता, बामियों में सर्प विलीन हुए।।
वैराग्य भरत को जब आया, करते सम्बोधन वह वन में,
कर देना मुझको क्षमादान, मैं भटक गया माया धन में।
है कैसी मेरी यह भूमि, मत मानो मेरा राज्य यहाँ,
मेरे समान कितने आये, किस-किसने भोगा इसे यहाँ।
यह शब्द भरत भाई के सुन, भावना पवित्र हुई उनकी,
फिर किया हृदय से क्षमादान, थी भक्ति की शक्ति उनकी।।
निर्मलता व्याप गई मन में, केवली ज्ञान जब पाये हैं,
घातिया कर्म सब नष्ट हुए, वह बाहुबलि कहलाये हैं।
वह पिता से पहले मोक्ष गये, मुक्ति पा सिद्धासन पाये,
दुनियाँ में जय-जयकार हुई, वह गोम्मटेस जी कहलाये।उनके
दर्शन से मिलता सुख, मिलती शोभा हरियाली की,
जय बोलो गोम्मटेश्वर जी की, जय बोलो बाहुबली स्वामी की।।

★★★★

कला और शिल्प के सिरमौर श्रवणबेलगोला में जैन एकता का शंखनाद

– सुरेश जैन I.A.S., भोपाल

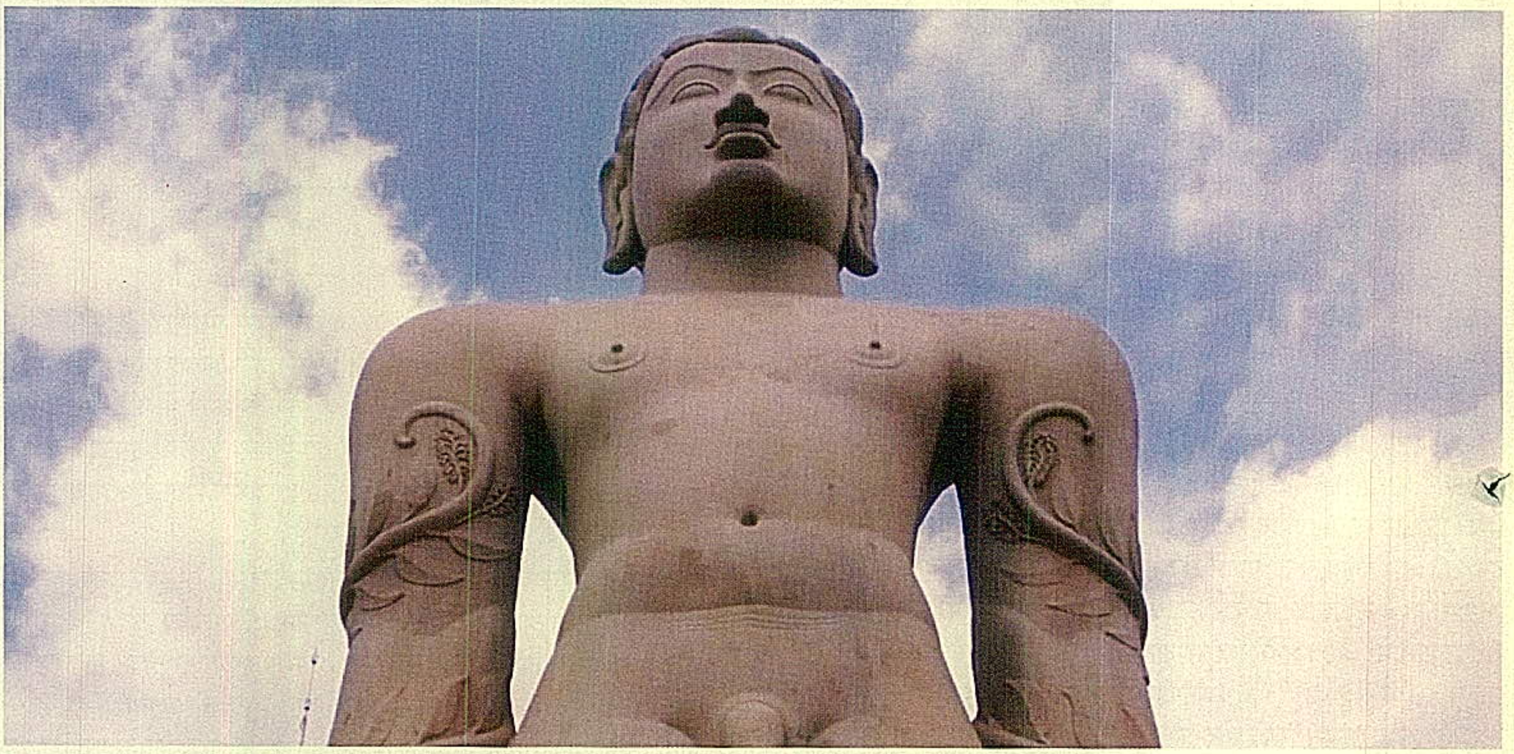

श्रवणबेलगोल ढाई हजार वर्षो से जैन संस्कृति का विशाल आध्यात्मिक केन्द्र रहा है। स्वाध्याय का विख्यात केन्द्र रहा है। यह तीर्थ भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत और अद्‌भुत सांस्कृतिक संपदा – धवला और महाधवला – को सहेजता रहा है। धवला और महाधवला के स्वर यहां सदैव गूंजते रहे हैं। नियमित रूप से जैन शास्त्रों का प्रतिलिपिकरण होता रहा है। सहस्त्रों समाधिमरण का सुप्रसिद्ध स्थल रहा है। फरवरी, 2018 में आयोजित नव दिवसीय 86 वें महामस्तकाभिषेक से 1036 वर्ष पूर्व भारत के अशांत परिवेश में भी श्रवणबेलगोल अहिंसक जीवनशैली का विशाल केन्द्र बना। पूरे देश में विख्यात हुआ।

2. श्रवणबेलगोल शक्ति, सौन्दर्य, शील, श्रम और श्रुत का अद्‌भुत और संतुलित समन्वय (इक्विलीब्रियम) केन्द्र है। सम्पूर्ण भारत देश के महानायक, महायोद्धा और महायोगी बाहुबली ने भरत की ज्येष्ठता के साथ–साथ अपनी श्रेष्ठता का सम्मान करते हुए इस ग्राम में अपनी भगवत्ता को जीवंत किया। अपार शक्ति और दृढ़ संकल्प के धनी चामुण्डराय तथा श्रुत और शील के धनी सिद्धांत चकवर्ती नेमिचन्द्राचार्य ने बाहुबली के इस अप्रतिम व्यक्तित्व को पूर्णाकार प्रदान किया। श्रवणबेलगोल में सुप्रतिष्ठित भगवान बाहुबली की प्रतिमा एक ओर परम तप की जीवंत प्रतीक है तो दूसरी ओर शांति और दृढ़ संकल्प की। श्रमण के श्रम और नारी की गरिमा की प्रतिनिधि है। यह प्रतिमा आचार्य नेमिचन्द्र के श्रुत, चामुण्डराय की शक्ति और शिल्पी के शिल्प सौन्दर्य की गौरव गाथाऐं सुनाती है।

3. इस प्रतिमा से नर और नारी की गरिमा पूरे वैभव के साथ मुखरित होती है। शक्ति और स्वस्ति के मधुर मिलन के गीत झंकृत होते हैं। यह प्रतिमा अद्‌भुत दृढ़शक्ति संपन्न पांच महिलाओं की आश्चर्यजनक स्त्रैण शक्ति की अमर कहानी हमें सुनाती है। तपस्या करते हुए बाहुबली को निशल्य करने में ब्राम्ही और सुन्दरी की भूमिका, प्रतिमा के निर्माण में कालल देवी की प्रेरणा, शिल्पी के संकल्प को दृढ़ करने में उनकी माँ की प्रेरणा और प्रथम मस्तकाभिषेक की सफलता में गुल्लिका अज्जी की भक्ति प्रत्येक दर्शक को प्रेरित करती है। गुल्लिका अज्जी सर्वहारा वर्ग की प्रतिनिधि है। अभूतपूर्व भक्ति भावना की धनी है। गुल्लिका अज्जी अपनी पवित्र ऑखों से अब भी बाहुबली के चरणों को ही देखती है। उन चरणों को ही प्रणाम करती है। अपनी भक्ति के सम्पूर्ण समर्पण का का चिरस्थायी उदाहरण प्रस्तुत करती है। छोटे से बिन्दु में सिमटी हुई अपनी भक्ति को सिन्धु की महिमा का स्वरूप प्रदान करती है।

4. भगवान बाहुबली की यह सुन्दरतम मूर्ति जैन समाज की हीं नहीं अपितु पूरी मानवता की विशाल एवं सुन्दर धरोहर है।

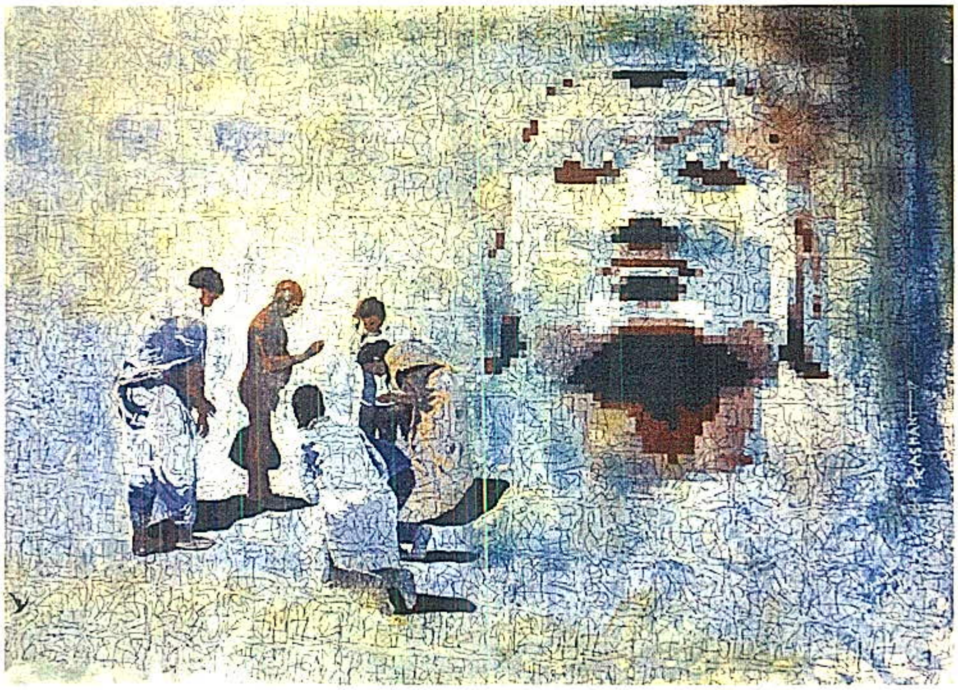

आचार्य नेमिचन्द्र के गोम्मटसार की गाथाऐं, चामुण्डराय की वीरता की कहानियाँ और शिल्पी का शिल्प संगीत इस नगरी की सारी दिशाओं में अब भी गूँजता रहता है। विन्ध्यगिरि और चन्द्रगिरि की गिरिओं पर निनाद करता रहता है। हमारे मन को झंकृत करता रहता है। मानव श्रम और मानव की सौन्दर्य अनुभूति के अनुपम संगम का मिलन बिन्दु इस पर्वत पर विद्यमान है। यह आध्यात्मिकता का चरम बिन्दु है। श्रामण्य, आध्यात्मिक, शक्ति, सौन्दर्य, शील और श्रुत के समन्वय का अद्‌भुत उदाहरण है। लोक और शास्त्र के प्रभावी समन्वयक तथा सतत रूप से तृतीय द्वादश वर्षीय महामस्तकाभिषेक के सान्निध्य प्रदाता आचार्य वर्धमानसागरजी के श्रुत, गत पॉच दशकों से महामस्तकाभिषेक के सूत्रधार स्वस्ति श्री महाभट्‌टारक चारूकीर्ति स्वामी जी के श्रम और पूरी जैन समाज के धन से संयोजित अभिषेक धाराऐं जन–जन को आकर्षित करती है। शीतल और सुगंधित जल–चंदन से अभिषिक्त करती हैं। स्वामी जी के व्यक्तित्व से छलक रही अजस्त्र श्रम की धारा को पूरे देश ने अपने धन की थैलियों की गठानों को अनावृत कर पंचरंगी स्वरूप दिया। इन्द्रधनुषी रंग दिया। हम उन सब दान दातारों का अभिनन्दन करते हैं। इन सबके अवदान को अपने व्यक्तित्व में आत्मसात करते है। अपने अंतर्मन में इस सौन्दर्य और सृजन की चेतना को जागृत करते है।

5. इस पर्वत पर आचार्य नेमिचन्द्र जी की समग्र मनीषा विकीर्ण हुई। कालल देवी का स्वप्न फलीभूत हुआ। शिल्पी ने विशाल पाषाण में से सम्यक्त्व की प्रतीक बाहुबली की मूर्ति को अनावृत किया। इस विशाल मूर्ति के दर्शन करते ही हम सब आचार्य नेमिचन्द्राचार्य, चामुण्डराय, उनकी माता कालल देवी, शिल्पी और उनकी माता की अद्‌भुत शक्तियों का सहज ही स्मरण कर लेते है।

6. भगवान बाहुबली की यह अद्वितीय मूर्ति पूरे विश्व को निशस्त्रीकरण और अहिंसा का संदेश प्रदान करती है। बाहुबली के व्यक्तित्व की प्रमुख छवियों–निशस्त्रीकरण, ध्यान, योग, एकाग्रता, तप और अपरिग्रह – को जीवंत और जयवंत करती है। अनेकता में एकता और विषमता में समता को उद्‌घाटित करती है। अपने सौन्दर्य से पूरे जगत के कण–कण को प्रभावित करती है। उनके मुखमण्डल पर मुखर होती सूर्य की किरणें जन–जन को आकर्षित करती है।

7. विश्वस्तरीय महामस्तकाभिषेक के अवसर पर देश राष्ट्रपति जी और प्रधानमंत्री जी श्रबणबेलगोला पधार रहें हैं। श्रवणबेलगोला हम सबके स्वागत के लिए उन्मुख है। महामस्तकाभिषेक हेतु 12 करोड़ की लागत से जर्मन टेक्नालॉजी का मंच बन चुका है। 400 एकड़ में महोत्सव स्थल बनाया गया है। महाव्रतियों और व्रतियों के स्वागत के लिए त्यागी नगर पूर्ण रूप से तैयार है। देश के प्रमुख 30 आचार्य एवं 250 से अधिक पिच्छीधारी संत इस अवसर पर पधार रहे हैं। विंध्यगिरि पहाड़ी पर आवागमन हेतु पृथक से सीढ़ियों का निर्माण हो चुका है। समारोह में देश विदेश के लगभग 30 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। उनके लिए 17 भोजनशालाऐं बन चुकी है। सर्वसुविधायुक्त अत्याधुनिक आवास की व्यवस्था की गई है।

10. आप सबसे आग्रह है कि फरवरी–मार्च, 2018 के महामस्तकाभिषेक के अवसर पर हम बाहुबली के शांति और निशस्त्रीकरण के संदेश को पूरे विश्व में प्रभावी ढंग से पहुंचावे और जैन संस्कृति का प्रचार–प्रसार कर जन–जन को आल्हादित करें। समग्र आत्मिक विकास के पथ पर आगे बढ़ाऐं। हम सब जैन समाज की ठोस एकता के सपने देखते रहें ओर इस अवसर पर श्रवणबेलगोल में विराजमान सहस्त्राधिक संतों के सान्निध्य में अपने हाथ मजबूती से आगे बढ़ा कर और ऊपर उठकर जैन संस्कृतिक एकता का शंखनाद करें।

जैनाचार्यों से प्रभावित कर्नाटक के राजवंश

- श्रीमती रेखा पतंग्या, इन्दौर

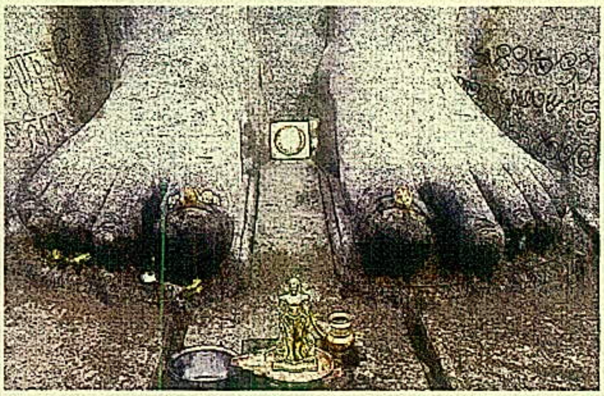

भारत देश के स्वर्णिम इतिहास की ओर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि इस पावन धरा पर अवतरित अनेकों महापुरुषों ने भौतिक सम्पन्नता में पल कर भी आत्मिक विकास की ज्योति को प्रज्ज्वलित कर, अपनी ज्ञान-रश्मियों से युगों-युगों तक मानवता के पथ को प्रकाशमान बनाये रखना।

भगवान ऋषभदेव इस दृष्टि के प्रथम पुरोधा पुरुष थे, जिन्होंने भोग-भूमि का अर्थात् जैसा सोचा वैसा पाया, जीवन जीने की अभ्यस्त जनता को षट्कर्म की शिक्षा देकर कर्म भूमि का प्रारंभ कर एक नए इतिहास को रच डाला। भगवान ऋषभदेव की ही परंपरा के 23 तीर्थंकरों ने अपनी तेजस्विनी आत्म-शक्ति से संपूर्ण विश्व को मंगल-प्रभात के सुखद प्रकाश से भासमान कर दिया। भगवान महावीर के पश्चात् जैन धर्म की ध्वजा को फहराने में जैन श्रमणों की महती भूमिका रही। जैन श्रमणों ने अपने तपश्चरण के निर्मल ज्ञान व निष्कलंक चारित्र से न केवल जन-समुदाय वरन भारतीय राजवंशों को प्रभावित किया तथा वे अनेक राजवंशों के कुशल मार्गदर्शन रहे है। जैनाचार्यों के तपश्चरण की महत्ता उनकी प्रभावक भूमिका का वर्णन वेद, भागवत, उपनिषदों में वर्णित हैं। भगवान महावीर के पश्चात् के प्राप्त ऐतिहासिक प्रमाण इस कथन को स्पष्ट करते हैं। मैगस्थनीज ने लिखा है-

महावीर के उत्तरवर्ती अनेक नरेश अपने विश्वास पात्रों को जैन-मुनियों के पास भेजकर उनसे मार्गदर्शन लिया करते थे।

इतिहास साक्षी है, दक्षिण भारत में राजवंश जैनाचार्यों से मार्गदर्शन लिया करते थे, उनका शासन काल भारतीय इतिहास में स्वर्णिम-युग के नाम प्रसिद्ध हुआ। जैनाचार्य जहाँ भी गये वहाँ की जन-भाषा को अपनाया और उसे प्रभावकारी माध्यम के रूप समृद्ध किया। उन्होंने उसी भाषा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। उनका उद्देश्य था जन-मानस को सद-आचरण के लिए शिक्षित करना तथा समाज को स्थिर आधार प्रदान करना। दक्षिण भारत का कर्नाटक जैन धर्म का घर माना जाता है। यह कृष्णा-कावेरी का बेसिन होने के कारण उपजाग है। स्वभावत: यह समृद्धिशाली राज्यों और सांस्कृतिक केन्द्रों के विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार सिद्ध हुआ। दक्षिणा-पथ में जैन संस्कृति के संरक्षण व प्रसार के लिए, प्रारंभ से ही इस कर्नाटक देश का बड़ा नाम रहा है। आईये, इस लेख में हम कर्नाटक प्रदेश के अतीत की चर्चा कर जैनाचार्यों से प्रभावित उन राजवंशों को जानेंगे, जिनके शासन काल में जैन धर्म व उसकी आस्थावान अस्मिता की सहज आभा कभी मंद नहीं हुई। यही नहीं पर जैन धर्म एक आगन्तुक धर्म से धीरे-धीरे स्थाई व प्रभावशाली धर्म बन गया और लगभग बारह शताब्दियों तक कर्नाटक के अत्यन्त प्रभावशाली एवं प्रसिद्ध राजवंशों का सूत्र बना रहा। इसका प्रमुख कारण था, जैन गुरुओं का राजवंशों पर प्रभाव।

1. <u>गंग राजवंश जैनाचार्यों की महत्वपूर्ण कृति</u>

जैन धर्म की सर्वप्रथम राजनीतिक कृति दक्षिण भारत का गंग राजवंश है। इस वंश के नरेशों के शिला-लेख, ताम्र-पत्र आदि से ज्ञात होता है, कि तीर्थंकर ऋषभदेव के इक्ष्वाकुवंश में राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र गगदत्त के नाम से गंग वंश की स्थापना हुई। इसी वंश के राजा पद्नाभ ने अपने दो पुत्र माधव व दडिग को सुरक्षा की दृष्टि से पेरुर गाँव की ओर भेज दिया। वे दोनों पुत्र घूमते हुए कर्नाटक पहुँचे। वहाँ जैनाचार्य सिंहनन्दी जो उस काल के प्रमुख जैनाचार्य थे, विराजमान थे। दोनों राजकुमार ने आचार्य को नमस्कार किया। आचार्य सिहनन्दी ने उन्हें अपने पास रख कर राज-विद्या में निपुण किया और उपयुक्त समय देख कर अपनी मयूर पिच्छिका उन्हें राष्ट्र-ध्वज के रुप में प्रदान कर उनका राज्याभिषेक किया। गुरु-मन्त्रणा के अनुसार वे राज्य निर्माण में संलग्न हो गये। अपने गुरु के समक्ष देव-शास्त्र गुरु में श्रद्धा तथा नैतिक जीवन जीने का वचन देकर 86000 संज्ञक देश को अपने राज्य में शामिल कर, राज्य विस्तार किया। इस तरह कर्नाटक में जैनाचार्य से प्रभावित गंग राज्य की प्रथम स्थापना थी।

तीसरी व चौथी शताब्दी के गंग नरेश भी जैनाचार्यों के प्रति श्रद्धानवत बने रहे।

सन् 466 ई. में गंग नरेश अविनीत जैन धर्म का समर्थक था। आ. पूज्य पाद स्वामी में अपनी विशेष भक्ति रखता था। अविनीत के पुत्र दुर्विनिती ने आचार्य पूज्य पाद स्वामी से ज्ञान प्राप्त किया था।

गंग नरेश मानसिंह आचार्य अजित सेन के शिष्य थे। अपने अन्तिम दिनों में मानसिंह नरेश ने आचार्य अजीत सेन के प्रभाव से राज्य त्याग कर सल्लेखना धारण की थी। मानसिंह के पुत्र राचमल्ल भी जैन धर्म के प्रति समर्पित था। उसके सेनापति चामुण्डराय ने अपनी माता कालल देवी की भावना को दृष्टिगत कर, आचार्य अजीत सेन गुरु की प्रेरणा व आचार्य नेमिचन्द्र के मार्गदर्शन में विश्व प्रसिद्ध भगवान बाहुबली की प्रतिमा का निर्माण कर विश्व के इतिहास में अमर हो गये। आज भी श्रवणबेलगोला के विन्ध्यगिरि पर वीर चामुण्डराय द्वारा निर्मापित एवं प्रतिष्ठापित 58 फुट उन्नत निर्विकार दिगम्बर मूर्ति जो विश्व की अपूर्व कलाकृति है। हजार वर्ष से श्रमण संस्कृति गौरव गाथा त्याग का प्रेरणा स्रोत बन रही है।

नि:संदेह गंग राजवंश जैनाचार्यों के प्रभाव से जैन धर्म के उपासक एवं संरक्षक बने रहे। इस वंश के राज्य काल में जैन धर्म राज्य धर्म था। 4 थी से 12 वीं तक के शिलालेखों से प्रमाणित होता है, गंग वंश के शासकों ने जैन मंदिरों का निर्माण करवाया। जैन साधुओं के लिए गुफाएँ बनवायी। इस वंश के राज्य काल को जैन धर्म का स्वर्ण-युग कहा गया।

2. <u>जैनाचार्यो से प्रभावित कदम्ब नरेश-</u>

कदम्ब के राजा मूलत: ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे। किन्तु उस वंश के

कुछ राजा जैन धर्म के भक्त थे। उनके सहयोग व संरक्षण से कर्नाटक में जैन धर्म की अभ्युन्नति हुई। इस वंश का राजा शिवस्कंद अथवा शिवकोटि आचार्य समंतभद्रस्वामी का भक्त था। उसी समय से इस वंश में जैन धर्म के प्रति आदर-भाव रहा। कदम्ब वंश के नरेश हरिवर्मन राजा जैनाचार्य वारिषेण का भक्त था।

कदम्ब वंश के राजाओं के सान्निध्य में जैन संघ और संस्थाएँ सजीव एवं प्रगतिशील थी। कदम्बों के प्रमुख सामंत भी जैन धर्म के उपासक थे।

कदम्ब नरेश काकुत्स्थ वर्मा, उनका पुत्र मृगेश वर्मा भी जैन धर्म के अत्यन्त निकट थे। मृगेश वर्मा के उत्तराधिकारी राजा रवि वर्मा ने भी अपने पिता का अनुसरण किया और जैन धर्म के बढ़ते प्रभाव को अधिक स्पष्टता से अंगीकार किया। उसके एक ताम्र-पत्र से ज्ञात होता है कि उसने जैन-धर्म के लिए एक कानून बनाया जिसके अनुसार पुरुखेटक ग्राम की आय से प्रति वर्ष कार्तिक की पूर्णिमा तक अष्टान्हिका महोत्सव होना चाहिए। वर्षा ऋतु के चार महीनों में साधुओं सेवा होनी चाहिए।

इस प्रकार कदम्ब वंश के शासकों के समय कर्नाटक में जैन धर्म अवश्य उन्नति हुई, यह बात विविध दान-पत्रों से प्रमाणित होती है।

राष्ट्र-कूट वंश व जैनाचार्य:-

राष्ट्रकूटों का राज्य अधिक समय तक 754 ई.से 974 ई. तक रहा। उनमें से कुछ राजा जैन धर्म के महान संरक्षक थे। राष्ट्र-कूट नरेश दन्तिदुर्ग जैनाचार्य अकंलकदेव के भक्त थे। हालांकि कुछ इतिहासकारों में इस बात को लेकर मतभेद भी है।

राष्ट्र-कूट नरेश गोविंद तृतीय भी जैन धर्म का संरक्षक था। आ. जिनसेन ने हरिवंशपुराण गोविंद तृतीय के पिता श्री वल्लभ के राज्य काल में रचकर पूर्ण किया था। गोविंद तृतीय का पुत्र अमोघवर्ष प्रथम जैन धर्म का महान् उन्नायक, संरक्षक और आश्रय दाता था। गुणभद्राचार्य ने उत्तर पुराण में लिखा है- जिसको प्रणाम करने से राजा अमोघवर्ष अपने को पवित्र समझता था, वे जिनसेनाचार्य जगत के मंगल-रूप है।

इससे ज्ञात होता है वह राजा दिगम्बर जैन मत का अनुयायी और आचार्य जिनसेन का शिष्य था।

प्रसिद्ध जैनाचार्य व गणितज्ञ महावीराचार्य ने सुप्रसिद्ध गणितसार संग्रह अमोघवर्ष के शासन काल में लिखा था। प्रो. सालतारे ने लिखा है- We know that the Amoghvarsa was the disciple of Jinsena the Jain leaning of the King is further carrabrated by Mahaviracharya.

महावीराचार्य के प्रभाव से राजा अमोघवर्ष ने अपना अंतिम समय में त्यागी श्रावक के रूप में व्यतीत किया था। इसके कार्यकाल में जैन धर्म, राष्ट्र धर्म रहा। अमोघवर्ष के उत्तराधिकारी भी जैन धर्म का पालन करते रहे।

दिगम्बर जैनाचार्य का प्रभाव इस वंश पर इतना अधिक था, इसकी पुष्टि डॉ. सालतारे के इस कथन से होती है, राष्ट्र कूट साम्राज्य की लगभग दो-तिहाई जनता नरेश कर्मचारी, महाजन, श्रेष्ठि सभी जैन धर्मावलंबी थी।

चालुक्य वंश द्वारा जैनाचार्यों से प्रभाव से जैन धर्म को संरक्षण

चालुक्य वंश की पुनः स्थापना 973 ई. में तैलप द्वितीय ने की थी। चालुक्यों के राज्य में जैन धर्म की प्रगति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। क्योंकि चालुक्य वंश आम तौर से हिन्दू राज वंश के रूप में प्रसिद्ध है। किन्तु अन्य राज वंशों की तरह चालुक्य भी अन्य धर्मों के प्रति उदार थे। डॉ. भंडारकर ने लिखा है कि बादामी के चालुक्यों के शासन में जैन धर्म को प्रमुखता मिली। चालुक्य नरेश जयसिंह बादिराज मुनि से अत्यन्त प्रभावित थे। वादिराज मुनि ने पार्श्वचरित यशोधर चरित्र, एकीभाव स्त्रोत राजा जयसिंह की राजधानी में पूर्ण किया था। ये राजा जयसिंह द्वारा पूजित थे।

चालुक्य नरेश भुवनेकल्ल जैनाचार्य नयसेन के परम भक्त थे। चालुक्य वंश पर जैनाचार्यों के बारे में डॉ. स्मिथ ने हिस्ट्री ऑफ इंडिया के पेज नं. 444 में लिखा है. The Chalukya were the greatest Supporters of Jainism हैदराबाद के परभनी स्थान से प्राप्त एक शिलालेख के अनुसार, चालुक्य वंशी वहिग आचार्य सोमदेव सुरि के उपदेश से प्रभावित थे।

चालुक्य वंश की एक और शाखा पूर्वीय या वेंगी के चालुक्य नाम से प्रसिद्ध थी। इस वंश के राजाओं ने भी जैन धर्म का संरक्षण अच्छी तरह से किया था। मंदिर निर्माण, मुनियों को दान आदि इस वंश के राजाओं द्वारा किए गए।

होयसल वंश व जैनाचार्य:-

12 वीं शताब्दी के अन्त में चालुक्यों के पतन के बाद दक्षिण भारत में दो नयी शक्तियों का जन्म हुआ। उनमें से एक होयसल थे, जो कर्नाटक देश के ही वासी थे और दूसरे यादव थे। होयसल राज वंश जैन प्रतिभा की दूसरी महान रचना हैं। दसवीं शताब्दी के मध्य में जब कर्नाटक में होयसल वंश प्रथम ऐतिहासिक व्यक्ति प्रकाश में आया, तब अंगड़ि जैन धर्म का प्रधान केन्द्र था। अंगड़ि से प्राप्त शिलालेख के अनुसार, अंगदि में सुदत्त नाम के जैन गुरु रहते थे। एक बार होयसल राजा अपने कुल देवता वासन्तिका के मंदिर में पूजा के लिए गया और वहाँ जैन गुरु का उपदेश सुनने लगा। उसी समय जंगल से निकल कर एक क्रुद्ध सिंह उनकी ओर झपटा। जैन गुरु ने अपनी मयूर पिच्छिका राजा की ओर फेंक कर कहा- (पोयसल) हे सल इसे मार। वीर सल ने तुरन्त उस पिच्छिका के प्रहार से सिंह को भगा दिया। वीरसल के द्वारा होयसल वंश की स्थापना हुई।

श्रवणबेलगोला के शिलालेखों 54 के अनुसार होयसल के उत्तराधिकारी विनयादित्य प्रथम तथा उसके वंशजों ने जैन धर्म को महान संरक्षण दिया। विनयादित्य द्वितीय के गुरू का नाम शान्ति देव था। एक शिलालेख के अनुसार विनयादित्य द्वितीय अपने गुरु शान्ति देव की उपासना से अपने राज्य में लक्ष्मी लाने में समर्थ हुआ।

होयसल नरेस बल्लाल के गुरु चारू, कीर्ति मुनि थे। राजा बल्लाल के अल्पकालीन शासन के पश्चात् बिट्टिगदेव शासक बना। बिट्टिगदेव ने धर्म-परिवर्तन कर लिया था। मगर उसकी रानी शांतल देवी जैन धर्म के प्रसार में सहयोग देती रही।

श्री सोलेतोर ने लिखा है कि- होयसल नरेशों के मन में जैन धर्म प्रति रुझान तथा जैन गुरूओं के प्रति कृतज्ञता का भाव इतना अधिक था। वे जैन गुरुओं का सम्मान, मंदिरों के निर्माण तथा जीर्णोद्धार में अपना सहयोग देते रहे।उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है, भारत वर्ष के कर्नाटक राज्य में जैनाचार्यों ने जन-जीवन को नैतिक तथा राजनीतिक को प्राणवान बनाकर भारतीय संस्कृति की सर्वतोन्मुखी उन्नति की। श्रमण संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को अहिंसा, अपरिगृह, अनेकान्त, स्याद्वाद आदि महत्वपूर्ण सिद्धांतों की अपूर्व देन देकर यशस्वी बनाया है।

भगवान पार्श्वनाथ, लालमंदिर जी

!! श्री पार्श्वनाथाय नमः !!

आचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी'

आचार्य श्री सूर्य सागर जी महाराज

आचार्य श्री विजय सागर जी महाराज

फाल्गुनी अष्टान्हिका पर्व के

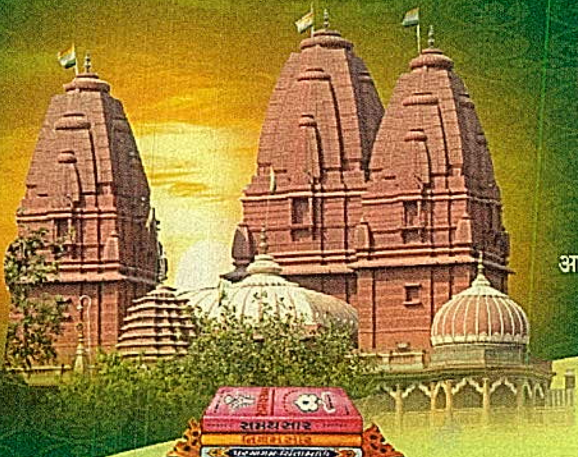

आचार्य कुन्दकुन्द जी महाराज

श्री १००८ समय

वीरवार, 22 फरव

पावन सान्निध्य

पावन सानि

आचार्य श्री १०८ विद्याभूषण सन्मति सा

एलाचार्य श्री 108 अ

स्थान – श्री दिगम्बर जैन लाल मंि

गणिनी आर्यिका श्री 105 चन्द्रमती माताजी

आर्यिका श्री 105 शक्ति भूषण माताजी

दैनिक मांगलिक कार्यक्रम

प्रातः 6.30 बजे - अभिषेक
प्रातः 7.30 बजे - शान्तिधारा
प्रातः 8.00 बजे - नित्य नियम पूजन
प्रातः 9.30 बजे - विधान प्रारंभ
सायं 7.00 बजे - आरती
सायं 7.30 बजे - शास्त्र सभा
रात्री 8.00 बजे - सांस्कृतिक कार्यक्रम

* मुख्य विधानाचार्य *
ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)

डॉ. श्रेयांस जैन, बड़ौत (उ.प्र.), डॉ. अमित

मुख्य आकर्ष

आचार्य श्री कुन्द-कुन्द स्वामी पर आधारित लघु नाटिका श्री विवेक जैन (धर्मपुरा) द्वारा 01 मार्च 2018

इन्द्र-इन्द्राणियों के लिये निःशुल्क आकर्षक वस्त्राभूषण

आचार्य श्री कुन्द-कुन्द स्वामी की अष्ट-द्रव्य से पूजन 25 फरवरी 2018

सांस्कृतिक कार्यक्रम
स्याद्वाद महिला मण्डल एवं आराधना महिला मण्डल, चाँदनी चौक

14x14 Ft. का विशाल मांडला

सैकड़ों इन्द्र-इन्द्राणियों द्वारा महार्चना

मूर्धन्य विद्वानों द्वारा श्री समयसार ग्रंथराज क सारगर्भित व्याख्या

विधान में बैठने की निःशुल्क व्यवस्था है। इच्छुक महानु

आयोजक व निवेदक

प्राचीन श्री अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत (रजि.) धर्मपुरा, दिल्ली-6
चक्रेश जैन (अध्यक्ष) • विजयेन्द्र जैन (महामंत्री) • शेखर जैन 'दिगम्बर' (कोषाध्यक्ष) • पुनीत जैन (मंदिर मैनेजर)

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कार्यकारिणी स
न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली-5

सम्पर्क सूत्र – अनिल जैन 9810188048, ऋषभ जैन 9211400162, अलका जैन 9810061204, अनिल जैन 9868174517, गजेन्द्र जैन 981104
अनिल जैन 'बल्लो' 9810280897, सुशील जैन 9818025526, राकेश जैन 9899404737, समीर जैन 9910033159, विकास जैन 981838738
सुनील जैन 9810820087, पंकज जैन 'नीटू' 9250937125, सुनील जैन 9810046675, अंकुर जैन 9811029409, शरद जैन 9717494979

!! श्री महावीराय नमः !!
आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज 'भिण्ड'
आचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
श्री जती जी
आचार्य श्री १०८ विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
ावन पुनीत अवसर पर
सार महामण्डल विधान
एवं विश्वशान्ति महायज्ञ
से शुक्रवार, 2 मार्च 2018
ध्य
र)जी महाराज के परम शिष्य
ावीर जी मुनिराज
र जी, चाँदनी चौक, दिल्ली
* विधानाचार्य व संगीत *
ब्र. राज किंग जैन, अशोक नगर (म.प्र.)
* सह-विधानाचार्य *
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', ऋषभ विहार (दिल्ली)
पं. ऋषभ जैन, श्री सम्मेद शिखर जी (झारखण्ड)
आमंत्रित विद्वान *
जैन 'आकाश', वाराणसी (उ.प्र.), श्री संदीप जैन, एजीसीआर एन्कलेव (दिल्ली)
ण
एलाचार्य श्री का
य पिच्छी परिवर्तन
25 फरवरी 2018
विधान में बैठने वाले महानुभावों के लिए भोजन व आवास की निःशुल्क व्यवस्था
लक्की ड्रॉ द्वारा निःशुल्क आकर्षक पुरस्कार
विधान में बैठने वाले महानुभावों के लिए प्रतिदिन (प्रातःकाल)
उपस्थित महानुभावों के लिए प्रतिदिन (सायंकाल)
प्रतिदिन सायं मनमोहक व प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम
श्री मन्दिर जी व समस्त क्षेत्र की भव्य सज्जा एवं लाईटिंग
भाव शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें
ति,
10,
नमनकर्ता :
सुगंध पेपर ट्रेडर्स
सभी डुप्लेक्स पेपर बोर्ड के विक्रेता
Mob : 9810455479, 9212245479
मनीष जैन
(डायरेक्टर – जैन कोऑपरेटिव बैंक)
आरती जैन
रिया जैन, अतिशय जैन
ARIHANT-9958819046

स्तुतियों में गोमटेश

- डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली

भारतीय संस्कृति में स्तुतियों का बहुत महत्त्व है। जैन संस्कृति में भी स्तुति साहित्य बहुत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। जैनाचार्यों, विद्वानों तथा कवियों ने जब जिस काल में जिस भाषा का बोलबाला रहा तब उस भाषा में स्तुतियों की रचनायें कीं।

प्राकृत भाषा में स्तुति के लिए थुई और (थुदि) इन दो शब्दों का प्रयोग मिलता है। संस्कृत में इसके लिए स्तुति (स्तव) स्तोत्र आदि शब्द व्यवहृत है। प्रारम्भ में स्तुति और स्तव में थोड़ा अन्तर किया जाता था। डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक संस्कृत काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान में पृ.551 पर इस पर विशेष प्रकाश डालते हुए लिखा है कि पहले एक, दो या तीन श्लोक तक की रचना को स्तुति कहते थे तथा उसके बाद चार या उससे अधिक श्लोकादि हो तो उसे स्तव कहा जाता था। अन्य अनेक आचार्यों ने ऐसा भी माना कि एक श्लोक से सात श्लोक तक की रचना स्तुति तथा आठ और उससे अधिक की रचना स्तव कहलाती है।[1] यह भी परिभाषा आती है कि स्तव गम्भीर अर्थ वाला तथा संस्कृत में निबद्ध होता है तथा स्तोत्र विविध छन्दों वाला और प्राकृत में निबद्ध होता है।[2]

किन्तु कालान्तर में ये भेद समाप्त होते चले गये और अब स्तुति स्तव, स्तवन, स्तोत्र आदि शब्द समानार्थी हो गये हैं। आचार्य समन्तभद्र[3] के शब्दों में स्तुतिः स्तोतुः साधोः कुशल परिणामाय स तदा कहकर उसे प्रशस्त परिणाम उत्पादिका कहा है। पण्डित जुगलकिशोर मुख्तार भावपूजा को स्तुति मानते हैं।[4]

आचार्य मानतुंग मानते हैं कि स्तुति से सारे पाप क्षणभर में नाथ को प्राप्त हो जाते हैं-[5]

त्वत्संस्तवेन भव संतति सन्निबद्धं,
पापं क्षणात् क्षय मुपैति शरीरभाजाम्।

कविवर वादीभूसिंह सूरि भक्ति को मुक्ति रूपी कन्या से पाणिग्रहण में शुल्क रूप कहा है। उनका कहना है जो शुभ भक्ति मुक्ति को प्राप्त करा सकती है, वह अन्य क्षुद्र क्या-क्या कार्य सिद्ध नहीं कर सकती?

श्रीपतिर्भगवान् पुज्याद् भक्तानां वा समीहितम्।
यद्भक्तिः शुल्कतामेति मुक्तिकन्याकरग्रहे।।
सती भक्तिः भवति मुक्तयै क्षुदं किं वा न साधयेत्।
त्रिलोकीमूल्यरत्नेन दुर्लभः किं तुषोत्करा।।[6]

यह स्पष्ट है कि भक्ति या स्तुति शिवेतरक्षित (अमंगलनाश) एवं सद्यः परनिर्वृति (त्वरित आनन्द प्राप्ति) के साथ परम्पराया मुक्ति की भी साधिका है। यद्यपि स्तुति शब्द का प्रयोग प्रायः अतिप्रशंसा में भी होता है। किन्तु जैन परम्परा

---

1. तथा एक श्लोकः द्वौ श्लोकों, त्रिश्लोकाः वा स्तुतिर्भवति परतश्चतुः श्लोकादिः स्वतः। अन्येसामाचार्याणां मतेन एक श्लोकादिः सप्त श्लोकपर्यन्ता स्तुतिः ततः परमष्टश्लोकादिकाः स्तवाः।- संस्कृत काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान -डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, प्रकाशक- भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ.551
2. वही।
3. स्वयंभू स्तोत्र, 21/1
4. स्तुति विद्या, भूमिका, पृ.10, प्रका वीर सेवा मन्दिर, दिल्ली
5. भक्तामर स्तोत्र, 7,
6. क्षत्रचूड़ामणि, 1.1.,2

में स्तुति आंशिक गुणानुवाद के रूप में प्रसिद्ध है। समन्तभद्राचार्य लिखते हैं-

गुणस्तोकं समुल्लंध्य तद्बहुत्वकथा स्तुतिः।

आनन्त्यास्ते गुणाः वक्तुमशक्यास्त्वयि सा कथम्।।[7]

इस प्रकार अनेक उद्धरण दिये जा सकते हैं जहाँ जैन परम्परा में स्तुति, भक्ति आदि की मौलिक विशेषतायें बतलाई गयी हैं।

स्तुतियों में वाहुवली

भगवान बाहुबली तथा विशेष रूप से विन्ध्यगिरि पर्वत पर विराजमान 57 फुट ऊँची उत्तुंग गोमटेश बाहुबली की प्रतिमा को लक्ष्य करके बहुत स्तुतियाँ लिखी गयी और वर्तमान में भी लिखी जा रहीं है। स्तुतियों को हम दो रूपों में देख सकते हैं एक स्वतंत्र कृति के रूप में और दूसरा विभिन्न साहित्य में बाहुबली चरित्र, कथानक आदि के वर्णन के समय उनके गुणानुवाद के रूप में।

जिनसेनाचार्य महापुराण के पर्व 16 में बाहुबली के नाम की सार्थकता सिद्ध करते हुए कहते हैं:

वाहु तस्य महावाहोरघातां वतर्मिजतम्।

यतो वाहुवलीत्यासीत् नामास्तय महसां निधेः।।

अर्थात् लम्बी भुजा वाले तेजस्वी उन बाहुबली की दोनों भुजाएँ उत्कृष्ट बल को धारण करती थीं। इसलिए उनका बाहुबली नाम सार्थक था।

आचार्य जिनसेन ने जो बाहुबली की स्तुति गायी है वह गोमटेश्वर महाभिषेक स्मरणिका (1981) में 9 छंदों में बाहुबली-स्तवनम् शीर्षक से प्रकाशित हैं। उसका पहला छंद हैं-

सकलनृपसमाजे दृष्टिमल्लाम्वुयुद्धै-

र्विजितभरत कीर्तिर्यः प्रवव्राज मुक्तयै।

तृणमिव विगणय्य प्राज्य साम्राज्यभारं,

चरमतनुधराणा मग्रणीः सोवताद् वः।।

अर्थात्-

सम्पूर्ण राजाओं की सभा में जिन्होंने दृष्टि, मल्ल ओर जलयुद्ध के द्वारा भरत की संपूर्ण कीर्ति जीत ली, विशाल राज्य के भार को जिन्होंने तृण जैसा तुच्छ समझकर मुक्ति की प्राप्ति के लिए दीक्षा धारण की, चरमशरीरियों में प्रमुख ऐसे भगवान बाहुबली तुम सबकी रक्षा करें। नौवें छंद में आचार्य जिनसेन उन्हें योगिराज की उपमा देते हुये लिखते हैं-

जगति जयिनमनें योगिनं योगिवर्ये-

रधिगतमहिमानं मनितं माननीयैः।

स्मरति रुदि नितान्तं यः स शान्तान्तरात्मा

भजति विजयलक्ष्मीमाशु जैनीमव्याम्।।

अर्थात्-जिन्होंने अन्तरंग बहिरंग, शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली है, श्रेष्ठयोगीजन ही जिनकी महिमा का पार पा सकते हैं और पूज्यों के भी पूजनीय हैं ऐसे इन परम योगिराज बाहुबली को जो प्राणी अपने मन में स्मरण करता है उसकी अन्तरात्मा शान्त, निर्मल हो जाती है और वह शीघ्र ही जिनेन्द्र भगवान की अजय्य विजयलक्ष्मी अर्थात् मुक्ति को पा जाता है।

आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती में प्राकृत भाषा में गोमटेस युदि की रचना 8 छंदों में की जो आज भी काफी प्रसिद्ध है तथा चारों तरफ गायी जाती है-

विसट्ट कंदोट्ट-दलाणुयारं,

सुलोयणं चंद-समाण-तुण्डं।

घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं,

तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

इस स्तुति का हिन्दी पद्यानुवाद कई लोगों ने किया है। सर्वप्रथम पद्यानुवाद लक्ष्मीचन्द्र जैन जी ने 1979, नाथूराम डोंगरीय 1979, पं. नीरज जैन 1980, आचार्य विद्यासागर जी 1980, तथा डॉ. नेमिचन्द्र जैन जी ने सन् 1981 में किया था। गोम्मटेस थुदि के विभिन्न पद्यानुवादों का एक सुन्दर संकलन सन् 1980 मे पं. कमलकुमार शास्त्री कुमुद और श्री फूलचन्द शास्त्री पुष्पेन्दु के सम्पादकत्व में कुन्थुसागर स्वाध्याय सदन, खुरई (सागर) से प्रकाशित हुआ था जिसमें अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ था। इसमें अनेक गद्यानुवाद एवं पद्यानुवाद प्रकाशित हैं।[8]

अपभ्रंश में स्तुति-

अपभ्रंश के कवि पुष्पदन्त में नामेयचरिउ जो कि उनके महापुराण का महत्त्वपूर्ण भाग है, में बाहुबली का आख्यान प्रस्तुत किया है। पुष्पदन्त का कवि हृदय ऋषभनाथ के समवशरण में बैठे हुए केवलज्ञानी बाहुबली की स्तुति करते हुये कहता है-

आसीणउ पसण्णु पसमियकलि।

देउ समाहि वोहि महु भुयवलि।।18/13।।

अर्थात्

प्रसन्न शांतपाप बैठे हुए बाहुबली मुझे समाधि और बोध प्रदान करें।[9]

मराठी में स्तुति-

गुणकीर्ति के गुरूबन्धु शान्तिदास के शिष्य मेघराज का एक छोटा सा मराठी गीत प्राप्त होता है जिसकी मुख्य पंक्ति है-

गोमटा नाव साजे तुला। प्रगटोनि बेलगुलि पंचमकाली।

चामुण्डराजा तारीला।

कारंजा के चिमना पंडित (1650-55)

की मराठी तीर्थवंदना में एक स्तुतिपरक श्लोक हैं-

उमा गोमट स्वामि तो पर्वताग्री,

महा दिव्य रुपाचि शोभा नखाग्री।

वेली पन्नगी वेष्टिले अंग त्याचे,

चिन्मय स्वरूप देवाधि देवाचे।।

7. स्वयंभूस्तोत्र

8. गोमटेश्वर महाभिषेक स्मरणिका, गोमटेशथुदि के हिन्दी अनुवाद-डॉ. नेमिचन्द जैन, पृ. 70

9. वही, अपभ्रंश काव्य और पुष्पदन्तकृत वाहुवली आख्यान-डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, पृ.75

इसमें बेली अर्थात् लताओं द्वारा और पन्नगी अर्थात् सर्पों द्वारा वेष्टित महामूर्ति के दिव्य रूप की शोभा की प्रशंसा स्पष्ट है।[10]

कन्नड़ में स्तुति-

सुप्रसिद्ध कन्नड़ कवि बोप्पण ने सन् 1180 में पांच छन्दों में गोम्मटजिन-स्तवन की रचना की है।[11] इस स्तुति का प्रथम छन्द इस प्रकार है-

अतितुङ्गकृतियादोडागददरोल्सौन्दर्य्य मौन्न व्युनं
नुत सौन्दर्य्यमुभागे मत्तिशयंरानगदौन्नत्यमुं।
नुत सौन्दर्य्यमुयूर्ज्जितातिशययुं तन्नल्लि निन्दिर्दु वें।
क्षिति सम्पूज्यमो गोम्मटेश्वरजिन श्री रूप मात्मोपमं।।

अर्थात्,

यदि कोई मूर्ति अति उन्नत (विशाल) हो, तो आवश्यक नहीं वह सुन्दर भी हो। यदि विशालता और सुन्दरता दोनों हों, तो आवश्यक नहीं उसमें अतिशय (दैवीय प्रभाव) भी हो। लेकिन गोम्मटेश्वर की इस मूर्ति में तीनों का सम्मिश्रण होने से छटा अपूर्व हो गई है।

इसी प्रकार उन्होंने यह भी लिखा कि पक्षी भूलकर भी इस मूर्ति के ऊपर नहीं उड़ते-यह भी इसकी दिव्यता का प्रमाण है।

संस्कृत में स्तुति-

आधुनिक काल में भी अनेक तरह की स्तुतियाँ और काव्य रचे गये हैं तथा निरन्तर रचे जा रहे हैं। श्वेताम्बर जैन तेरापंथ के यशस्वी आचार्य महाप्रज्ञ जी जब आचार्य तुलसी के साथ 15 मई, 1969 में श्रवणबेलगोला में गोमटेश के दर्शनार्थ पधारे तब उन्होंने गोमटेश के दर्शन के अनन्तर सद्यः संस्कृत में स्तुति करते हुये लिखा-

शक्तिः समस्ता त्रिगुणात्मिकेयं, प्रत्यक्षभूता परिपीयतेऽत्र।
स्फूर्त्ताः स्वभावाः सकलाश्च भावाः, मूर्त्ता इहैवात्र विलोक्यमानाः।।

(श्लोक-2, पृ. 176)

आज हम त्रिगुणात्मिका शक्ति-ज्ञान, दर्शन और पवित्रता का साक्षात् अनुभव करते हुए बाहुबली की इस विशालमूर्ति को आँखों से पी रहे हैं। यहाँ सारे स्वभाव और भाव मूर्ति हुये से लगते हैं।

इसी प्रकार भावसेन मुनीश्वर द्वारा विरचित कातन्त्रवृत्ति (निर्णय सागर प्रेस, वि.सं.1952) में स्तुति के तीन छंद उद्धृत हैं जिसमें पहला छंद है-

महामूर्तिश्शान्तेर्निखिलमहसां शाश्वतपद-
श्शरच्चन्द्रज्यो त्स्नाप्रकृतिविकृतिः कंजवदनः।
ज्वलच्छुक्लध्यानस्पुफरदमल शुक्ला ह्यमहा-
लसद्द्रव्याकारः स जयति गिरौ गोम्मटजिनः।।

अर्थात्,

जो शान्ति की परममूर्ति, समस्त प्रकाशपुंजों के शाश्वत अधिष्ठान अर्थात् परम तेजस्वी शरद पूर्णिमा की चन्द्रज्योत्सना को सहजता से तिरस्कृत कर देने वाले अर्थात् उससे भी अधिक मनोहर, नीलकमल के सदृश सुन्दर मुख्याकृति वाले प्रकाशमय ध्यान में विद्यमान होने के कारण निर्मलशुक्लध्यान नामक अति प्रकाशपूर्ण द्रव्य स्वरुप वाले हैं, वे गोम्मटजिनेश्वर भगवान पर्वत (कुक्कुटागिरि) पर सर्वोत्कृष्ट रुप में विद्यमान हैं।

इसी प्रकार गोम्मट-जिन-गुण स्तुति का एक छंद और प्राप्त होता है जिसके लेखन का पता नहीं चल पाया है-

मुकुरविमलगण्डं चन्द्रसंकाशतुण्डं,
गजरुरभुजदण्डं कामदाहाग्निकुण्डम्।
विनतमुनिपषण्डं गोमटेशप्रचण्डं,
गुणनिवहकरण्डं नौमि नामेयपिण्डम्।।

अर्थात्

दर्पण समान स्वच्छ कपोल से युक्त, चन्द्रोपम मुख से शोभित, गजशुण्ड-सदृश भुजदण्ड के धारी, कामदहन में अग्निकुण्ड-तुल्य, मुनिवृन्द से नमस्कृत, गोमटेश्वर (गोम्मटेश्वर) तथा गुणसमूह की मणि-मंजूषा तथा नामिराज-पुत्र, श्री वृषभनाथ के शक्ति-पिण्ड पुत्र बाहुबली को नमस्कार करता हूँ।

इस प्रकार अनेक स्तुतिपरक छंदों को खोजा जा सकता है।

हिन्दी में स्तुति-

आधुनिक युग में पूजा, विधान, स्तुति के रूप में अनेक रचनायें स्वतन्त्र रूप में हिन्दी में भी लिखी गयीं हैं जिन्हें पूजन की पुस्तकों में सहज देखा जा सकता है। सुप्रसिद्ध संगीतकार रवीन्द्र जैन का भजन बाहुबली भगवान का महामस्तकाभिषेक जन-जन के कण्ठों का हार बना हुआ है।

इसी प्रकार कविवर मिश्रीलाल जी ने अपने खण्ड काव्य गोम्मटेश्वर में बाहुबली की प्रतिमा के अप्रतिम सौन्दर्य पर मुग्ध होकर लिखा है[12]

प्रस्तर में इतना सौंदर्य
समा सकता है?
प्राण प्राण पुलकित हों पत्थर भी
ऐसा क्या गा सकता है?
वे आगे लिखते हैं-
कामदेव सा रूप
साधना वीतराग की
दो विरुद्ध आयाम
एक तट पर ठहरे हैं

इस प्रकार यहाँ संक्षेप में ही सही पर हमने देखा कि प्राचीन काल से आधुनिक काल तक गोम्मटेश स्तुति के विविध रूप विविध भाषाओं में हमें दिखायी देते हैं। इस विषय पर एक स्वतन्त्र लघु शोध प्रबन्ध भी लिखा जा सकता है।

10. वही, मराठी साहित्य में बाहुबली, डॉ. विद्याधर जोहरापुरकर, पृ.77
11. वही, पृ. 7 पर पूरी स्तुति प्रकाशित है।
12. गोम्मटेश्वर- मिश्रीलाल जैन, राहुल प्रकाशन, गुना (म.प्र.)

जैनगिरी (जटवाडा) भगवान बाहुबली प्रतिमा

-प्रा.डॉ. सुरेश शिवलाल शहा

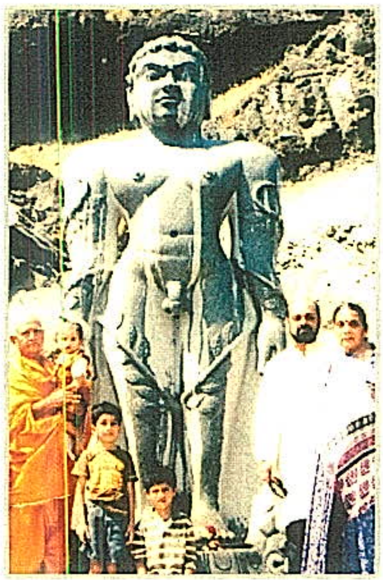

जैन तीर्थवंदना के जुलाई 2017 के अंक में ग्रॅनाईट में बनी श्रवणबेलगोला, कार्कल, वेणूर, धर्मस्थल, फिरोजाबाद के पाच प्रतिमाओं का फोटो सहीत वर्णन दिया है। ज्यादातर यह प्रतिमा राजा महाराजों ने या धर्मप्रेमी रईसों ने बनाई है। श्रवणबेलगोला बाहुबली जैसी प्रतिमा एक शिक्षिका प्राध्यापिका बालब्रम्हचारणी कु. विदयुलता शहा ने ग्रेनाईट में बनाई हैं। यह कल्पना से परे है। अपने पूरे जीवन की पूंजी, प्रॉव्हीडंट फंड, निवृत्ती वेतन लगाकर बनवाई है।

मेरी बहन विदयुलता शिवलाल शहा तुळजापूर 1951 में मिडल स्कुल की प्रधानाचार्य के नाते शासकीय सेवा में प्रविष्ट हो गई और 1984 बी.एड. कॉलेज से सेवामुक्त हो गई। 1953 में पहिली बार श्रवणबेलगोला की प्रतिमा देखते ही भाव विभूर हो गई। चामुंडराय कृत एकमेव अद्वितीय मूर्ति देखने बाद ही उनके मन में ऐसी मूर्ति में निर्माण कर सकती हुं क्या? ऐसी भावना उनके मन में जगी। मेरे जैसे सामान्य प्राध्यापिका से यह कैसा होगा? भाई लोगों ने कहा, परंतू उन्हें श्रवणबेलगोला जैसी मूर्ति (ग्रेईनाईट की) बनाने की तीव्र इच्छा थी। यह काम बहुत कठिन और राजा महाराजों का काम है, उन्हें शिल्पी रेंजाला गापाल शेणै द्वारा निर्मीत धर्मस्थल, फिरोजाबाद की मूर्ती की मालुमात हो गई। औरंगाबाद में मेरे घर आने के बाद हम जटवाड़ा जो हमारे घर से 15 कि.मी. है, दर्शन करने गए। मंदिर में महंमद तुघलक के जमाने की मूर्ति या जो जैन व्यापारी पंजाब, हरयाणा, दिल्ली से आए हुए अग्रवाल साहुजी समाज के लोगो ने प्रतिष्ठीत की थी। मंदीर के पिछे बहुत सुंदर पहाड़ी है, मैनेजर ने कहाँ की वे पहाडी पर मूर्ति की स्थापना करवाना चाहते हैं। जटवाडा के वार्षिक समारोह में ब्र. विदयुलताजी को आमंत्रित किया। हजारो लोगों के उपस्थिति में घोषित किया की ग्रॅनाईट की भगवान बाहुबली की मूर्ति कार्कल में बनाऊंगी, और मूर्ति स्थापना की जिम्मेदारी विशवस्तों की रहेगी। और मेरी एक चाहत है को मेरे भाई और भाभियों को प्रथम अभिषेक का सम्मान मिले। उसी सभा में महिलाओं से प्रार्थना की भगवान गोमटेश्वर का निर्माण एक महिलाने किया (चामुंडराय की माँ) तो आप गुल्लिका यज्जी और यक्षों का निर्माण करवाना। उसी सभा में महिला मंडल की अध्यक्षा अंजनादेवी अजमेरा ने महिला मंडल की ओर से जिम्मेदारी ली। तब से जटवाड़ा के पहाड़ो पर बाहुबली की मुर्ति प्रस्थापित करने की आस लग गई।

एक रात विद्युल्लता जी के सपने में पहाड़ पर मुर्ति स्थापन हुई है, और पहाड तले श्रवणबेलगोल जैसा साफसुथरा तालाब है। दूसरे दिन जटवाड़ा के महामंत्री देवेंद्र काला और विश्वस्त मिलने आए और कामकाज कब तक पुरा होगा पुछकर शासन की तरफ से सामाजिक वनीकरण में तालाब की भी योजना है, ऐसा बताया। विद्युलता जी के संकल्प के बावजूद मुर्ति बनाने का क्रयादेश 1993 में संभव हुआ। बाहुबली के परमभक्त पद्मभूषण विरेन्द्रजी हेग्गडे उनकी माताजी और धर्मपत्नी ने पुरी मदत करने का वादा किया। निर्माण कार्य में विदयुलताजी भाई जयकुमार शहा, निवृत्ती कार्यकारी अभियंता, पत्नी सौ. सुलोचना रत्नकुमार शहा, जीवनबीमा के उच्चाधिकारी पत्नी सौ. सुरेखा शहा, प्रा. डॉ. सुरेश शहा पत्नी सौ. सुजाता शहा, प्रताप शहा (ठेकेदार) पत्नी सौ. सुनिता शहा इन सब ने कड़ी मेहनत की, इनके बेटे-बेटीओं ने भी पुरा सहयोग दिया। खासतौरपर बंधु जयकुमार जी और भाभी सुलोचना जी ने बहुत परिश्रम किये। साल में दो-दो, तीन-तीन महीने वहाँ रहकर ग्रेनाईट पत्थर को खदान से निकालना उसे कार्कल में ट्रक से लाना, और मंगल पादे कार्यशाला में लाना, यह शुरु में काम किया। बारिश में चार-चार महिने काम नहीं होता था। मूर्ति निर्माण में उनके जिवन के सात-सात गुजर गए। काम पूरा होने आया और श्री जयकुमारजी का निधन अनंतचतुर्दशी के पावन दिन पे हो गया (2000)/14.12.2000 में मूर्ति निर्माता विदयुलताजी शहा, भाई रत्नकुमार और भाभी सुरेखा शहा मूर्ति प्रकल्प पुरा होने पर पद्मभुषण विरेंद्र जी हेगडे की अध्यक्षता में कार्कल भट्टारक मुडबिदी भट्टारक ललीत किर्ती और देवेंद्र किर्ती के उपस्थिती में बड़ा समारोह हुआ। और उसी महिने में श्री. राजेन्द्रजी तरटे अपनी ट्रक से मूर्ती कार्कल से औरंगाबाद-जटवाड़ा में 24 घंटे में लेकर आए। जटवाड़ा पर विश्वस्तोंने (अध्यक्ष) सुरेंद्र साहुजी ने स्वागत किया चार साल मूर्ति मंदीर के पिछे सुरक्षित रख दी। 2002 में बहन विदयुलताजी का स्वर्गवास हो गया। सब भाई, बहनो को बहुत दु:ख हुआ।

सन 2004 में प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनंदजी ससंघ चातुर्मास करने के लिए औरंगाबाद आगए। मूर्ति आने के बाद विश्वस्तों की पुरी जिम्मेदारी थी। महाराजजी के आग्रह पर मूर्ति करविता विदयुलताजी चारों भाईयों ने और योगदान देने का वादा किया। आचार्य देवनंदीजी ने 13 से 18 नोव्हेंबर में मूर्ति प्रतिष्ठा, देवनंदी सभागृह, चौबीस तीर्थंकरों की मुर्ति को विराजमान बड़े ही थाट-बाट से किया। महाराज जी के कने पर कई लोगों ने पहाड़ पर मूर्ति तक जाने के लिए रस्ता बनाने से योगदान दिया। कोई पैसा न लेते हुए। लेखक प्रा. सुरेश शहा और धर्मपत्नी सौ. सुजाता जी का ब्र. विदयुलताजी के इच्छानुसार इंद्र-इद्रांणी बनाया गया। मुर्ती प्रतिष्ठा में महाराजजी ने कडी मेहनत ली और ब्र. विदयुलताजी को दिया हुआ वचन पूरा किया। यथासमय बाद शिल्पी राधामाधव शेणै ने गुल्लिका यज्जी और दो यक्ष तैयार है ऐसा संदेस भोजा। जैन महिला मंडल, औरंगाबाद की तरफ से महामंत्री देवेंद्र काला, अध्यक्ष सुरेंद्र साहुजी ग्यानचंदजी अजमेरा, लेखक प्रा. सुरेस शहा ने वह मुर्ति कार्कल से औरंगाबाद लाई। जिसका कल्याणक 2004 में हुआ। पत्थर के चुनाव से मुर्ति की स्थापना तक 11 साल लग गए।

श्रवण बेलगोला बाहुबली प्रतिमा के पंचमाश आकार की मूर्ति बनवाई गई।

मूर्ति की विशषता-

स्थान जैन गिरी (जटवाड़ा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र)

मूर्ति की उंचाई- 11.5 (साडे ग्यारह फीट)

मूर्ति के नीचे पदमकमल- 1/2 फीट

मूर्ति का वजन-12 टन

धन्य है ब्र. विद्युलताजी जिन्होंने यह मूर्ति अपने इच्छा के बल पे बनाई।

बाहुबली महामस्तकाभिषेक : सौभाग्य बुला रहा है!

–डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

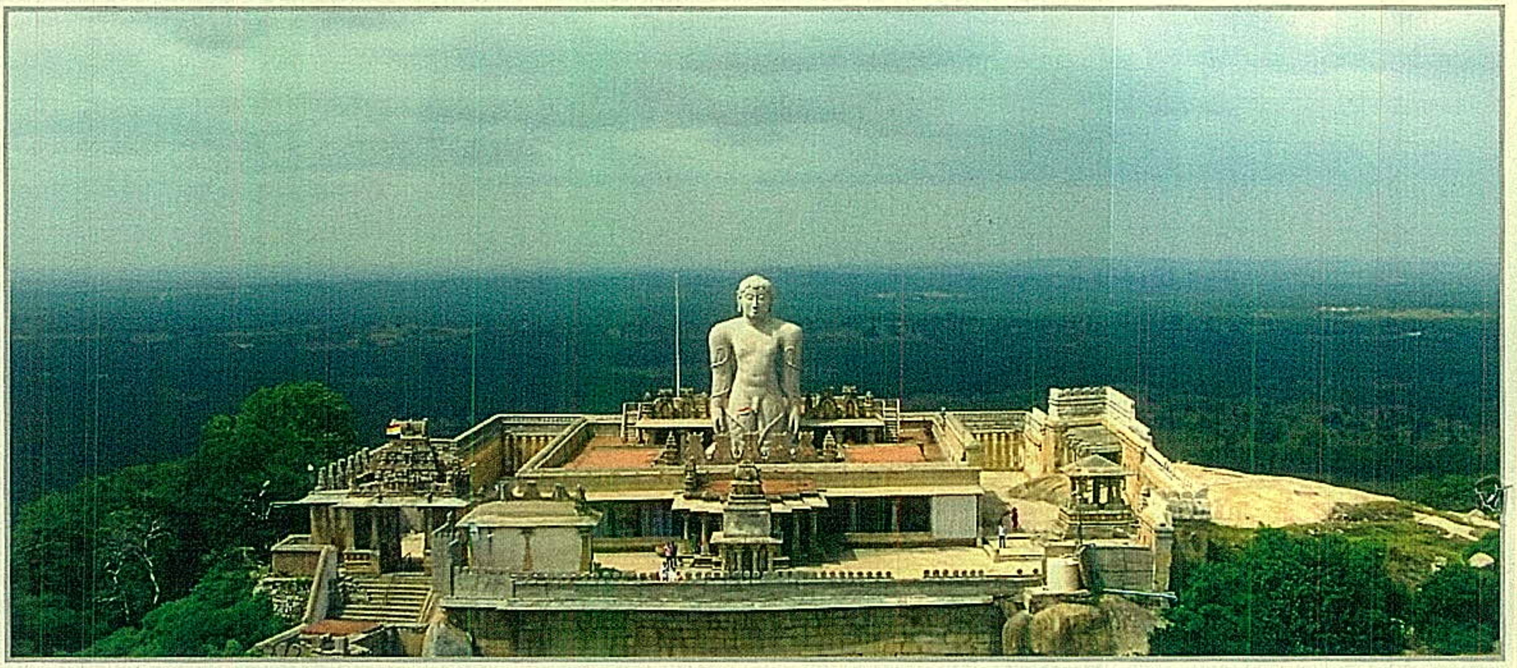

('सौभाग्य आपको बुला रहा है', 12 वर्ष का लंबा इंतजार, बस अब चंद दिनों का मेहमान है। फरवरी 2018 में जैन समुदाय को गोमटेश्वर बाहुबली जी के महामस्तकाभिषेक का पुण्यदायी मौका कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में मिलने जा रहा है। ऐसा अनुमान है इस उत्सव में देश–विदेश से 80 लाख से अधिक श्रद्धालु भाग लेगे। इसकी तैयारियां बड़े ही युद्ध स्तर पर अंतिम पड़ाव पर हैं। श्रवणबेलगोला, बाहुबली और महामस्तकाभिषेक की पूरी जानकारी अपने प्रासंगिक आलेख में दे रहे हैं श्रवणबेलगोला से हाल ही में लौटकर आये डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर... ।)

कर्नाटक प्रान्त के हासन जिले में विश्व प्रसिद्ध गोमटेश्वर बाहुबली की 57 फुट उत्तुंग प्रतिमा का प्रत्येक बारह वर्ष में होने वाला महामस्तकाभिषेक के अब चंद दिन बाकी हैं, यह महामहोत्सव फरवरी में 17 से 25 तक होगा। सभी इस उत्सव के साक्षी बनना चाहते हैं। केन्द्र व राज्य सरकार भी इस उत्सव को महामहोत्सव के रूप में मनाने के लिए पूरी तत्परता दिखा रही है।

श्रवणबेलगोला जैनों का अति प्राचीन और परम पावन तीर्थ है। जैन इतिहास में इसका विशिष्ट स्थान है। उत्तरवासी इसे जैनबद्री कहते हैं। एक हजार साल से भी अधिक वर्ष पूर्व चामुण्डराय ने आचार्य श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती के सान्निध्य में विन्ध्यगिरि पर्वत पर भगवान बाहुबली की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी। यह मूर्ति 57 फुट ऊंची उत्तरमुखी, खड़गासन, संसार की अनुपम अद्वितीय एवं अतिशय सम्पन्न विशाल प्रतिमा है। जिसे दुनिया का आठवां आश्चर्य के नाम से भी जाना जाता है। इस भव्य, दिव्य, मनोरम, दर्शनीय , अलौकिक प्रतिमा का 12 सालों के अंतराल में महामस्तकाभिषेक होता है। श्रवणबेलगोला में स्थित इस प्रतिमा का निर्माण 10वीं शताब्दी में किया गया था। महामस्तकाभिषेक में लगभग सभी काल के तत्कालीन राजाओं और महाराजाओं ने भाग लिया है और अपनी अहम भूमिका भी निभायी है। वर्तमान में भी प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति इस आयोजन में अपना अर्घ्य समर्पित करने श्रवणबेलगोला पहुंचते रहे हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू जी जब देश के प्रधानमंत्री थे तब उन्होंने भी श्रवणबेलगोला का दौरा श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के साथ किया था। गोमटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा को देखते हुए उन्होंने कहा था कि इसे देखने के लिए आपको मस्तक झुकाना नहीं पड़ता है, मस्तक खुद–ब–खुद झुक जाता है। प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी आत्मकथा में डॉ. शंकर दयाल शर्मा, डॉ ए0पी0 जे0 अब्दुल कलाम आदि ने बाहुबली के चरणों में पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये हैं।

श्रवणबेलगोला की ऐतिहासिकता और आध्यात्मिकता :

श्रवणबेलगोला की ऐतिहासिकता और आध्यात्मिकता अनूठी है, जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है। अगर किसी व्यक्ति को इतिहास में दिलचस्पी है तो श्रवणबेलगोला

उसकी चाहत को और अधिक बढ़ा सकता है। श्रवणबेलगोला में जहां गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान की विश्व प्रसिद्ध प्रतिमा है, जो जैन समुदाय की आस्था का केन्द्र तो है ही साथ ही दूसरे लोगों के लिए भी एक शिला खण्ड पर उकेरी गयी यह विशाल प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र है, देश–विदेश के हजारों लोग जब इस प्रतिमा को देखते हैं तो देखते ही रह जाते हैं। यहां चंद्रगिरि पर्वत पर मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य और उनके गुरू भद्रबाहु स्वामी की समाधि और प्राचीन गुफा भी है। दरअसल, नंद वंश का विनाश कर चंद्रगुप्त ने चाणक्य की सहायता से मौर्य वंश की स्थापना लगभग 320 ईसा पूर्व में की थी। अपने 22 वर्ष के शासन के बाद उन्होनें अपना साम्राज्य पुत्र बिन्दुसार को सौप दिया और जैन संत भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला आ गए। यहां आकर तपस्या करते हुए उन्होंने समाधि पूर्वक देह त्याग किया। उन दोनों की याद में मंदिर का निर्माण आज से लगभग 2300 साल पहले किया गया था जो आज भी अपनी सम्पूर्ण उपस्थिति दर्ज करा रहा है। इसके अलावा महान सम्राट अशोक जो चंद्रगुप्त मौर्य के पौत्र थे, उन्होंने भी जब श्रवणबेलगोला की यात्रा की तो अपने दादा की याद में एक मंदिर का निर्माण कराया। अब भी वह मंदिर मौजूद है। इन सबके अलावा काफी संख्या में शिलालेख और स्तंभलेख यहां मौजूद हैं जो अमूमन 9वीं से 12वीं शताब्दी के हैं। यहां लगभग 580 शिलालेख जैनों की गौरव गाथा का उल्लेख करते हैं। पूज्य जगतगुरू स्वस्ति श्री चारूकीर्ति जी स्वामी का निवास जैन मठ में है। विन्ध्यगिरि पर्वत समुद्र तल से 3500 फीट ऊंचा है। तलहटी में कल्याणी सरोवर के निकट से 644 सीढियां हैं। चंद्रगिरि पर्वत समुद्र तल से 3100 फीट ऊंचा तथा नीचे के मैदान से 175 फीट की ऊंचाई पर है। चढ़ने की सीढ़ियां 200 हैं। शिलालेखों से विदित होता है कि ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक यह क्षेत्र अनेक जैन साधकों की साधना एवं मोक्ष स्थली रहा है। गंग और होयसल वंश के राजाओं ने जैन धर्म के विभिन्न तीर्थंकरों के लिए यहां कई मंदिरों का निर्माण कराया था, जो आज भी अपनी दर्शनीय छटा से सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। श्रवणबेलगोला के दोनों ओर दो मनोहर पर्वत विन्ध्यगिरि और चंद्रगिरि को देखकर मन हर्शित हो उठता है, दोनों पर्वतों की ऐतिहासिकता और रमणीयता देखकर हृद्रय प्रफुल्लित हो उठता है।

श्रवणबेलगोला तीर्थ क्यों है प्रसिद्ध :

श्रवणबेलगोल शब्द श्रवण+ बेल+ गोला, इन तीन शब्दों के संयोग से बना है। श्रवण–श्रमण, बेल–श्वेत, उज्जवल, गोल–सरोवर अर्थात् जैन साधुओं का धवल सरोवर। भगवान बाहुबली की इतनी विशाल प्रतिमा जो विन्ध्यगिरि पर्वत को काटकर बनायी गयी है, कही दूसरी जगह देखने नहीं मिलती है। इसका निर्माण वर्ष 981 में हुआ था। उस समय कर्नाटक में गंग वंश का शासन था, गंग के सेनापति चामुंडराय ने इसका निर्माण कराया था। विन्ध्यगिरि के सामने ही चंद्रगिरि पर्वत है। इतिहासकार ऐसा मानते हैं कि चंद्रगिरि का नाम मगध में मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य के नाम पर पड़ा है। भगवान बाहुबली की यह मूर्ति सफेद ग्रेनाइट के एक ही पत्थर से काटकर बनाया गयी है। मूर्ति एक कमल पर खड़ी है। यह जांघों तक बिना किसी सहारे के खड़ी है। विन्ध्यगिरि पर स्थित यह मूर्ति 30 किलोमीटर दूर से भी दिखाई देती है। इस प्रतिमा के बारे में मान्यता है कि इस मूर्ति में शक्ति, साधुत्व, बल तथा उदारवादी भावनाओं का अद्‌भुत प्रदर्शन होता है।

आखिर कौन थे भगवान बाहुबली :

भगवान बाहुबली असि, मसि, कृषि, शिल्प , विद्या, वाणिज्य इन षट् विद्याओं के प्रणेता जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र थे। इनके दूसरे पुत्र का नाम था भरत, अनेक तथ्यों और प्रमाणों से सिद्ध हुआ है कि इन्हीं भरत के नाम से हमारे देश का नाम भारत पड़ा था। राज्य सत्ता के लिए भरत और बाहुबली दोनों भाईयों में अहिंसक युद्ध हुआ। बाहुबली की विजय हुई परंतु उन्होंने सम्पूर्ण राज्य अपने भाई भरत को सौप दिया तथा स्वयं संन्यास धारण कर तप करके मोक्ष को प्राप्त किया। जैनधर्म में भगवान बाहुबली को प्रथम मोक्षगामी माना जाता है। भगवान बाहुबली ने इंसान के आध्यात्मिक उत्थान, मानसिक शांति और सुखमय जीवन के लिए अहिंसा से सुख, त्याग से शांति, मैत्री से प्रगति और ध्यान से सिद्धि का पावन संदेश दिया। उन्होंने सम्पूर्ण राज–पाट त्यागकर संदेश दिया कि यह वसुधा किसी की नहीं हुयी है। अन्ततः सबको छोड़ना ही पड़ती है।

तैयारी आस्था के महामस्तकाभिषेक की :

12 वर्ष के अंतराल में होने वाले भगवान बाहुबली के 17 से 25 फरवरी 2018 तक महामस्तकाभिषेक की तैयारियां पूरी कर ली गयी हैं। इस प्रसंग पर श्रवणबेलगोला में अनेक राष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजनों से देश–विदेश में इस महा आयोजन की गूंज सुनायी दे रही है। इन दिनों चारों ओर जैन समुदाय में एक ही सूत्र वाक्य गुन्जायमान हो रहा है–'सौभाग्य आपको बुला रहा है।' आयोजन को सफल बनाने के लिए केन्द्र सरकार और राज्य सरकार भी पूरी मुस्तैदी के साथ जुटी हुयी है।

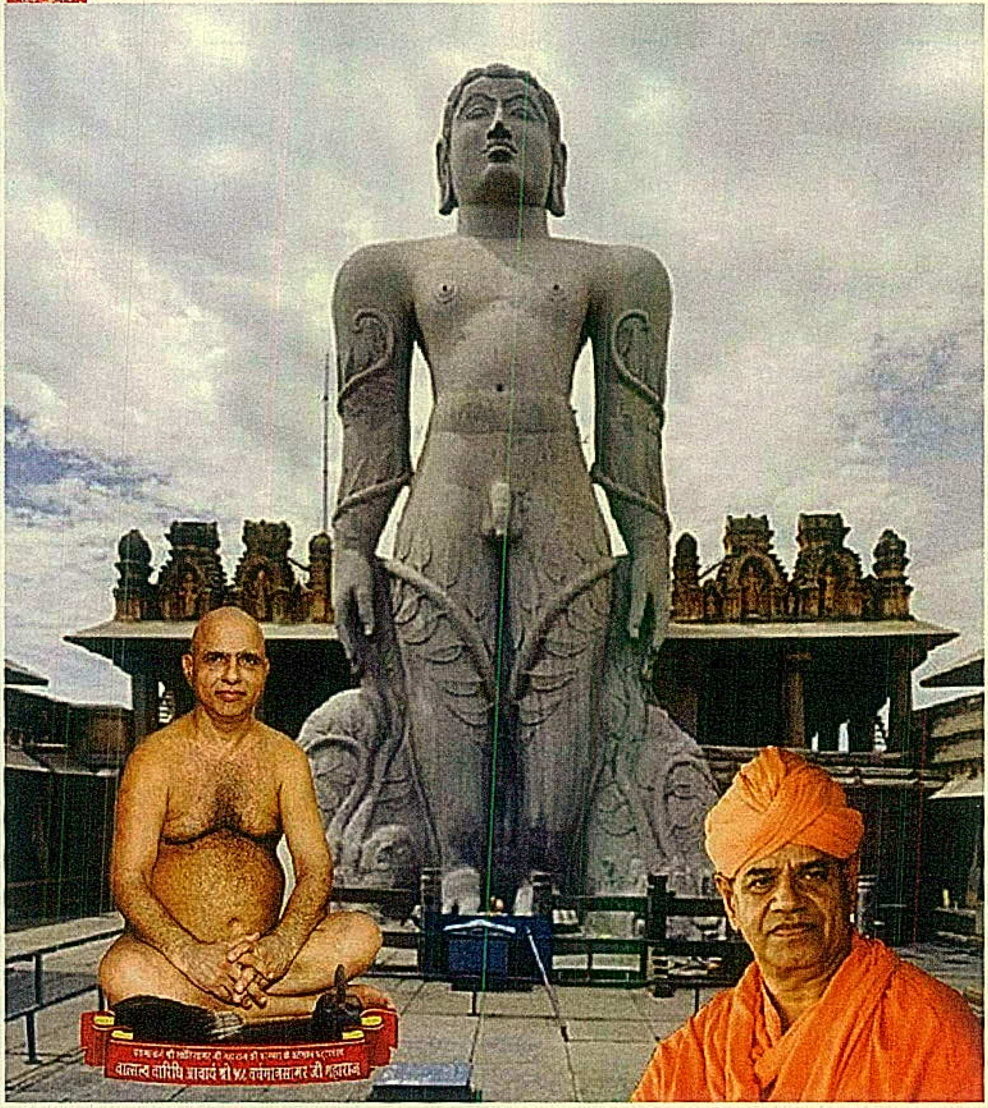

महामस्तकाभिषेक के लिए इस बार जर्मन तकनीक से चार मंजिला मंच 12करोड़ की लागत से बनाया है। जिसका मैने खुद श्रवणबेलगोला की यात्रा पर जायजा लिया। दो लिफ्ट लगायी गयी हैं। एक समय में 30 हजार लोगों के लिए आवास व्यवस्था का समुचित प्रबंध किया गया है। दो लाख से अधिक लोगों के चंद्रगिरि पर्वत पर दर्शन व्यवस्था की गई है। पहाड़ी पर एलईडी स्क्रीन और दूरबीन की व्यवस्था भी रहेगी। आयोजन की व्यवस्थाओं के अंजाम देने के लिए 36 समितिया बनाई गयी हैं। महामस्तकाभिषेक में देश–विदेश से 80 लाख से अधिक लोगों के पधारने की उम्मीद है। पहले 20 दिनों में 35 लाख और बाद में 6 महीनों में करीब 45 लाख लोग आयेंगे।

चप्पे–चप्पे पर होगी सुरक्षा व्यवस्था :

महामस्तकाभिषेक की सुरक्षा व्यवस्था चाक–चौबंद रहेगी। राज्य सरकार की ओर से इसके लिए विशेष व्यवस्था की गई है। 8 हजार सुरक्षा कर्मियों की तैनाती इस दौरान रहेगी, जो पूरे महोत्सव की सुरक्षा व्यवस्था में जुटे रहेगें।

भोजन–आवास का समुचित प्रबंध :

प्रतिदिन एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं के सुस्वादु भोजन की व्यवस्था 17 भोजनशालाओं के माध्यम से की जायेगी। अलग–अलग राज्यों के स्वादानुसार भोजन व नाश्ते की शानदार व्यवस्था रहेगी। सभी को निशुल्क भोजन रहेगा। आवास के लिए 11 नगर बसाये गये हैं। सभी के लिए अलग–अलग व्यवस्था रहेगी। एक साथ 30 हजार लोग रूक सकेंगें। 80 फीट का रोड, सारी सुविधाएं–लेट बाथ आदि आधुनिकतम समस्त सुविधाएं कांटेज में दी जावेगी। सभी के लिए सर्वसुविधायुक्त आवास की समुचित व्यवस्थाएं की गई हैं।

होगा संतों का महासंगम :

इस विशाल आयोजन में जैन संतों का महासंगम भी देखने को मिलेगा। जहां परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज ससंघ महामस्तकाभिषेक में तीसरी बार अपना सान्निध्य प्रदान करने श्रवणबेलगोला पहुंच गये हैं वहीं 185 साधु–संत भी इस आयोजन के लिए पहुंच चुके हैं। बताया गया है इस आयोजन में 30 जैनाचार्यों के साथ 400 पिच्छीधारी जैन साधुओं व हजारों त्यागीजनों के सम्मलित होने की संभावना है। महोत्सव स्थल पर त्यागी नगर का निर्माण भी हो चुका है। सम्पूर्ण देश से दिगम्बर जैन साधु सैकड़ों किलोमीटर का पद विहार कर श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक का साक्षी बनने के लिए पहुंच रहे हैं।

ऐसे पहुंचे श्रवणबेलगोला :

यह तीर्थ कर्नाटक राज्य के हासन जिले के चेनरायपटटन तहसील के अंतर्गत आता है। श्रवणबेलगोला बेंगलोर से 140 किलोमीटर, मैसूर से 89 किलोमीटर, हासन से 50 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। नजदीकी एयरपोर्ट बैंगलूर है। दिल्ली से बेंगलूर 2 घंटे 50 मिनट की उड़ान के बाद पहुंचेगे। ट्रेन के माध्यम से भी पहुंचा जा सकता है। महामस्तकाभिषेक को ध्यान में रखते हुए अब यशवंतपुर से श्रवणबेलगोला के लिए ट्रेन सुविधा भी चालू हो गयी है। जिसका लाभ भी ले सकते हैं। बैंगलूर से बस और कैब से भी श्रवणबेलगोला पहुंचा जा सकता है।

ऐसे होगा महामस्तकाभिषेक :

गोमटेश्वर बाहुबली भगवान का 17 से 26 फरवरी 2018 तक जो विशेष अभिषेक होगा , जिसके लिए कलशों की बुकिंग चल रही है। प्रतिदिन 1008 शुद्ध जल से भरित कलशों से अभिषेक होगा। कुल 9 दिनों तक महामस्तकाभिषेक में नारियल पानी, गन्ने का रस, दूध, श्रीगंध–चंदन, अष्टगंध, पुष्पवृष्टि आदि से महामस्तकाभिषेक संपन्न होगा, जिसकी साक्षी लाखों आंखें बनने को आतुर हैं। महामस्तकाभिषेक में कलश बुकिंग के लिए दी गयी राशि पर 80जी के तहत आयकर में छूट पा सकते हैं।

अन्य लोगों के लिए भी है आकर्षण का केन्द्र :

आस्था के इस महामस्तकाभिषेक का महत्व केवल जैन समुदाय तक सीमित नहीं है बल्कि जैनेतर समुदाय के लिए भी यह महामहोत्सव आकर्षण का केन्द्र रहता है, यही वजह है कि इसे देखने के लिए हजारों की संख्या में जैनेतर समुदाय भी उमड़ पड़ता है। बाहुबली की विशाल ऐतिहासिक और आध्यात्मिक प्रतिमा, चंद्रगिरि पर चंद्रगुप्त मौर्य और भद्रबाहु की समाधि और प्राचीन गुफाएं ऐसी जगहे हैं जो अन्य समुदाय के लोगों के लिए भी खूब आकर्षित करते हैं।

देश–विदेश की मीडिया का होगा जमावड़ा :

इस महामहोत्सव की कवरेज के लिए विदेशों से भी मीडिया का जमावड़ा बड़ी संख्या में देखा जाता है, यही वजह है इस बार आयोजन समिति ने पत्रकार नगर बनाया है जिसमें एक हजार मीडिया कर्मियों के लिए आवास–भोजन की व्यवस्था रहेगी।

राजनैतिक हस्तियां भी बनेगी महोत्सव की साक्षी :

भगवान बाहुबली की इस अद्भुत, अलौकिक प्रतिमा के 12 वर्ष के अंतराल में होने जा रहे महामस्तकाभिषेक के महामहोत्सव का साक्षी आखिर कौन नहीं बनना चाहेगा। प्रत्येक महामस्तकाभिषेक में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति के आने की परंपरा रही है। 2006 में आयोजित महामस्तकाभिषेक का उदघाटन जहां तत्कालीन राष्ट्रपति डा0 अब्दुल कलाम ने किया था तथा उपराष्ट्रपति भेरोसिंह शेखावत भी अपना अर्घ्य समर्पित करने पहुंचे थे, तो इस बार भी महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी को आयोजन समिति आमंत्रण पत्र सौप चुकी है। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री समेत तमाम राजनैतिक हस्तियां इस आयोजन की साक्षी बनेंगी। पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच. डी. देवगौडा व कर्नाटक के मुख्यमंत्री स्वयं उपस्थित होकर पूरे आयोजन पर सीधी नजर बनाये हुए हैं।

सुख–शांति का कारण बनें महामस्तकाभिषेक :

महामस्तकाभिषेक में तीसरी बार सान्निध्य प्रदान कर रहे वात्सल्य वारिधि, परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज का कहना है कि 'अहिंसा से सुख और त्याग से शांति' भगवान बाहुबली के इस परम संदेश से समग्र विश्व का वातावरण परिवर्तित हो सकता है। हर बार की तरह 2018 के फरवरी माह में सम्पन्न होने वाला महामस्तकाभिषेक महोत्सव सम्पूर्ण जगत के लिए सुख–शांति और उन्नति का कारण बनें।

शांति की राह दिखाते हैं भगवान बाहुबली :

महामस्तकाभिषेक का यह पूरा आयोजन श्रवणबेलगोला के भट्टारक, जगत पूज्य स्वस्तिश्री चारुकीर्ति जी स्वामी के नेतृत्व में उन्हीं की देख–रेख में संपन्न हो रहा है। इस आयोजन के बारे में उन्होंने कहा है कि गोमटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा विशाल, विलक्षण और अद्भुत है। हमें यह प्रतिमा शांति की राह दिखाती है। भगवान बाहुबली के वचनों को यदि लोग आत्मसात कर लें तो पूरी दुनिया में शांति स्थापित हो जाएगी। आज के अशांत वातावरण में भगवान बाहुबली हमें शांति के पथ पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

तो चलें, हम भी ऐसे महामहोत्सव के साक्षी बनने के लिए तैयार हो जाय। महामस्तकाभिषेक के अलौकिक क्षण का साक्षी बन श्रवणबेलगोला विश्वतीर्थ पर आयोजित इस अनुपम आयोजन में अपनी श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित करें।

'विसट्ट–कंदोट्ट–दलाणुयां,
सुलोयणं चंद–समाण–तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय–पुप्फसोहं,
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं।।

★★★★

घोषणा पत्र

प्रकाशन अवधि	: मासिक
प्रकाशक/मुद्रक/संपादक	: उमानाथ रामअजोर दुबे
राष्ट्रीयता	: भारतीय
मालिक	: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004

द्वारा त्रिमूर्ति प्रिंटर्स, 5 वी.पी.रोड, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004 से मुद्रित कर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई- 400 004 से प्रकाशित.

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है.

- उमानाथ रामअजोर दुबे, संपादक

महोत्सव के लिए हो रहीं भव्य तैयारियाँ

डॉ.सुशीला सालगिया

सौभाग्य आपको बुला रहा है। कर्नाटक की भूमि आपके आगमन की बाट जोह रही है। श्रवणबेलगोल का कण-कण उल्लसित है। पवन की सरसराहट में भी मानों अतिथि देवो भव की ध्वनि गुंजित हो रही है। पूरे बारह वर्ष पश्चात् हो रहे इस जैन महाकुम्भ में पहुँचने वाला प्रत्येक दर्शनार्थी तो भाग्यशाली होगा ही पर महाभाग्यशाली होगा वह जिसे कलशाभिषेक का लाभ प्राप्त होगा।

आज नई पीढ़ी के बच्चों को तो इस बात का विश्वास कराना भी मुश्किल है कि अपनी माता काललदेवी की अभिलाषा को पूर्ण करने के निमित्त से सेनापति चामुण्डराय ने ५७ फुट उत्तुंग विश्व विख्यात भगवान बाहुबली की भव्य प्रतिमा का निर्माण करवाया। अपने गुरु आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती के निर्देशन में पहाड़ को तराश कर ग्रेनाइट पाषाण की यह प्रतिमा जिसके दर्शन १५-१६ कि.मी. दूर से ही होने लगते हैं, शिल्पकला का उत्कृष्टतम स्वरूप है। इसे निहारते हुए नयन थकते नहीं और हटाये हटते नहीं।

अहिंसा, त्याग और तपस्या का संदेश देती अतिशयकारी मूर्ति

इसे मूर्ति का अतिशय ही मानना होगा कि यहाँ एक बार आने के बाद बार-बार आकर मूर्ति के दर्शन करने का मन होता है। वैसे भी यह आश्चर्यजनक सत्य है कि खुले आकाश में निर्मित इस भव्य प्रतिमा पर पक्षी कभी बैठते नहीं और बीट भी नहीं करते। वैसे मूर्ति का अतिशय तो इसके निर्माणकाल से ही दृष्टिगोचर हो गया था। हुआ यह था कि पहाड़ से मूर्ति का आकार बन जाने के बाद उसके अंगोपांग को तराशने पर जितना पाषाण खिरेगा, उसकी तौल के बराबर स्वर्ण शिल्पकार को मूल्य के रूप में सेनापति की ओर से दिया जाएगा। शिल्पज्ञ के श्रम का मूल्य इस तरह आँका गया था, जिसे प्राप्त कर वह बहुत प्रसन्न था। परंतु जब मूर्ति निर्माण अंतिम चरण में था, तब शिल्पकार को स्वर्ण कम मात्रा में मिलने लगा। जिसके कारण से उत्पन्न खिन्नता को शिल्पकार की माता ने अनुभव करके पुत्र के मन में हुए लालच को त्यागने की समझाइश दी। बेटे को समझाते हुए बोलीं, भगवान बाहुबली ने राज्य वैभव, सुख भोग सबका त्याग कर दिया था, उन्हीं बाहुबली की यह मूर्ति पाषाण त्याग रही है, और तुम्हें अधिक सोना प्राप्त नहीं हो रहा है, यह दुख और लोभ है। तुम स्वर्ण मोह और लोभ का त्याग करो। निर्लोभी होकर मूर्ति को पूर्ण रूप दो। माता के संबोधन से शिल्पकार ने लोभ का त्याग किया तभी शीघ्र ही मूर्ति का पूर्ण सौम्य स्वरूप निखर आया। जिस अहिंसक युद्ध करने वाले, राज्य के निर्लोभी, त्यागी और महान तपस्वी बाहुबली की मूर्ति का निर्माण करना था, तो निर्माता ने भी लोभ त्यागा और इतने मनोयोग से मूर्ति बनाई कि बिना नमक का भोजन भी दिया गया तो उसे स्वाद का भान ही नहीं, वह तो बेभान था। सब स्वादों से परे होकर एक ही स्वाद, एक ही रस, मूर्ति पूर्ण हो जाए बस। एक और अतिशय पंचकल्याणक होने के पश्चात् जब मार्च माह, ईसवी सन् ९८१ में प्रथम बार अभिषेक का आयोजन किया गया तब हुआ। सैकड़ों स्वर्ण और रजत कलशों से स्वयं चामुण्डराय सहित परिजनों और समाज के श्रेष्ठीजनों ने दुग्ध और नीर से अभिषेक किया पर वह अपूर्ण ही रहा। दूध की धारा मूर्ति की नाभि से नीचे आती ही नहीं थी। तभी एक वृद्धा अज्जी छोटी सी गुल्लिका में दूध लेकर आई, बड़ी मिन्नतों के पश्चात् उसे अभिषेक करने का अवसर दिया गया और दूध बाहुबली के चरणों का प्रक्षाल करते हुए पर्वत पार कर सरोवर तक पहुँच गया और धवल सरोवर का निर्माण हो गया। इस घटना के बाद सेनापति चामुण्डराय ने यह अनुभव किया कि मुझे मूर्ति निर्माता होने का संभवतः अभिमान हुआ है। मेरे स्वर्ण और रजत कलश अज्जी की गुल्लिका के आगे तुच्छ हैं। ऐसे चामुण्डराय ने मान का त्याग किया और अज्जी को सम्मान देते हुए उनकी मूर्ति पहाड़ पर स्थापित करवाई। बाल्यावस्था में चामुण्डराय को गोम्मट नाम से पुकारा जाता था, अतः गोम्मट के ईश गोमटेश या गोमटेश्वर बाहुबली नाम से यह मूर्ति प्रख्यात हुई। स्वामीजी के निर्देशन में हो रहा चौथा मस्तकाभिषेक महोत्सव प्रति बारह वर्ष के अंतराल से हो रहे मस्तकाभिषेक की कड़ी में ८८वाँ तथा यह इस सदी का दूसरा महोत्सव है। जो ७ फरवरी से २५ फरवरी २०१८ तक होगा। महोत्सव की प्रारंभिक धार्मिक क्रियाओं तथा पंचकल्याणक के पश्चात् १७ फरवरी से २५ फरवरी तक मुख्य पंचामृत अभिषेक होंगे। पश्चात् ६ माह तक मचान रहेगा और श्रद्धालुओं को कलश करने का लाभ मिलता रहेगा। इस महोत्सव की संपूर्ण परिकल्पना को भव्यता प्रदान करने वाले भट्टारक स्वस्तिश्री चारुकीर्ति महास्वामीजी जिन्हें पिछले तीन मस्तकाभिषेक महोत्सव (१९८१, १९९३, २००६) आयोजित करने का अनुभव प्राप्त है, कुशलतापूर्वक इस चौथे महोत्सव में भी वे चार चाँद लगा देंगे।

शासकीय सहयोग

स्वामीजी ने बताया कि महोत्सव की तैयारियाँ दो वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हो गई थीं। केन्द्र सरकार और कर्नाटक राज्य सरकार ने महोत्सव में जो राशि स्वीकृत की है उससे सड़कें, आवास, बिजली, पानी आदि व्यवस्थाएँ स्वयं सरकार ही कर रही है और तैयारियों में भी पूर्ण सहयोग प्रदान कर रही है। सड़क, बिजली, पानी आदि की व्यवस्था में सरकारी अमला लगा हुआ है। मंत्रीगण और शासकीय अधिकारी व्यवस्थाओं में जुटे हुए हैं।

भव्यातिभव्य व्यवस्थाएँ

करीब ४०० एकड़ भूमि पर होने वाले महोत्सव में संपूर्ण भूमि को समतल बनाकर २७१ एकड़ में एकबारगी ३० हजार लोगों के रहने ठहरने की आवास व्यवस्था प्लायवुड, टीन आदि से कॉटेज बनाकर की जा रही है। छोटे बड़े तम्बू भी लगाये जाएंगे। त्यागी व्रती नगर, कलश नगर, पंचकल्याणक नगर, श्रावक नगर आदि नामों वाले १२ नगर बनाये जा रहे हैं। अंडर ग्राउंड ड्रेनेज, चौबीस घंटे बिजली आपूर्ति, गर्म ठण्डे पानी की व्यवस्था, पीने के शुद्ध जल की व्यवस्था की जा रही है। समारोह में ३५ लाख तथा बाद में ४५ लाख लोगों के आने की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए तैयारियाँ की जा रही हैं।

पत्रकारों को रूबरू करवाया गया हो रही व्यवस्थाओं से -

२२ दिसम्बर को हुई संकल्प संगोष्ठी में आमंत्रित पत्रकारों एवं दृश्य श्रव्य मीडिया कर्मियों को साथ ले जा कर स्वयं स्वामीजी ने महोत्सव के लिए हो रही तैयारियों और व्यवस्थाओं से रूबरू करवाया। बतौर पत्रकार सबके साथ मैंने भी देखा कि वहाँ त्यागी व्रती नगर का तो निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। शेष नगर सड़कें, बिजली पानी आदि की व्यवस्था हो रही हैं।

त्यागी व्रती नगर -

स्वामीजी ने बताया कि त्यागी व्रतियों को मंच तक जाने में असुविधा न हो, इसलिये इसका निर्माण बनने वाले मंच के करीब ही करवाया गया है। यहाँ मई जून से ही संतों का आगमन प्रारंभ हो गया था, और चातुर्मास भी यहीं संपन्न हुए। अभी यहाँ आचार्यश्री वर्धमानसागरजी, आचार्य वासुपूज्यसागरजी, आचार्यश्री चंद्रप्रभसागरजी, आचार्यश्री पंचकल्याणकसागरजी, आचार्यश्री

वसुनंदीजी आदि पाँच आचार्य संघ सहित १८ संघों के मुनि, आर्यिका माताजी आदि कई संत विराजित हैं और आगे आचार्यश्री विशुद्धसागरजी, आचार्यश्री पुष्पदंतसागरजी, आचार्यश्री देवनंदीजी आदि संघ सहित करीब ४०० से ५०० साधुओं के आने की संभावना है। आहार के लिये चौकों की व्यवस्था भी यहीं की गई है तथा चौके लगाने वालों की व्यवस्था भी पास ही में की गई है। बर्तन आदि तथा अन्य व्यवस्थाएँ भी यथासंभव क्षेत्र से की जाएँगी।

चंद्रगिरि पहाड़ पर भी जो साधु रहना चाहेंगे, उनकी व्यवस्था की जाएगी। जंगलवाले बाबा मुनिश्री चिन्मयसागरजी वहीं रहेंगे, उनके लिए वहाँ व्यवस्था की जा रही है।

आवागमन व्यवस्था -

महोत्सव में लाखों लोगों के आगमन की संभावना को ध्यान में रखते हुए स्वामीजी तथा अन्य प्रभावी लोगों के प्रयास से श्रवणबेलगोल स्टेशन का शीघ्र ही निर्माण होकर बैंगलोर से मैसूर तक को इससे जोड़ दिया गया है। जिससे यात्रियों को सुविधा हो गई है। इन दोनों नगरों से कई ट्रेनें और बसें देश के विभिन्न मार्गों से जुड़ी हैं तथा हवाई यातायात भी उपलब्ध है।

महोत्सव तक गाड़ियों को पहुँचने के लिए ८० फीट चौड़ी सड़कें बनाई गई हैं। भीतर बन रहे सभी नगरों को जोड़ती हुई सड़कें बन रही हैं जो यात्रियों को बसों द्वारा पहाड़ तथा महोत्सव स्थल तक ले जाएँगी। ड्रायवरों आदि के ठहरने, भोजन आदि की व्यवस्थाएँ भी अलग से की जा रही हैं।

वैसे विन्ध्यगिरि पहाड़ पर पहाड़ी में उकेरी हुई छोटी तथा अन्य सीढ़ियाँ कुल ६१८ हैं, जिन्हें चढ़ना कठिन नहीं है, फिर भी वृद्ध व अशक्तजनों के लिए करीब १०० डोलियाँ बाहर से बुलवाई गई हैं। श्रद्धालुओं को लाने ले जाने के लिए कई बड़े नगरों से स्पेशल ट्रेनें भी चलाई जाएँगी। ज्ञात हो कि आवास नगर एवं सड़कें बनाने में पेड़ों को काटा नहीं जाएगा। इस तरह पर्यावरण संरक्षण का भी ध्यान रख कर व्यवस्थाएँ की जाएँगी।

कलशाभिषेक व्यवस्था -

प्रारंभ में प्रातः प्रतिदिन बड़े कलश करने वालों को अवसर मिलेगा। स्वामीजी की इस सोच को सभी नमन करना चाहेंगे कि उन्होंने बोली लेने में असमर्थ निम्न आय वर्ग के लोगों को दो बजे पश्चात् निःशुल्क गुल्लिका अज्जी कलश करने का अवसर देने की योजना बनाई है। इस योजना से कई लोगों को कलश करने का अवसर मिल सकेगा। महोत्सव में ७ फरवरी से तो पंचकल्याकणक एवं अन्य धार्मिक क्रियाएँ आदि होंगी और पंचामृत मस्तकाभिषेक १७ फरवर से २५ फरवरी तक होगा। इसके बाद भी छः माह तक मंच बना हुआ रहेगा तथा कलशाभिषेक हो सकेंगे। कलश करने मचान तक जाने के लिये लिफ्ट की व्यवस्था रहेगी। महोत्सव के दिनों में पारस, जिनवाणी तथा अन्य चैनलों द्वारा सीधा प्रसारण होगा या अन्य तरह से प्रसारण होता रहेगा। विदेशों से भी टी.वी. चैनल वाले आयेंगे, वहाँ भी प्रसारण होगा। स्वामीजी ने बताया कि कलशाभिषेक का कार्यक्रम विन्ध्यगिरि तथा चंद्रगिरि दोनों से दिखाई देगा। चंद्रगिरि पर २ - ३ लाख लोग बैठ सकें ऐसी व्यवस्था तथा शेड आदि लगाये जा रहे हैं। विन्ध्यगिरि पर पहली बार जर्मन तकनीक से १२ करोड़ की राशि से मंच बनाया जा रहा है, जिस पर ६ हजार लोग बैठ कर अभिषेक देख सकेंगे। सबसे आगे संत, फिर बड़े कलश वाले, मीडिया वाले बैठेंगे।

आठ वर्ष के ऊपर उम्र के बच्चे और महिलाएँ, पुरुष शुद्ध वस्त्रों में कलश कर सकेंगे। प्रथम दिन १०८ कलश होंगे। दूध, दही, केशर, अन्य औषधियों के कलश होंगे।

दृश्य श्रव्य मीडिया एवं पत्रकारों के लिए व्यवस्थाएँ -

संकल्प संगोष्ठी में पत्रकारों को संबोधित करते हुए स्वामीजी ने कहा कि आप सबके आवास की व्यवस्था के लिए करीब २०० से २५० कॉटेज संपूर्ण भारत से आये पत्रकारों एवं मीडिया के लिए रहेंगे। एक पत्र पत्रिका से एक ही व्यक्ति को बुलाया जा सकेगा। पहाड़ पर जाकर कवरेज करने के पास तथा भोजन आदि की समुचित व्यवस्था होगी।

भोजन व्यवस्थाएँ -

महोत्सव में आने वाले लाखों लोगों के लिए निःशुल्क १७ भोजनशालाएँ बन रही हैं। उत्तर भारतीय लोगों को अपना प्रांतीय तथा रुचिकर भोजन प्राप्त हो सकेगा। सोले के भोजन की अलग व्यवस्था होगी। पूरे कर्नाटक तथा दक्षिण भारत से आने वाले लोगों की भोजनशाला में उनके प्रांतीय व्यंजन बनेंगे। इस तरह सबकी संतुष्टि का ध्यान रखते हुए व्यवस्थाएँ होंगी।

सफाई व्यवस्था -

पूरे महोत्सव स्थल विशेषकर आवास स्थल आदि जगहों पर अंडर ग्राउंड नालियाँ बनवाई जा रही हैं। सफाई की पूरी व्यवस्था होगी। डस्टबिन आदि की व्यवस्था होगी पर सफाई रखने में यात्रियों को भी सहयोग करते हुए ध्यान रखना होगा।

विशिष्ट अतिथियों का आगमन संभावित -

१२ वर्षीय इस जैन महाकुंभ में सन् १९८१ में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी पधार चुकी हैं। इसके पूर्व प्रधानमंत्री नेहरु जी भी यहाँ दर्शनार्थ पधारे थे। पिछले महोत्सव में प्रधानमंत्री देवेगोवड़ाजी न केवल उपस्थित रहे, बल्कि बड़ी रुचिपूर्वक व्यवस्थाएँ करवाई। इस वर्ष भी विद्वत् सम्मेलन को संबोधित करने पधारे थे और आगे भी आएँगे। इस महोत्सव में प्रधानमंत्री श्री मोदीजी एवं राष्ट्रपति श्री कोविन्दजी भी पधारेंगे, ऐसी उम्मीद है।

धर्मप्रभावना रथ -

महोत्सव में आमंत्रित करने एवं इसके प्रचार प्रसार के उद्देश्य से एक रथ कर्नाटक तथा दक्षिण में पं.धरणेन्द्र शास्त्री के तथा दूसरा पं.श्री सुरेशजी जैन मारौरा के नेतृत्व में उत्तर भारत में धर्मप्रभावना करते हुए भ्रमण करके श्रवणबेलगोल पहुँचेगा। इससे प्रदान राशि का उपयोग मानव कल्याण तथा शिक्षा के आयामों पर होगा।

भव्य सांस्कृतिक आयोजन -

महोत्सव के समय प्रतिदिन रात्रि में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आयोजन होंगे, जिनका प्रसारण टी.वी. के माध्यम से होगा। इन कार्यक्रमों में देश विदेश के कलाकार अपनी श्रेष्ठतम् प्रस्तुतियाँ देंगे। महोत्सव में आठ तीर्थों की प्रतिकृतियाँ बनेंगी तथा कई प्रदर्शनियाँ भी लगेंगी। कई तरह के स्टॉल्स होंगे।

मानवसेवा प्रकल्प एवं शैक्षणिक संस्थाओं का विकास -

दान से प्राप्त राशि से खर्च के बाद बची राशि का उपयोग मानव सेवा हित होगा। इस राशि से सुपर मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल खोला जाएगा। २०० बिस्तरों वाले अस्पताल की योजना है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इस राशि का उपयोग होगा। इंजीनियरिंग कॉलेज में आवश्यक निर्माण कार्य होगा तथा अन्य शैक्षणिक योजनाओं में राशि का उपयोग होगा। सबसे बड़ा कार्य सरकार की सहायता से होगा वह है प्राकृत युनिवर्सिटी बनाना। देश भर में प्राकृत पाठशालाओं का निर्माण होकर उसमें शिक्षकों की व्यवस्थाओं आदि में भी उस राशि का उपयोग हो सकेगा।

दानदाताओं को चाहिए कि दान राशि के सदुपयोग के प्रति आश्वस्त होकर खुले दिल से दान देने की भावना रखें और महोत्सव में सपरिवार पधार कर पुण्य संचय करें।

★★★★

भट्टारक जी सक्षम, समर्थ हैं, उम्मीद भी उन्हीं से :

-निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

दुनिया में रोम व वाराणसी कुछ ऐसे स्थल विद्यमान है जो प्राचीनकाल से हैं। श्रवणबैडगोड का नाम भी इसी श्रेणी में है। कर्नाटक अन्य किसी भी स्थान का इतिहास इतना दीर्घकालीन और अविच्छिन्न नहीं है। चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में इसे काल-बौधु कहा जाता था। चिक्क बैट (छोटी पहाडी) चन्द्रगिरि कहलाती है। यह बस्ति चन्द्रगुप्त द्वारा बनवाई गई है। गोम्मट विग्रह डोड्डबैट्ट (बडी पहाडी) पर अवस्थित है। जिसे इन्द्रगिरि भी कहा जाता है। इस स्थल पर विशाल सरोवर है। अनुश्रुतिनुसार गोम्मटेश्वर के प्रथम अभिषेक के समय चमत्कारी रूप से अभिषेक करने के लिए (महामस्तकाभिषेक), किया गया तो कुण्ड भर गया था। चामुण्डराय के गुरु ने सँस्कृत में उसे 'श्वेत सरोवर' की संज्ञा दी। कन्नडिग इसे बैलगोल के नाम से जानते हैं। यह क्षेत्र 'ऋषि-बाहुबली' की खडगासन मूर्ति के कारण परम-पावन है। इसलिए इसे 'श्रवणबेलगोल' के नाम से पुकारते हैं। अभिलेखों के अनुसार होयसला नरेश के कोषाध्यक्ष ने एक बसदि बनवाई थी, जो भण्डारी बसदि के नाम से प्रसिद्ध है। होयसला नरेशों के सेनापति और मंत्री जैन थे। 'गंगराज' जिन्होने श्रवणबेलगोल के नजदीक जिननाथपुर की स्थापना की थी और सुप्रसिद्ध शांतिनाथ भगवान का मंदिर बनवाया था। भरतेश्वर ने उसकी सीढ़ियाँ और चबूतरें बनवाए थे। चिक्क देवराजा वोडेयर ने कुण्ड का निर्माण भक्ति-भाव से करवाया था।

वास्तुकला की चालुक्य, विजयनगर तथा होयसला शैलीयुक्त मूर्तिकला भी श्रवणबेलगोल में विद्यमान है। विश्वविख्यात श्रवणबेलगोल ऐसा धर्म का तीर्थ क्षेत्र है जहाँ यात्री भाषा व धर्म के भेदभाव से रहित होकर श्रद्धा, आस्था के साथ भक्तिरस हो जाते हैं। इस अध्यात्मिक क्षेत्र के सम्राट बाहुबली गोम्मट हैं। गोम्मट-जिन बाहुबली स्वामी भारतीय संस्कृति, विशेषत: श्रमण-संस्कृति के इतिहास में एक महान प्रेरणा-स्त्रोत महापुरुष के रूप में नमस्करणीय, वंदनीय तथा पूजनीय हैं। उन्हें बाहुबली, भुजबली, दौर्वलीश (दुर्बलों का इश), पोदनेश, नाभिपौत्र, वृषभपुत्र गोम्मटेश, गोम्मटजिन, दक्षिण कुक्कट जिन आदि अनेक नामों से श्रद्धा-भक्ति से पुकारा जाता है। इन नामों में शक्ति, सौन्दर्य के स्वामित्व के साथ-साथ अनाशक्ति, संयम, जितेन्द्रियता, तप:साधना शामिल है।

कर्नाटक के हासन जिले के श्रवणबेलगोला में स्थित भगवान बाहुबली की ईसवी सन् 981 में विन्ध्यगिरि पहाड पर 58.8 फुट ऊँची विशालकाय एक पाषाण में उत्कीर्ण भव्य, विश्वाश्चर्य, मनोहारी प्रतिमा जी के निर्माण में शिल्पियों ने अद्भुत कला का परिचय दिया है। यह उनके खगोल-विज्ञान और भौतिक-विज्ञान का भी अनुपम परिचय है। प्रतिमा का निर्माण एवं

प्रतिष्ठा इस पद्धति से की गई है कि इसकी छाया धरती पर नहीं होती है। प्रतिमा का प्रतिष्ठा अभिषेक भी सन् 981 में सम्पन्न हुआ था। इसका अतिशय देश-दुनिया में व्याप्त है।

महोत्सव से समाज सीख लें :

हर 12 वर्ष के बाद महामस्तकाभिषेक की परम्परा का निर्वाह आस्था, श्रद्धा-भक्ति के साथ होता है। लाखों-लाख मानवों की महा-मस्तकाभिषेक में साक्षी होने से देश के समक्ष यह संकेत जाता है कि हमारा समाज अंतर्मन से एक है। हमारी यह एकता समाज के हितों के लिए आंतरिक रूप से मतभेद के स्थान पर मनभेद हैं, की जगह परस्पर निकटता इस राष्ट्रीय महोत्सव से उत्पन्न हो जाए, तो हमारी सबसे बड़ी तीर्थक्षेत्रों के लिए उपस्थित की गई समस्या से मुक्ति मिलने का रास्ता निकल सकता है। जब सैकड़ों की संख्या में हमारे संतगण महोत्सव में देश के कोने-कोने से विहार करके महोत्सव के लिए एक साथ एकत्र हो सकते हैं, तो हमारे को एक नेतृत्व देने के शुद्ध अंत:करण से मिल बैठ कर समाज हित में सामुहिक रूप से ठोस कदम तो उठा ही सकते हैं।

132 साल पूर्व का ऐतिहासिक यात्रा वृतांत:

वीर संवत 1940 की बात है। बम्बई के धर्मात्मा गुजराती दिगम्बर जैन धनाढ्य सेठ सौभाशाह मेघराज ने एक दिन मंदिर में जैनबिद्री और मूलबिद्री यात्रा की भावना व्यक्त करते हुए कहा कि जिन भाइयों की इच्छा हो साथ चलें। बम्बई के ही दानवीर माणिकचन्द्र जवेरी के साथ कुल 125 धर्मालु तुरन्त तैयार हो गए। परोपकारी माणिकचन्द्र आराम पहुँचाकर खुश होते थे। रास्ते में सबके टिकट, सामान का प्रबंध, ठहरने के स्थान की तलाश, हिसाब, यात्रा स्थलों पर पूछताछ सांब कुछ काम माणिकचन्द्र के जम्मि था। 'जैनबोधक' अंक 4, 1 दिसंबर सन 1885 में सम्पादक सेठ हीराचंद ने यात्रा का विवरण में लिखा: बेलगोला ग्राम में 8 दि. जैनमंदिर हैं जिनमें पट्टाचार्य का मंदिर दुरुस्त है शेष नहीं। मंदिरों में घास बढ गई है, मण्डप में पक्षियों के घर हैं जिससे दुर्गन्ध आती है। यहाँ दो पहाड एक दूसरे के सम्मुख हैं, एक बड़ा जिसको धोडपेटा दूसरा छोटा जिसको चिकपेटा कहते हैं। बड डे पर आठ व छोटे पर 14 दि. जैन मंदिर है। व्यवस्था पट्टाचार्य के आधीन है। कई मंदिरों के दरवाजे नहीं है जिससे पशु-पक्षी उपसर्ग करते हैं। आगे सेठ हीराचंद नेमचंद लिखते हैं कि-हमारे साथवालों ने 100) व बेलगुलगांववालों ने 200) इस प्रकार 300) इसकी दुरुस्ती के लिए ब्रह्मसूरी शास्त्री (जो एक मात्र था जो प्राचीन ताडपत्रों पर अंकित धवलाओं को पढ सके थे) को दिए मंदिरों में दरवाजे लगाने को भी रुपये पट्टाचार्य को दिए हैं। पट्टाचार्यजी ने सेठजी को हिंदी भाषा में पत्र भेजा उसकी नकल 'जैनबोधक' में है। इस से यह मालुम होता है कि-ठकनडी देश में भी हिंदी लिखने व पढने का रिवाज है जिससे भारत की यदि कोई भाषा व लिपि राष्टीय हो सक्ति है तो यह हिन्दी भाषा ही है। गोमट्टस्वामी का बडा पहाड एक ही पत्थर का है ऊपर चढने पर 1 बडा दरवाजा है उसके भीतर जाते ही एक दम खुली,निर्मल, शांतस्वरूप, बहुत विस्तीर्ण, मनोहर बाहुबलि स्वामी की नग्न मूर्ति नजर आती है। मूर्ति रे दर्शन से अंत:करण में एक प्रकार का आश्चर्य युक्त आनंद होता है। 19 हाथ चौडी और 40 हाथ ऊँची ऐसी उत्कृष्ट, ध्यानारूढ, तेजस्वरूप मूर्ति की तरफ रात-दिन नेत्र लगा के बैठे तौभी तृप्ति नहीं हो सकती। बाहुबलिस्वामी प्रथम तीर्थकर श्री ऋषभदेव के पुत्र और भरत के भाई थे, इन्होंने दीर्घकाल तरश्चरण किया था जिससे चरण में वल्मीक लगे हैं उनमें से सर्प निकल के पाँव से खेल रहे हैं। शरीर के ऊपर बेल चढी है ऐसा हूबहुव भाव पत्थर में मनोहर खुदा हुआ देखने में आता है। ऐसे रमणीक अतिशय क्षेत्र के दर्शन प्राप्त कर सेठ माणिकचन्द के संघ को बहुत ही आनंद प्राप्त हुआ। बडे पर्वत पर चढते हुए सेठ जी ने देखा कि वृद्ध पुरुष व स्त्रियों को बहुत ह कष्ट हो रहा है, पत्थर चिकना ढालू है बारबार पैर फिसलता है। सेठ जी का शरीर भी छोटा व भारी था। इनको भी पर्वत पर चढते हुए बहुत कष्ट हुआ। यह चढते-चढते विचारने लगे कि यदि इस पर्वत पर सीढयाँ बन जावें तो सदा के लिए यात्रियों का कष्ट दूर हो जावे। अब तक लाखों-हजारों यात्री हो गए होंगे किसी के दिल में यह भाव पैदा नहीं हुआ।...आप ऊपर गए, संघ सहित परमानंददायक श्री बाहुबलि स्वामी के दर्शन कर के अपने जन्म को कृतार्थ मानते हुए। भाई पानाचन्द भी बहुत ही प्रसन्न हुए। सर्व ने बड़ी भक्ति से चरणों का प्रक्षाल किया फिर अष्ट द्रव्य से खूब भाव लगाकर पूजन कर के महान पुण्य उपार्जन किया। दर्शन करते-करते किसी का भी मन नहीं भरा। सेठ माणिकचन्द ने अपने भाई से सलाह कर अपने संघ को एकत्रित कर निश्चय किया कि बड़े पहाड पर 2000 सीढयाँ बना देनी चाहिए। 5000) से अधिक की एक पट्टी की जिसमें आपने 1000) की रकम भरी। रुपया एकत्र कर पट्टाचार्य जी के सुपुर्द किया कि इससे सीढयाँ बनवा दी जावें। यह काम सेठ माणिकचंद ने इतने महत्व का किया कि आज तक इन सीढयों के द्वारा यात्रियों को आराम पहुंच रहा है व आगामी पहुँचेगा।

भट्टारक जी से एक अनुपलब्ध उम्मीद:

न जाने कितना समय बीत चुका है। हमें इतना तो ज्ञात है कि आदि तीर्थकर भगवान ऋषभदेव और उनके पुत्र, आदि चक्रवर्ती भरत के भ्राता, प्रथम कामदेव अर्थात् दोनों का मुक्ति स्थल कैलाश पर्वत पर है। परंतु मुक्ति स्थल का सही-सही स्थान अब तक अज्ञात है। हमारे युग में अंतरिक्ष से भूमि पर स्थित छोटी-छोटी वस्तु को देखा जाना संभव हो गया है। इसका प्रमुख केन्द्र इसरो, बैंगलुर में है। अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र से दोनों के चरण-स्थलों का पता लगाने की योजनाबद्ध पहल की जाना चाहिए। उचित को यह होगा कि श्रवणबेलगोल के कर्मठ महामना स्वाति श्री भट्टारक चारुकीर्ति जी जो सक्षम हैं, समर्थ हैं। उनकी क्षमता ताका लाभ दोनों अज्ञात पावन मुक्ति स्थलों का पता लगाकर, समाज को वंदना का अनउपलब्ध मार्ग उपलब्ध करा सकते है।

यह वर्ष माणिकचंद है जो भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी पहले प्रमुख पद रहे हैं अन्य तीर्थों के जीर्णोद्धार और रक्षा के लिए जितना पुरुषार्थ किया है। और उतना आज तक कोई पदाधिकारी नहीं को पाया है।

प्राप्त धनराशि का उपयोग चारों दान में होगा : स्वामीजी

श्रवणबेलगोला श्रीक्षेत्र के प्रमुख जगद्गुरु, कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामी ने राष्ट्रीय समिति को सम्बोधित करते हुए उपयुक्त मार्गदर्शन किया। पूज्य स्वामीजी ने कहा कि सभी समिति, उप समितियों को कार्य करने की स्वतंत्रता है, बहुत काम करें। सेटअप में समय लगता है, कठिनाइयां भी हैं, दुःख भी है, कष्ट भी हैं लेकिन कार्य तो सभी को मिलकर करना है। महोत्सव को बहुत सफल करना है। पूज्य स्वामीजी ने स्पष्ट किया कि श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक महोत्सव के निमित्त जो धनराशि दान में आएगी उसका उपयोग चार प्रकार के दोनों में बराबरी से किया जाएगा। हमारे पूज्य त्यागीगणों की व्यवस्था उमके आहार-विहार की समुचित व्यवस्था हमें तन-मन-धन से करती है। उनका यथोचित सम्मान करना है। वे हमारे गौरव हैं।

आने वाले अतिथियों व अप्रवासी (एनआरआई) भारतीयों की व्यवस्था भी हमें समुचित ढंग से करनी है। आवास-भोजन की व्यवस्था हमें ठीक ढंग से बराबर हो गई तो हमारी जीत हर कार्य में सुनिश्चित है। पूज्य स्वामीजी ने श्रवणबेलगोला को आदर्श ग्राम बताते हुए कहा कि भारत के राष्ट्रपतिजी द्वारा पुरस्कृत क्षेत्र है। श्रवणबेलगोला को क्लीन-ग्रीन-ब्यूटीफुल श्रवणबेलगोला बनाना है। इस हेतु पच्चीस लाख का बजट रखा गया है। उचित स्वच्छता वाहन आ गए हैं, जिनका शुभारंभ होना है।

पूज्य स्वामीजी ने महामस्तकाभिषेक की प्राचीनता व परम्परा से अवगत कराते हुए कहा कि 1925 में मैसूर के महाराजा स्वयं श्री महामस्तकाभिषेक के दौरान श्रवणबेलगोला में रुके थे और व्यवस्था को स्वयं देखते थे। सर सेठ हुकमचंदजी कासलीवाल (इंदौर) ने महाराजा के साथ महासभा का अधिवेशन किया था व उनका अभूतपूर्व स्वागत किया था। महामस्तकाभिषेक के माध्यम से हम जनकल्याणक का कार्य सम्पन्न् करें ऐसा कार्य हम करेंगे। विगत महामस्तकाभिषेक के निमित्त भगवान बाहुबली चिल्ड्रन हॉस्पिटल निर्माण हुआ जहां प्रतिदिन 160 बच्चे इलाज के लिए आते हैं। महामस्तकाभिषेक के निमित्त प्रत्येक बच्चे को 250 ग्राम दूध व एक ऑरेंज दिया जाएगा। कर्नाटक सरकार व मुख्यमंत्री श्री सिद्धारमैया व प्रभारी मंत्री ए.मंजू व प्रशासनिक अधिकारियों के सहयोग की प्रशंसा करते हुए स्वामीजी ने सम्पूर्ण समाज को एकजुट होकर महोत्सव को सफल बनाने की अपील की।

महामस्तकाभिषेक-2018 का प्रतीक चिन्ह

विश्वप्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला में आज से करीब 1036 वर्ष पूर्व तत्कालीन सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री नेमिचन्द्राचार्य के आचार्यत्व में और सेनापति चामुंडराय द्वारा निर्मित एवं प्रतिष्ठापित भगवान बाहुबली की विश्वाकर्षक, रमणीय, अप्रतिम, मनोहर व कलापूर्ण 57 फुट ऊंची विशालकाय प्रतिमा का चित्त और नेत्र हारक प्रभावक बारह वर्षीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव परम्परा का वर्तमान महामस्तकाभिषेक-2018 का सिद्धान्त चक्रवर्ती के पीठाधीश पद पर वर्तमान में विराजमान सर्वसामन्य पूज्य जगदगुरु कर्मयोगी आध्यात्म प्रेमी आगम चिंतक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक महामस्वामीजी की कल्पना शक्ति से चित्रांकित जो मोनोग्राम प्रतीक चिह्न प्राचरित व प्रसारित किया गया है वह अत्यन्त तथ्यपूर्ण सत्य ऐतिहासिक चमत्कारिक अतिशययुक्त घटित घटना का द्योतक है और वह आगमोक्त है।

इस प्रतीक चिह्न में गुल्लिकायज्जी नामक एक वृद्ध महिला के द्वारा इस प्रतिमा के प्रथम महामस्तकाभिषेक में एक छोटी सी गुल्लिका कलश में अल्प दूध से प्रतिमा के मस्तक पर अभिषेक करने मात्र से वह प्रतिमा और सम्पूर्ण पर्वत दुग्ध से लबालब सिंचित होकर वहां दुग्ध का सरोवर निर्माण हो गया था, सर्वत्र धवलता फैल गयी थी, ऐसा दर्शाया गया है।

सेनापति चामुंडराय वैभव सम्पन्न होते हुए भी उसके द्वारा घड़ों भर-भर कर भारी मात्रा में दुग्ध से श्री भगवान का अभिषेक किया गया। परन्तु दूध नाभि से नीचे नहीं आ रहा था और गुल्लिकायज्जी के द्वारा एक छोटे से कलश में अल्प दूध के अभिषेक से प्रतिमा और पर्वत दुग्धमय हो जाना एक महान आश्चर्य था, चमत्कार था।

इस चमत्कार को देखकर सेनापति चामुण्डराय को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और हताश भी हुआ। सिद्धान्त चक्रवर्ती ने अपने प्रगस्भ नैमित्तिक ज्ञान से इस चमत्कार के सम्बन्ध में सेनापति से कहा कि तुम्हें इस प्रकार की भव्य मनोज्ञ प्रतिमा के निर्माण से अहंकार हो आया था। मैंने जैसी प्रतिमा बनवायी है ऐसी किसी ने नहीं। यह अहंकार तुम्हें हो जाने से तुम्हारे अहंकार को नष्ट करने के लिए ही यह चमत्कार यहां घटित हुआ है। सेनापति को अपनी भूल का एहसास हो गया, फलस्वरूप सेनापति ने इसी प्रतिमा के सामने गुल्लिका हाथ में कलश लिए खड़ी है। ऐसी एक सुन्दर प्रतिमा बनवाकर गुल्लिकाजी को प्रतिमा के रूप में स्थापित कर दिया है।

अतिशययुक्त चमत्कार पूर्ण घटित सत्य घटना के प्रतीक रूप में एक प्रतीक चिह्न बनाया गया है जो आगमोक्त है। इसमें किसी भी प्रकार के सम्प्रदाय या पंथ की कोई दुर्गन्धि नहीं है। पंथवाद की तुच्छ दृष्टि का कोई लवलेश नहीं भी है इस लोगो में।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रवणबेलगोला - ग्राम श्रवणबेलगोला

त. चन्द्रराय पट्टन जिला हासन (कर्नाटक) पिन-573135

टेलीफोन: 08176-257266. 257258, 257273, 257224

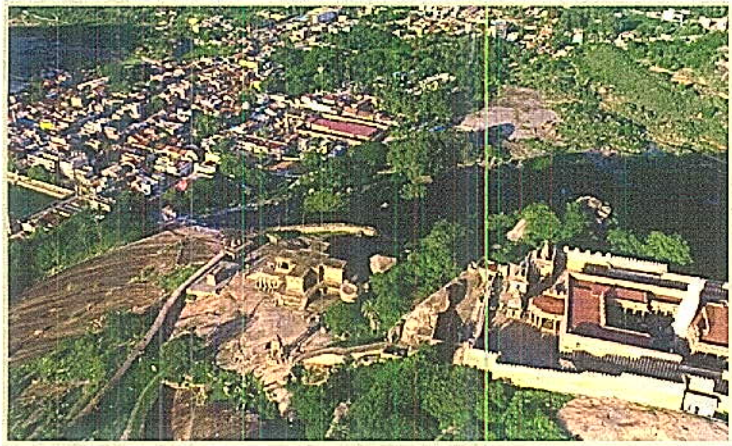

आवास

कमरे (अटेच बाथरूम)	120
कमरे (बिना बाथरूम)	10
हाल 5 एवं कमरे	363
गेस्ट हाउस	**12**
यात्री ठहरने की कुल क्षमता	2000
भोजनालय	नि:शुल्क, नियमित

आवागमन के साधन

रेलवे स्टेशन

हासन-52 किमी. बैंगलोर-150 किमी.

श्रवणबेलगोला-2कि.मी.

पहुंचने का सरलतम मार्ग

बैंगलोर, मैसूर, हासन आदि स्थानों से सड़क मार्ग द्वारा

निकटतम प्रमुख नगर

मैसूर-85 किमी. बैंगलोर-146 किमी.

2 पहाड़

विन्ध्यगिरी पर 644 एवं चन्द्रगिरी पर 175 सीढ़ियां है। डोली की व्यवस्था है।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र

धर्मस्थल-180 किमी.	वैणूर-180 किमी.
मूडबिद्री-200 किमी.	कारकल-225 किमी.
हूमचा-200 किमी.	

एक हजार वर्ष से भी अधिक पूर्व 981 ई. में महामान्य चामुण्डरायजी ने आचार्य श्री नेमीचन्द्रजी सिद्धान्त चक्रवर्ती के सान्निध्य में इन्द्रगिरी पर्वत पर भगवान बाहुबली की प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई थी; यह मूर्ति लगभग 18 मी. (58) ऊँची उत्तरमुखी खड्गासन संसार की अनुपम अद्वितीय एवं अतिशय सम्पन्न विशाल प्रतिमा है; इस भव्यमूर्ति का महामस्तकाभिषेक 12 वर्षों के अन्तराल से होता है। यह दक्षिण भारत का प्रमुख जैन तीर्थ पर्यटन स्थल है। चन्द्रगिरि पर्वत पर अनेक प्राचीन एवं बहुमूल्य शिलालेख है जिससे प्राचीन जैन इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। लगभग 500 शिलालेख जैनों की गौरव का उल्लेख करते हैं। 15-16 किमी. की दूरी से मूर्ति दृष्टिगोचर होती है।

महामस्तकाभिषेक के अवसर पर प्रकाशित कतिपय कृतियाँ

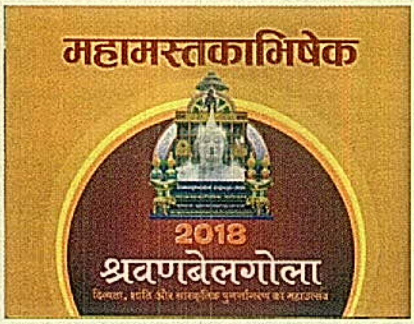

कृति : महामस्तकाभिषेक 2018 श्रवणबेलगोला दिव्यता, शांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का महाउत्सव
प्रस्तुति : प्रो.(डॉ.)नलिन के.शास्त्री
ए–11,प्राध्यापक निवास
बोधगया 824 324
प्रकाशक : एस.डी.जे.एम.आई मैनेजिंग कमेटी ट्रस्ट,श्रवणबेलगोला
पृष्ठ संख्या : 32 **मूल्य** : **भक्ति**

प्राचीन कलाकृतियों,मूर्तियों सहित 1967 से 2017 तक के अनेक दुर्लभ चित्रों एवं प्रांजल भाषा में ऐतिहासिक तथ्यों को परोसने वाली यह एक श्रेष्ठ कृति है। पूज्य भट्टारक महास्वामी जी की बाल्यावस्था (रत्नवर्मा) एवं माता–पिता के चित्रों के कारण यह 32 पृष्ठीय लघु कृति संग्रहणीय तो है ही। पूज्य स्वामी जी एवं क्षेत्र के मंदिरों के नवीनतम चित्रों के कारण सामयिक रूप में उपयोगी भी है। सामग्री का सयोजन, चित्रों की प्रस्तुति आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण है। डॉ. शास्त्री इस सुन्दर कृति के सृजन हेतु बधाई के पात्र हैं।

कृति : भगवान ऋषभदेव के पुत्र बाहुबली
(अंतर्राष्ट्रीय पाठकों के लिये) द्विभाषी पुस्तिका
लेखक : Dr. Chakravarthi Nainar Devakumar
प्रकाशक : अरिंजय जैन एवं तथागत जैन
F-3 ,ग्रीनपार्क,नईदिल्ली 110 016
arinjaya@gmail.com
संस्करण : प्रथम, 2018
मूल्य : 100 रु.
पृष्ठ संख्या : 32

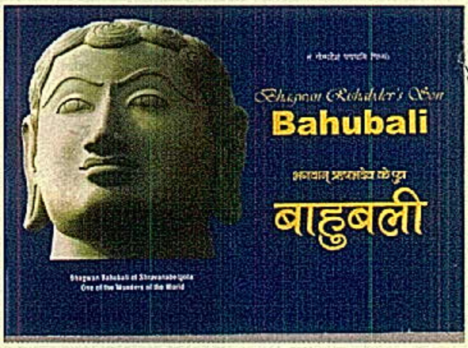

अहिन्दी भाषी पाठकों की सुविधा के लिए लेखक ने इस कृति को समानान्तर रूप से 2 भाषाओं में प्रस्तुत किया। सरल,सहज,भाषा में लिखी गई इस कृति में भगवान ऋषभदेव के जीवन,शिक्षाओं,भरत बाहुबली के युद्ध,बाहुबली की तपस्या से लेकर श्रवणबेलगोल के इतिहास, आचार्य भद्रबाहु,चन्द्रगुप्त मौर्य की कहानी, मूर्ति निर्माण के इतिहास एवं इस मूर्ति निर्माण से जुड़े अन्य सभी व्यक्तियों का संक्षिप्त परिचय दिया है। एक वरिष्ठ वैज्ञानिक होने के कारण डॉ. देवकुमार जी ने सुगठित रूप से सभी जानकारी दे दी है। अंत में श्रवणबेलगोल पहुँचने के साधन बताकर कृति को पूर्ण किया है। कृति उपयोगी एवं संग्रहणीय है।

कृति : श्रवणबेलगोला दर्शन
प्रस्तुति : अंतर्मुखी मुनि श्री 108 पूज्य सागर महाराज
प्रकाशक : धार्मिक श्रीफल परिवार ट्रस्ट
C/o हुलासचन्द सबलावत एवं श्रीपाल सुरेश सबलावत, रेडीप्रिन्ट, जयपुर
संस्करण : प्रथम, 2017
मूल्य : 150 रु. **पृष्ठ संख्या** : 56

ब्र. चक्रेश जैन के रुप में अनेक धार्मिक सामाजिक गतिविधियों को संचालित करने वाले पूज्य मुनिश्री पूज्य सागर जी की यह कृति श्रवणबेलगोल का संक्षिप्त प्रामाणिक परिचय देने वाली अच्छी कृति है। वर्षों तक श्रवणबेलगोला में रहकर पूज्य भट्टारक महास्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त करने वाले मुनि श्री पूज्य सागर जी ने श्रीफल पत्रिका के कई अंकों का सम्पादन/प्रकाशन अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप किया था। एक आशा बनी थी कि यह समाज के सर्वश्रेष्ठ पत्रिका बनेगी। किन्तु बाद में आपके द्वारा क्षुल्लक के व्रत अंगीकार करने पर क्षु. अतुल्य सागर नाम पाया एवं तदुपरान्त पूज्य आचार्यश्री पुष्पदन्त सागर जी के संघ में मुनि बन जाने के कारण श्रीफल पत्रिका का प्रकाशन रुक गया किन्तु अपने प्रत्यक्ष अनुभव तथा ज्ञान एवं मूक अभिरुचि के कारण आपने इस कृति में सुरुचि पूर्ण ढ़ंग से श्रवणबेलगोल के प्रत्येक मन्दिर,संस्था एवं कलाकृतियॉ का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। कवर–2 पर पूज्य भट्टारक महास्वामी का नयनाभिराम चित्र एवं कवर–3 पर भगवान बाहुबली की मोहक छवि बरबस चित्त को आकर्षित करती है अन्दर भी चित्रों की गुणवत्ता एवं प्रस्तुति प्रभावित करती है। कृति में मुनि प्रभाचन्द्र(पूर्व नाम सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य) एवं चामुण्डराय शिलोत्कीर्ण छवि को देखकर मन पुलकित हो जाता है। क्षेत्र द्वारा संचालित समाजसेवा एवं शिक्षा की गतिविधियों का विवरण देना प्रायः लोग भूल जाते हैं किन्तु पूज्य मुनि श्री ने उनको पूरा महत्व दिया है।

कृति स्वयं में पूर्ण रोचक एवं उपयोगी है।

डॉ. अनुपम जैन
प्रधान सम्पादक – जैन तीर्थ वंदना

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ ज्ञानोदय पुरस्कार 2015, 2016 एवं 2017 की घोषणा

शान्तादेवी रतनलाल बोबरा की स्मृति में डॉ. सूरजमल बोबरा द्वारा स्थापित ज्ञानोदय फाउण्डेशन, इन्दौर द्वारा प्रवर्तित तथा कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर द्वारा संचालित ज्ञानोदय पुरस्कार प्रतिवर्ष जैन इतिहास के क्षेत्र में मौलिक शोध कार्य करने वाले विद्वान को उसकी किसी एक कृति पर प्रदान किया जाता है।

कुन्दकुन्द निदेशक मण्डल के अध्यक्ष प्रो. ए.ए. अब्बासी जी की अध्यक्षता में गठित 4 सदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसा के आधार पर वर्ष 2015, 2016 एवं 2017 हेतु ज्ञानोदय पुरस्कार की निम्नवत् घोषणा की गई।

2015 श्री शैलेन्द्र जैन शैलू, पांचूलाल जैण पेट्रोल पम्प, सीतापुर रोड़ लखनऊ (उ.प्र.)

भारतीय संस्कृति के आदि पुरुष-ऋषभदेव पर शोध कार्य हेतु।

2016 आचार्य राजकुमार जैन, निदेशक-जैनायुर्वेद साहित्य एवं चिकित्सा केन्द्र, राजीव काम्पलेक्स के पास, इटारसी (म.प्र.)

आयुर्वेद के ग्रंथों की रचना प्रक्रिया में जैन मनीषियों का योगदान पर शोध कार्य हेतु।

2017 इंजी, मनमोहन चन्द्र जैन, 803, आर. पी. नगर, फेस-1, कोसाबाड़ी, कोरबा (छ.ग.)

तारण-तरण आम्नाय का इतिहास सृजन हेतु।

इस पुरस्कार के अंतर्गत रूपये 21000.00 की नकद राशि, शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। पुरस्कार समर्पण समारोह की तिथियाँ बाद में घोषित की जायेगी।

(डॉ. सूरजमल बोबरा) (डॉ. अनुपम जैन)
अध्यक्ष-ज्ञानोदय फाउण्डेशन कार्यकारी निदेशक

प्रतिलिपि 1. पुरस्कृत विद्वानों को सादर सूचनार्थ।
2. निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों को सादर सूचनार्थ।
3. जैन पत्र-पत्रिकाओं को निःशुल्क समाचार प्रकाशनार्थ।
4. इंदौर के स्थानीय समाचार पत्रों को सादर समाचार प्रकाशनार्थ।

- डॉ. अनुपम जैन

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार 2015, एवं 2017 की घोषणा

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ निदेशक मण्डल के अध्यक्ष प्रो. ए.ए.अब्बासी जी की अध्यक्षता में गठित 5 सदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसा के आधार पर वर्ष 2015, 2016 एवं 2017 हेतु कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार की निम्नवत् घोषणा की गई।

2015 पं. लालचंद्र जैन राकेश, 36 अमृत एन्क्लेव, अयोध्या नगर, बायपास रोडभोपाल-462041 (म.प्र.)

सदलगा के संत एवं 31 अन्य कृतियों हेतु।

2016 प्रो. (डॉ.) रतनचन्द्र जैन, ए/2, शहापुरा, भोपाल-462039 (म.प्र.)

जैन परम्परा और यापनीय संघ: तीन खण्डों में प्रकाशित पुस्तक हेतु।

2017 डॉ. दिलीप धींग, रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलोजी, सुगन हाउस, 18 रामानुजा अय्यर स्ट्रीट साहुकारपेट, चेन्नई 600079

समय और समायसार (शोध प्रबंध) हेतु।

इस पुरस्कार के अंतर्गत रूपये 51000.00 की नकद राशि, शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। पुरस्कार समर्पण समारोह की तिथियाँ बाद में घोषित की जायेगी।

(डॉ.अजितकुमारसिंह कासलीवाल) (डॉ. अनुपम जैन)
संयोजक कार्यकारी निदेशक

प्रतिलिपि 1. पुरस्कृत विद्वानों को सादर सूचनार्थ।
2. निर्णायक मंडल के सभी सदस्यों को सादर सूचनार्थ।
3. जैन पत्र-पत्रिकाओं को निःशुल्क समाचार प्रकाशनार्थ।
4. इंदौर के स्थानीय समाचार पत्रों को सादर समाचार प्रकाशनार्थ।

- डॉ. अनुपम जैन

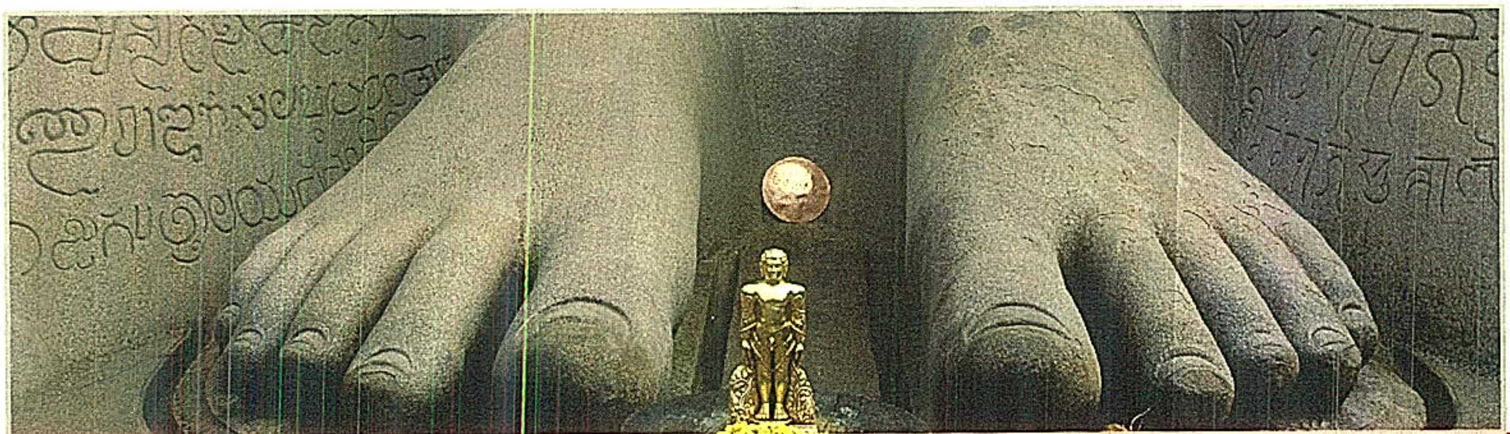

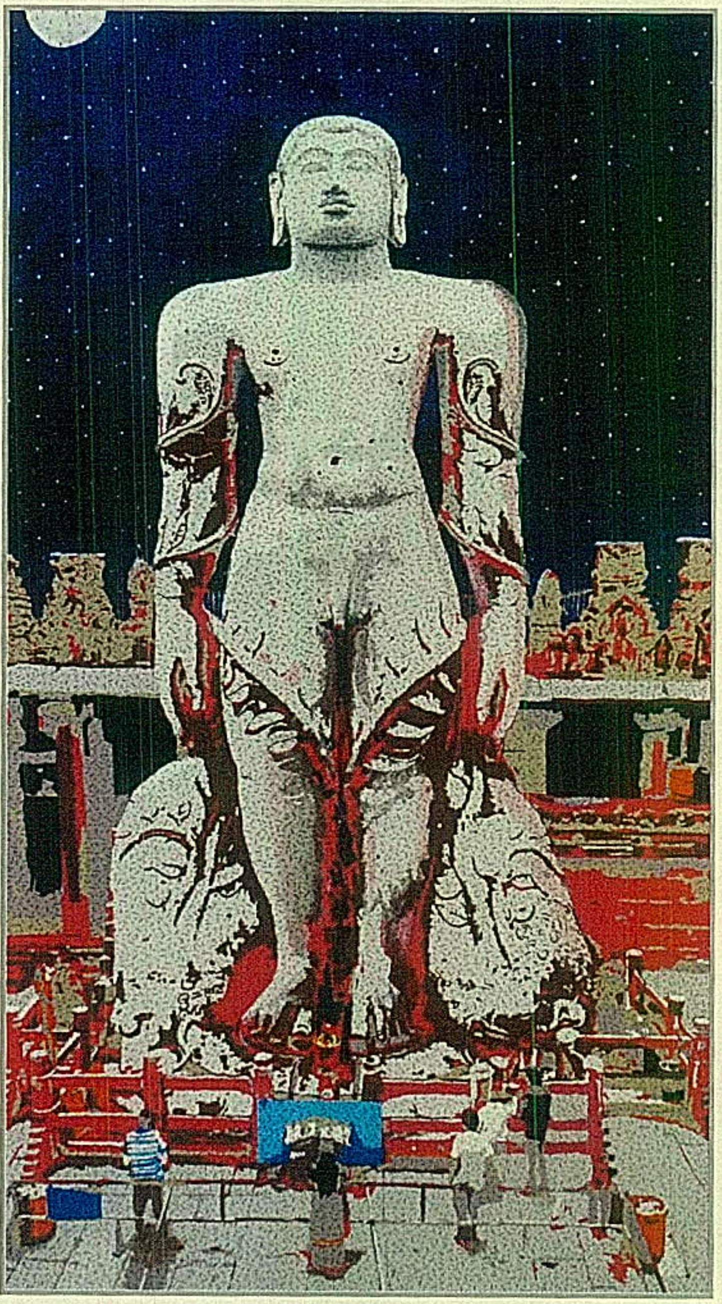

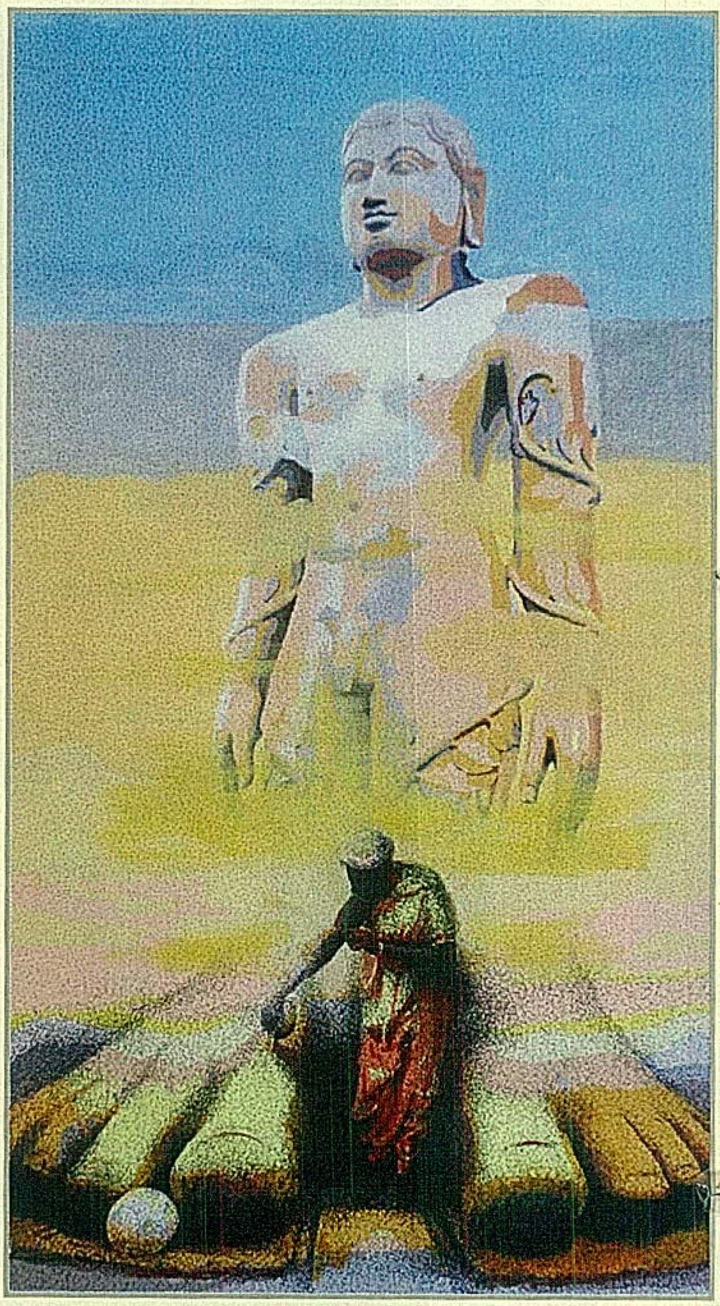

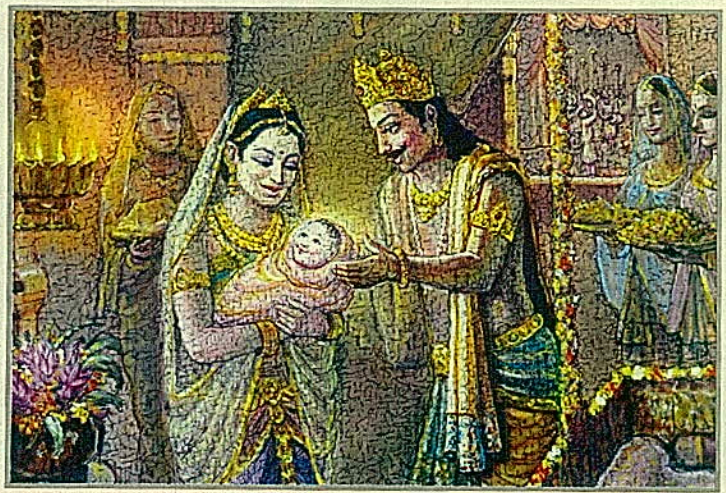

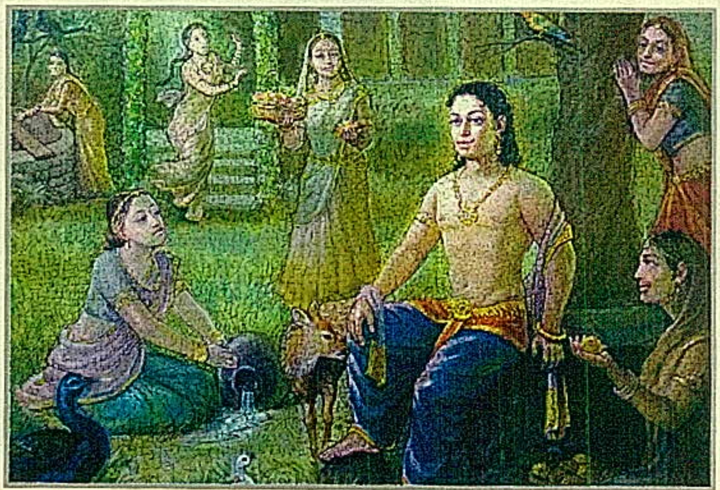

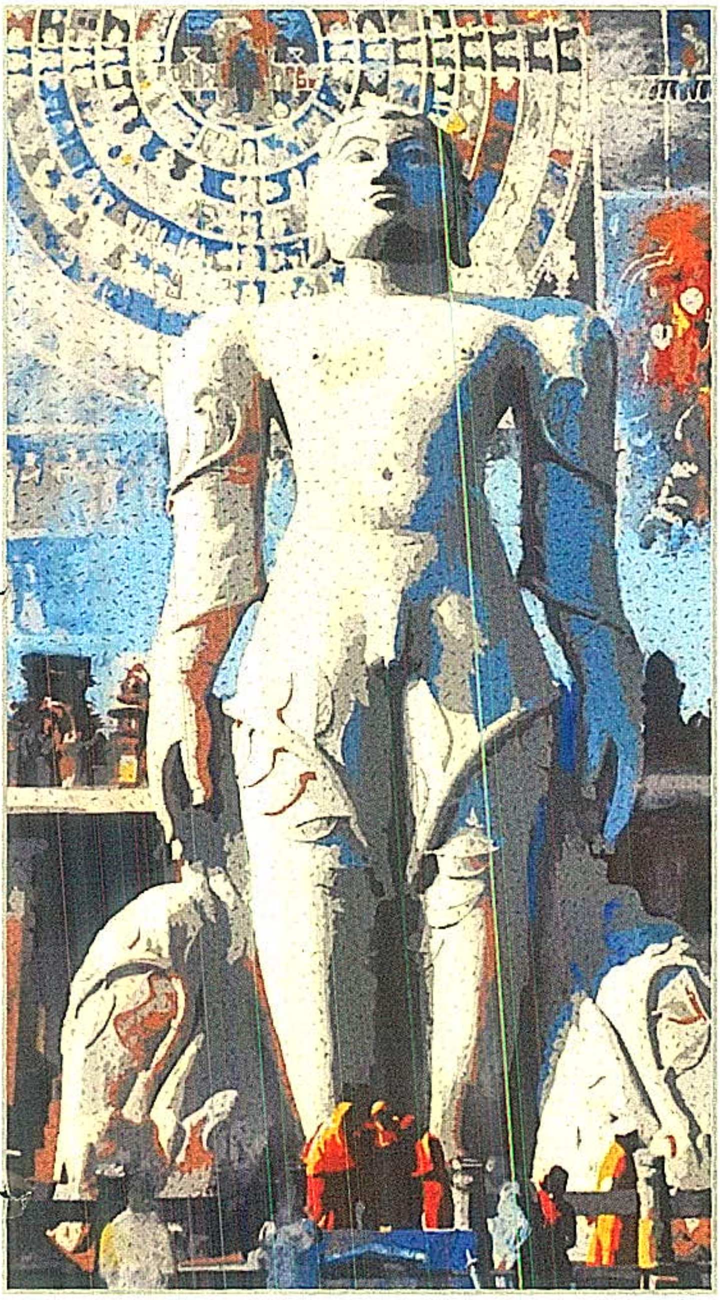

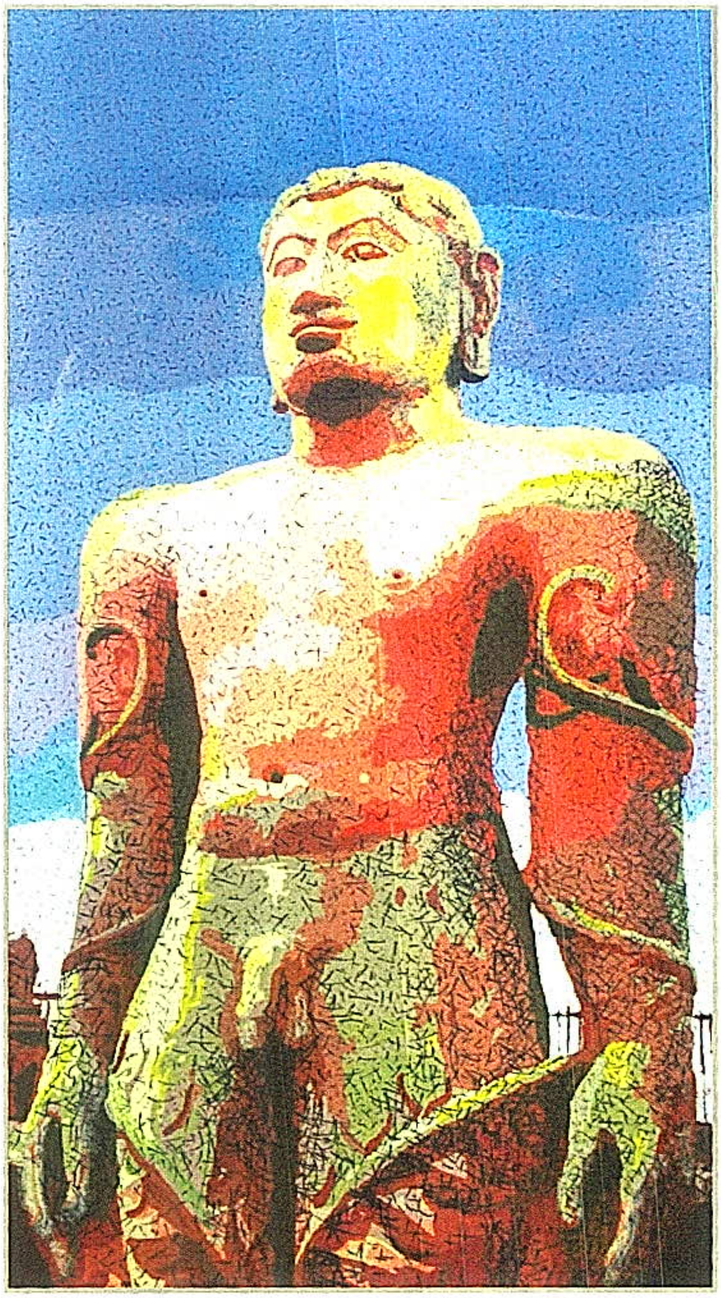

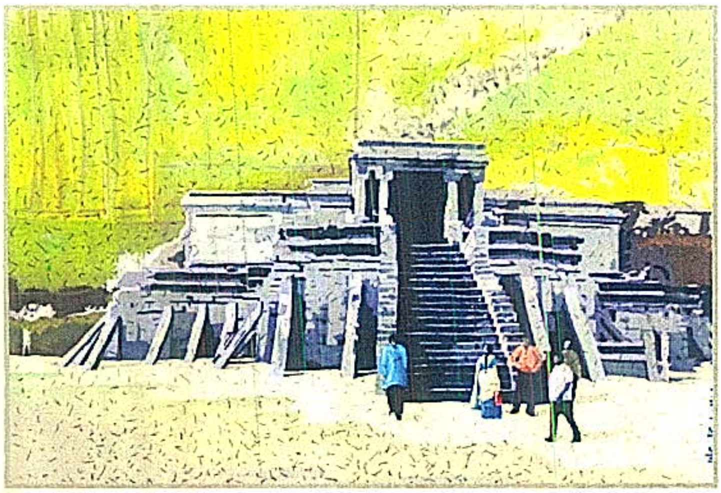

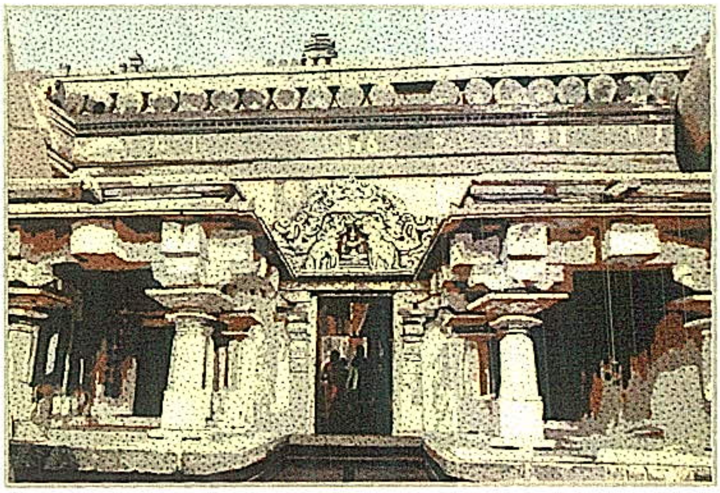

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से प्रायोजित भगवान बाहुबली कला प्रदर्शनी

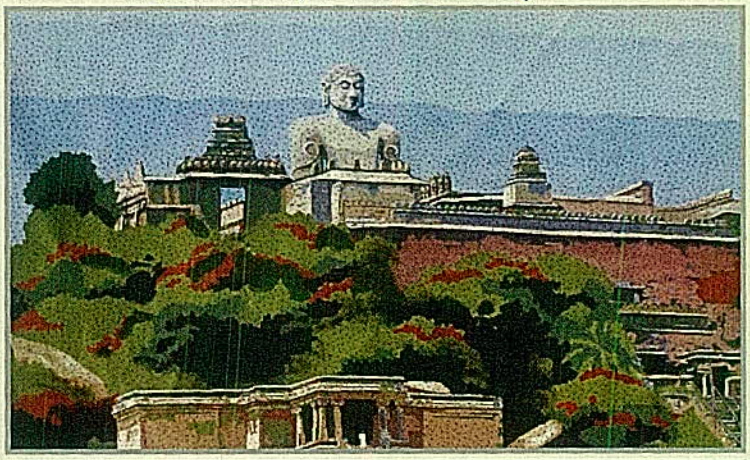

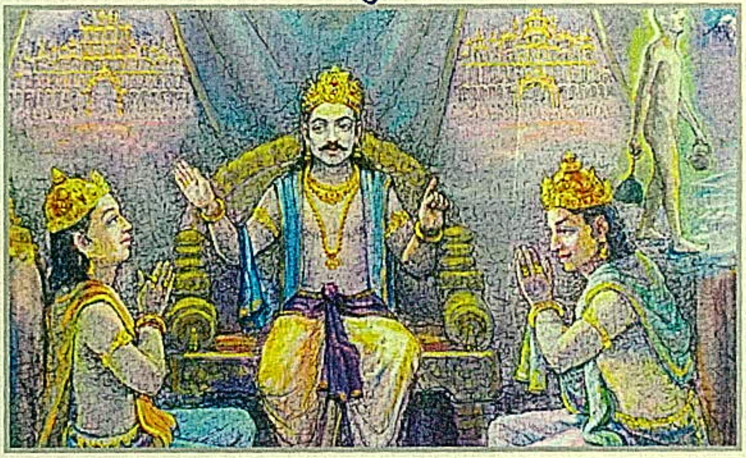

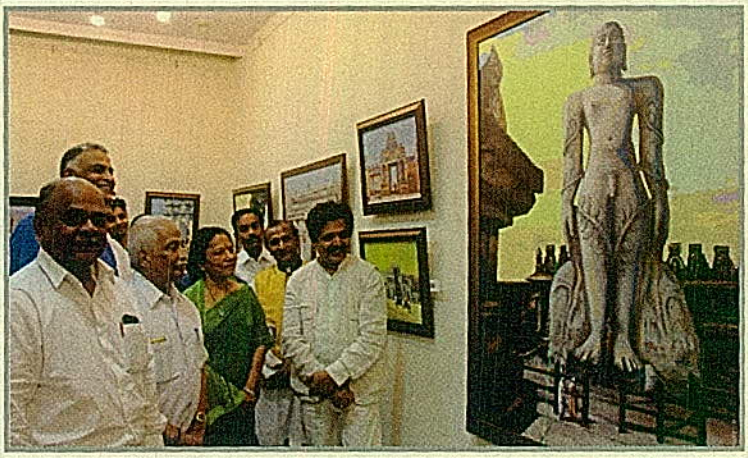

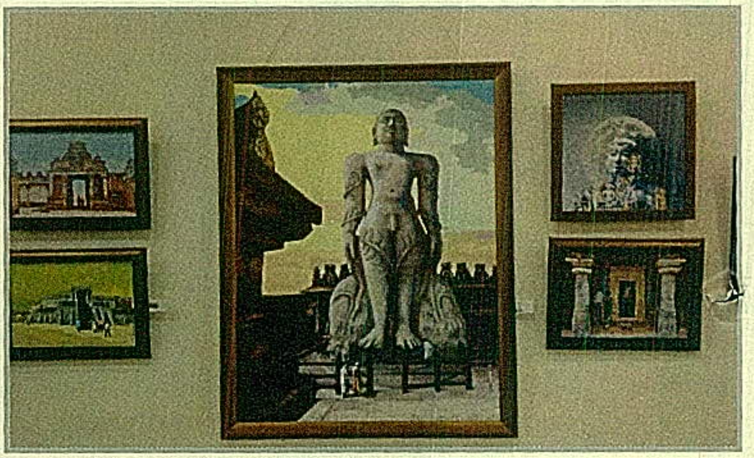

अनागार परमपूज्य आचार्यश्री आर्यनंदीजी मुनिराज का स्मरणीय योगदान

प.पू.गुरुदेव समंतभद्र जी महाराज

- महाराष्ट्र के मराठवाड़ा प्रांत ने भारतवर्ष को, मुनिश्री आर्यनंदीजी के रूप में, ऐसा संत दिया जो अंर्तबाह्य, सात्विकता, करुणामयता और वात्सल्यत्व से परिपूर्ण थे। चतु:संघ और समाज की नजर में भेले ही आचार्य होंगे, लेकिन महाराष्ट्र के जैन समाज के लिए विशेषत: मराठी भाषिक 'सैतवाल जैनों के' लिए तो वे धार्मिकता और जैन दर्शन के आधार स्तंभ थे। श्रद्धा और भक्ति के निधान थे। मराठवाड़ा प्रांत का पैठण तहसील, ढोरकीन नामक एक छोटा सा कसबा, जहाँ आचार्यश्री आर्यनंदीजी का जन्म हुआ। संत एकनाथजी के वास्तव्य से पवित्र भूमि पैठण में, जैन कवि चिमणाजी पंडित का कार्य भी हुआ है, आज भले ही यह नाम जनसामान्यों की विस्मृति में चला गया हो या सिर्फ उनकी रचाई आरती में उनका नाम लिया जाता हो। ऐसे संतों की भूमि में प.पू.आर्यनंदीजी का जन्म हुआ था।

प.पू. आचार्य शांतिसागरजी महाराज से ब्रह्मचर्य दीक्षा प्रज्ञपत ब्रह्मचारी ज्ञानसागर का जहाँ-जहाँ विहार हुआ, वहाँ संस्कृति का जतन, धर्मसंस्कार और तत्वज्ञान का प्रसार तो हो ही रहा था और प.पू.गुरुदेव समन्तभद्र महाराज जी के साथ चर्चा होकर कारंजा और बाहुबली जैसे जैन गुरुकुलों की स्थापना वेरूल और नवागढ़ क्षेत्र में भी हो, ऐसी संयोजना मन में चल रही थी। प.पू. गुरुदेव, ब्र. ज्ञानसागर के कार्यों पर बारीकी से नजर रख रहे थे और उनकी योग्यता भी परख रहे थे। सन् 1959 के वर्षायोग के काल में पावन भूमि कुंथलगिरि क्षेत्र पर ब्र. ज्ञानसागरजी, आचार्यश्री के दर्शन हेतु आ गये। कार्तिक शुद्ध त्रयोदशी के शुभ अवसर पर, शुक्रवार 13 नवम्बर 1959 के दिन एक मुनि का जन्म हुआ। गुरुदेव समंतभद्रजी ने ब्र. ज्ञानसागरजी को विधिवत मुनि दीक्षा देकर 'मुनि आर्यनंदी' नामकरण किया।

मुनिश्री आर्यनंदीजी का अनुशासनबद्ध दिनक्रम, गुरुदेव जी के सान्निध्य में शुरू था। समय बीतता गया, मुनिश्री का स्वतंत्र विहार विदर्भ प्रांत में कारंजा परिसर में चल रहा था। उसी समय, शिरपुर स्थित अंतरिक्ष पार्श्वनाथ संस्थान पर, श्वेताम्बरियों का अतिक्रमण और कुछ साधुओं की मदद से कब्जा करने की चेष्टा की बात, मुनिश्री को ज्ञात हो गई। इस विषय की पूरी जानकारी और तपशील से घटनाक्रम जानकर क्षेत्र की रक्षा के विषय में उनका चिंतन शुरू था। दिगम्बरी जैन समाज की उदारता, सादगी और कुछ हद तक उदासीनता के चलते दिगम्बरियों के अनेकों क्षेत्रों पर अतिक्रमण करने की कुटिलता और धृष्टता श्वेताम्बरी समाज और उनके कुछ साधुओं ने की है। हजारों वर्षों से तीर्थंकरों के निर्वाण, विहार और समवशरण पवित्र पावन क्षेत्रों का संरक्षण अत्यन्त जरूरी था। इस कार्य की शुरुआत भी हो चुकी थी, लेकिन आर्थिक नियोजन उतना ही जरूरी थी। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों ने इस विषय में अत्यन्त गंभीरतापूर्वक, अनेकों समाजधुरियों के साथ, प.पू.गुरुदेव समंतभद्र जी महाराज के सान्निध्य में चर्चा की। चर्चा के फलस्वरूप दिनांक 5 अप्रैल, 1969 के दिन एक क्रांतिकारक निर्णय लिया गया, तीर्थक्षेत्र रक्षा हेतु एक करोड़ रुपये की दानराशि निधि के रूप में जमा करना। लेकिन इस महामंगल, पुण्यप्रद और समाज जागरणाभिमुख कार्य की बागडोर किसे सौंपे। यह विचार चक्र गुरुदेव जी के मन में घूम रहा था। काम बड़े जोखिम का था। अत्यन्त निस्पृह, निर्लेय, निरासक्त तद्वत जैन धर्म, संस्कृति तथा तीर्थक्षेत्रों पर महान निष्ठा रखने वाला कोई त्यागी हो तो? और इस चिंतन का चक्र मुनिश्री आर्यनंदीजी महाराज के नाम पर रुक गया। गुरुदेवजी का यह निर्णय कुछ विशेष व्यक्तियों के द्वारा मुनिश्री तक पहुंचाया गया। गुरुदेव का निर्णय तथा शिष्य के प्रति विश्वास की अनुभूति सुनकर मुनिश्री मानो नि:शब्द हो गये। गुरुदेव की आज्ञा उन्होंने विनम्रता से स्वीकार कर ली। उस समय आर्यनंदीजी महाराज की आंखों से विश्वास और कृतज्ञता के आंसू बह रहे थे तथा अंत:करण में कार्य पूर्ति हेतु एक वज्रनिर्धार साकार हो रहा था।

मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र से संकल्प पूर्ति के महायज्ञ की शुरुआत हो गई। तीर्थरक्षा हेतु दान संकलन की प्रेरणा और हेतु अत्यन्त स्पष्ट था। और शुरू हुआ हजारों किलोमीटर का हेतु गर्भ विहार। एकल विहार। मुक्तागिरि - नागपुर-महाराष्ट्र प्रांत- मध्यप्रदेश-उत्तर प्रदेश, बिहार। अखंड अविरत कार्य, लेकिन अंत:करण में हर वक्त गुरुदेव जी का वचन प्रधान था- :आदहिंद कादव्वं जदि सक्कइ परहिंत य कादव्वं' और साथ में 'आदहिंद परहिदादौ आदहिंत सुठ्ठु कादव्वं'। तीर्थरक्षा के इस विहार में मुनिश्री ने मुनिचर्या अथवा स्वाध्याय, ध्यान, तपादिक में कभी बाधा नहीं आने दी। निर्णय और संकल्प पक्का था, विरोध भी

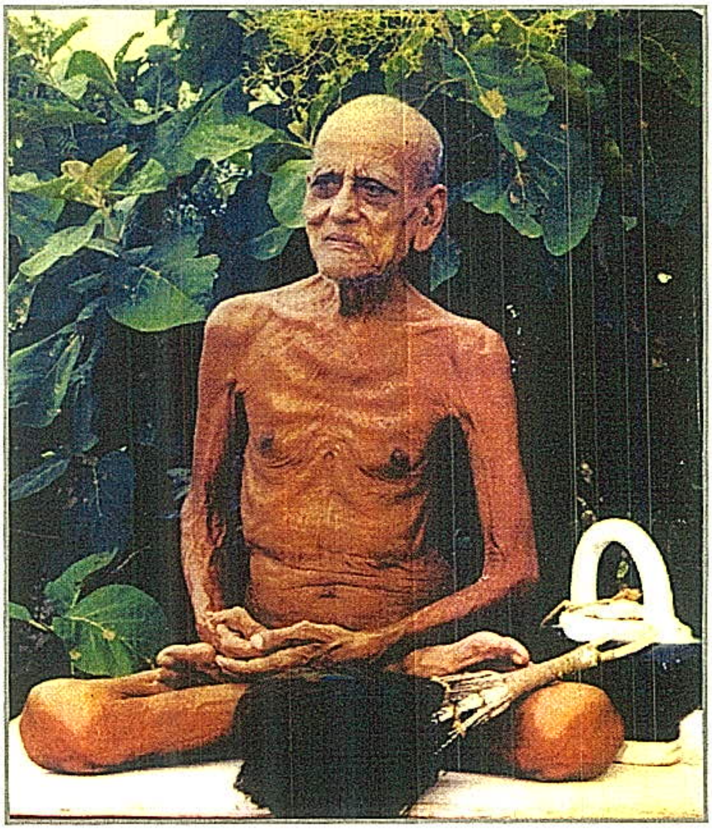

एक धर्म ध्यान है। विहार निरंतर हो रहा था। ऐसी-ऐसी जगह विहार हआ जहाँ पहले कभी कोई जैन मुनि पहुंचे नहीं थे। ऐसी ऐसी जगह जहाँ जैन धर्म के प्रति घोर अज्ञान था। इन सब कमियाँ दूर करते करते कारवाँ बढ़ता गया। संपूर्ण भारतवर्ष में लगभग 25000 कि.मी. का विहार, कुछ स्वीकृतियाँ और प्रत्यक्ष दान राशि मिलाकर 'तीर्थरक्षा निधि' 80 लाख तक पहुंचा था। मुनिश्री का वर्षावास कर्नाटक प्रांत के बेलगांव में निश्चित हुआ। इसी समय

होंगे? आचार्यश्री आर्यनंदी महाराज जी ने मन ही मन संकल्प तो किया ही था कि यह कार्य मैं करूँगा। अंत:करण में काफी चिंतन और अभ्यास के बाद कुछ खास श्रावक भक्तों के सामने यह बात रखी। श्रावक तो यह सुन कर विस्मयचकित और दिग्मूढ़ से हो गये। 'महाराज इस उम्र में वंदना कैसे ? प.पू.महाराजजी ने उत्तर दिया, 'आत्मबल ही सबसे महत्वपूर्ण है और यही हमारा सामर्थ्य है। भगवान महावीर का यह अनुयायी उम्र के 92वें वर्ष से सिद्धक्षेत्र शिखरजी की वंदना करने निकल पड़ा। कैसा यह मनोबल?

भगवान बाहुबली का सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक प.पू.ऐलाचार्य विद्यानंदजी महाराज के अधिनेतृत्व में होने जा रहा था। ऐलाचार्य जी का विहार बेलगांव से होना निश्चित था। स्थानिक श्रावक श्री रामकस्तुरी ने परिश्रमपूर्वक एक महानमंगल संयोग की योजना बनाई, उर्वरित राशि की स्वीकृतियाँ और प्रत्यक्ष राशि सहर्षता से प्राप्त हो गई और 1 करोड़ तीर्थरक्षा निधि का संकल्प पूर्ण हुआ। दिनांक 28 दिसम्बर, 1980 के दिन प.पू.ऐलाचार्यजी के मंगल सान्निध्य में, कृतज्ञता ज्ञापन समारोह का आयोजन किया गया। इस प्रकार का आयोजन प्रत्यक्ष बाहुबली क्षेत्र पर भी हुआ। इस मंगल अवसर पर प.पू.गुरुदेव समंतभद्र महाराज जी का संदेश था, 'जिनायतन, जिनबिंब, जिन मंदिर, अतिशय क्षेत्र और सारे सिद्धक्षेत्र, जैन संस्कृति के पंचप्राण हैं तथा इनकी रक्षा करना प्रत्येक श्रावक का कर्तव्य है।

एक संकल्पपूर्ति तो हो गई थी। अंत:करण में अनेकों संकल्प तथा योजनाएं थी जो समाज के मानसिक विकास और संस्कार के लिए जरूरी थी। 'मिथ्यात्व भंजन' एक ऐसा ही संकल्प था। मुनिश्री ने समाज को अपने प्रवचनों द्वारा दृढ़तापूर्वक समझाया, 'वीतराग देवों के बिना अन्यथा शरणं नास्ती'। इस बीच सन् 1992 के मुंबई वर्षायोग के पावन अवसर पर, पूज्य मुनिश्री को समस्त जैन समाज की ओर से चतु:संघ की अनुमति से आचार्य पद अर्पण किया गया।

समय बीतता गया। प.पू.आचार्य समंतभद्र महाराज जी का निर्वाण होकर दो वर्ष बीत गये थे। कुंथलगिरि क्षेत्र पर वास्तव्य कर रहे प.पू.मुनिश्री आर्यनंदीजी के मन में एक किल्मीष था। परम पावन क्षेत्र शिखरजी स्थित चोपड़ाकुंड का जीर्णोद्धार....? वात्सल्य दिवाकर विमलसागरजी महाराज ने अपने अंतिम क्षणों में, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की मदद से काफी सारे कार्य वहाँ करवाये थे। सबसे महत्वपूर्ण कार्य था, चोपड़ाकुंड पर योग्य स्थान पर जिन प्रतिमा की स्थापना और पंचकल्याणक। श्वेताम्बरियों के कृष्णकृत्यों से और काले कारस्थानों से उर्वरित कार्य रुक गया था। प.पू.विमलसागरजी महाराज के निर्वाण के बाद वहाँ एक निराशा और शैथिल्य का माहौल बन गया। इस धर्म युद्ध को आधा कैसे छोड़ेंगे? तत्कालीन समाज के श्रेष्ठीजन बेचैन थे। प.पू. विमलसागरजी जैसे महान त्यागी के परिश्रम व्यर्थ कैसे

पुनश्च 1500 किमी. का निरंतर विहार, अनवाणी, कृश देह, वैद्यराजों की चलने की मनाई। लेकिन इच्छा शक्ति के बल पर यह महामानव विहार, वंदना के लिए अग्रसर हुआ। ध्येय सिद्धि के लिए महान तपस्वी की तेजस्वी तपसाधना चल रही थी। कहते हैं, दौड़ने वालों को रास्ता अपने आप मिल जाता है। आचार्यश्री आर्यनंदीजी की दुर्दम्य इच्छाशक्ति से मानो दुर्गम मार्ग सरल हो गया, दुर्बल शरीर सबल हो गया, उम्र के 92 वर्ष पलटकर 29 हो गये। त्यागी की घोर तप:साधना से तो प्रतिकूलता भी अनुकूलता में बदल जाती है। इस बात का अनुभव तब हुआ जब 2 फरवरी, 1996 को जैसे ही शिखर जी पहुंच गये, चोपड़ाकुंड का पुलिस बंदोबस्त वहाँ से हट गया। यह एक शुभसंकेत था। प्रत्यक्ष परिस्थिति और कार्य का चिंतन हुआ। बस, यह कार्य पूर्णत्व को ले जाना है, इस दरम्यान हौतात्म्य प्राप्त हुआ तो भी कुछ नहीं, इस जाज्वल्य विचार से प.पू.आर्यनंदीजी महाराज सात दिन तक चोपड़ाकुंड पर विराजमान थे। सरसेनापति का साथ होने से कार्यकर्ताओं का मनोबल दुगुना हो गया। निरंतर मंत्रोचारण हो रहा था। आचार्यश्री का मार्गदर्शन भी मिल रहा था। उनकी सूचना के अनुसार अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक काम चल रहा था। नवनिर्मित मंदिर का काम पूर्ण हुआ और मंगल कलश के साथ विजयी ध्वजारोहण भी तत्काल कर लिया गया। कई सालों बाद, अत्यन्त परिश्रम पूर्वक यह अद्वितीय विजयश्री प्राप्त हुई। वह मंगल पावन दिन था, 23 अप्रैल, 1996. वास्तव में यह दिन प्रतिवर्ष विजय दिवस के रूप में मनाना चाहिए। प.पू.आचार्यश्री आर्यनंदीजी महाराज और प.पू.विमलसागरजी का यह अद्वितीय कार्य, धर्म के प्रति योगदान, जैन समाज कभी भी भूल नहीं सकता। उनके अग्रसर होने से यह कार्य पूर्णत्व को प्राप्त हुआ। अन्यथा कौन जाने कितने ही वर्षों तक यह कार्य अधूरा रहता ? कदाचित होता भी था या नहीं?

समस्त दिगम्बर जैन समाज इन दोनों महान संतों के ऋणों को कैसे लौटा सकता है। उनकी स्मृति तो शतकों-शतकों तक समाज के अंत:करण में सदा रहेगी ही- हे स्वामी शत् शत् प्रणाम, शत् शत् प्रणाम, शत् शत् प्रणाम।

– दिलीप घेवारे

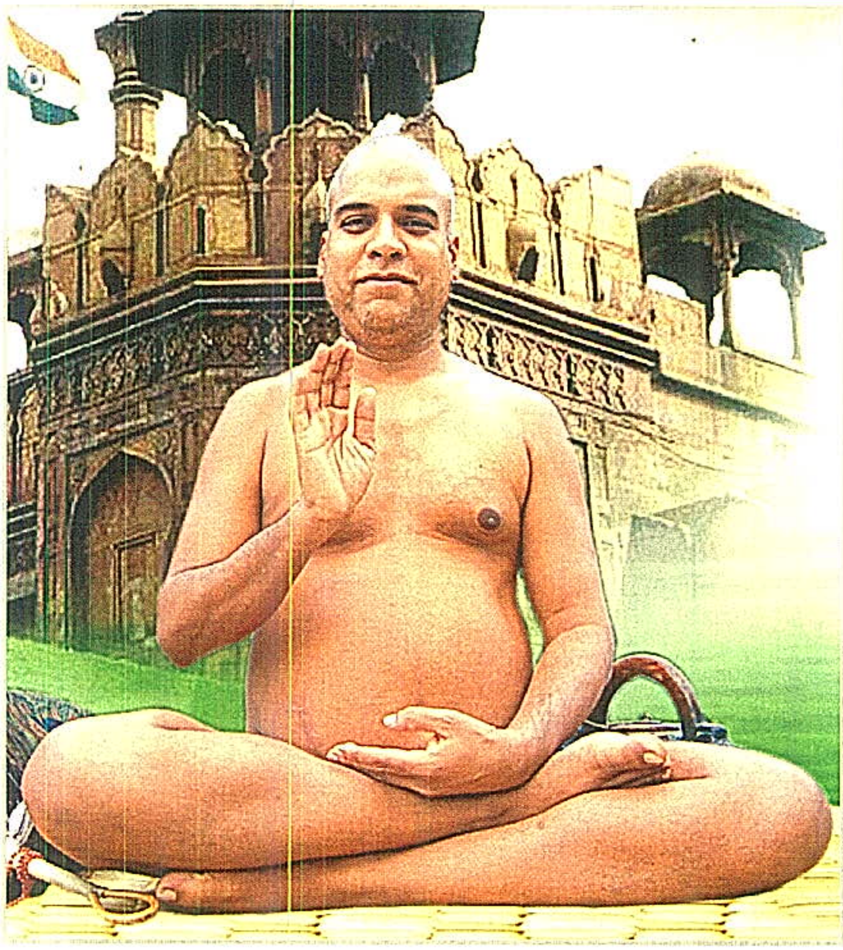

परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य 108 श्री देवनन्दी जी महाराज

तीर्थ जीर्णोद्धार प्रणेता

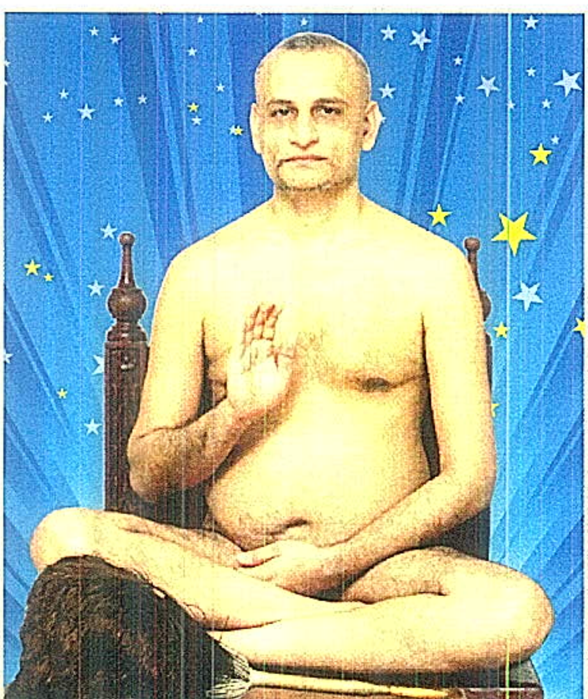

परम पूज्य मुनि श्री 108 अमरकीर्ति जी महाराज

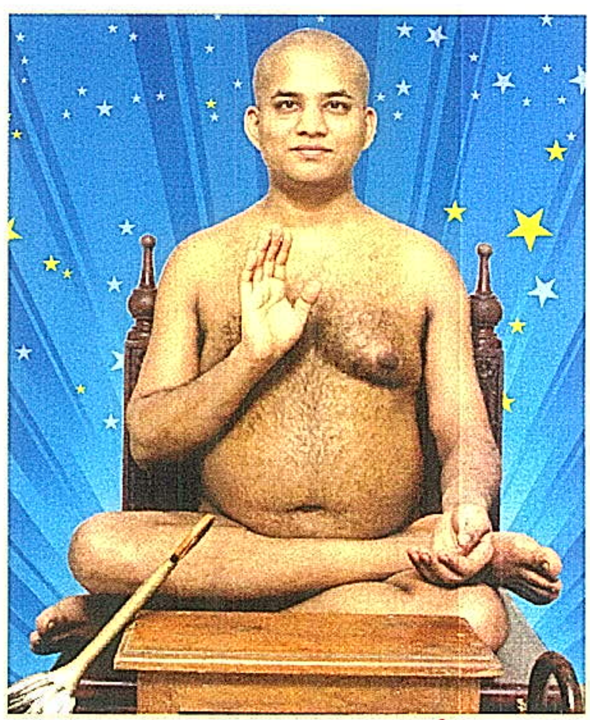

परम पूज्य मुनि श्री 108 अमोघकीर्ति जी महाराज

परमपूज्य मुनि श्री 108 अमोघकीर्ति जी एवं मुनि श्री 108 अमरकीर्ति जी का 17वां दीक्षा दिवस एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन-वीर शासन प्रभावना ट्रस्ट की ओर से 11 तीर्थो को जिर्णोध्दार कराने की ऐतिहासिक घोषणा

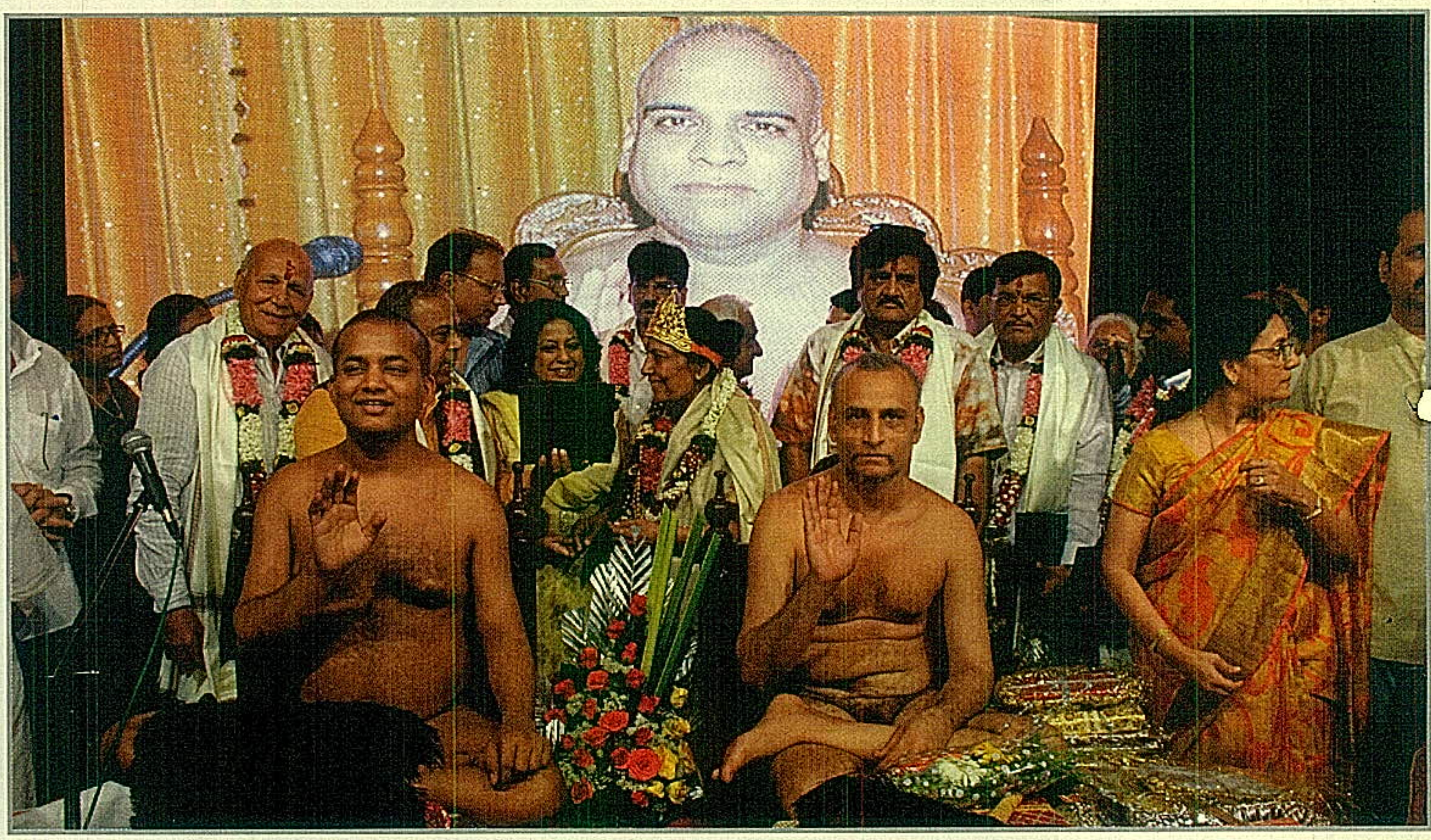

श्रमण संस्कृति की गरिमामयी परंपरा के उन्नायक आचार्य परंपरा को सशक्त पुरोधा, प्रणम्य प्रज्ञा श्रमण आचार्य देवनंदी जी महाराज के सुशिष्य मुनि श्री 108 अमोघकीर्ति जी एवं मुनि श्री 108 अमरकीर्ति जी महाराज का 17वां दीक्षा दिवस रविवार दिनांक 28 फरवरी 2016 को **'भाईदास सभागृह'**, विलेपार्ले मुंबई में आयोजित किया गया। पूरा हॉल खचाखच भरा था। दोनों मुनिराज सिंहासन पर विराजमान थे। स्वागत एवं दीप प्रज्वलन के पश्चात् बाल कलाकारों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट एवं मैनेजिंग कमेटी, विलेपार्ले के तत्वावधान में श्री वीर शासन प्रभावना ट्रस्ट, मुंबई की ओर से आयोजित सम्मान समारोह में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की नवनिर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.जैन एवं उनकी टीम का सम्मान किया गया। श्रीमती रुबी डावड़ा ने स्वर्ण मुकुट, शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र अर्पण कर श्रीमती सरिता एम. जैन का स्वागत अभिनंदन किया। पश्चात् मंच पर आसीन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नवनिर्वाचित महामंत्री श्री संतोष कुमार जैन पेंढारी, नागपुर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नीलम अजमेरा, संरक्षक सदस्य श्री एम.के. जैन, कोषाध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया, तमिलनाडु अंचल के अध्यक्ष श्री कमल कुमार जैन ठोलिया, महाराष्ट्र अंचल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अनिल जमगे एवं राकेश पाटनी, नागपुर का शॉल, श्रीफल एवं माल्यार्पण कर सम्मान किया गया। परमपूज्य मुनि अमरकीर्ति जी महाराज ने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के 114 वर्ष के इतिहास में यह प्रथम अवसर है जिसमें एक नारी को सर्वोच्च स्थान का दर्जा मिला है। श्रीमती सरिता जैन से समाज का बच्चा-बच्चा परिचित है। वे महिला मंडल की अध्यक्षा भी है। तीर्थो की सेवा करने का उनका यह भाव आज से नहीं पिछले 25 वर्षो से चल रहा है। जिस प्रकार एक शिल्पकार पत्थर की मूर्ति को सुन्दर स्वरुप देकर उसे भगवान बना देता है, उसी प्रकार सरिता जी तन-मन और धन से समर्पित भाव से तीर्थों के सृजन, उनके उत्कर्ष के लिए संकल्पित एवं वचनबध्द है। मुनि श्री अमरकीर्ति जी महाराज ने कहा कि तीर्थ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं, जिस प्रकार हम अपने मां बाप की सेवा संभाल करते है उसी प्रकार हमें अपने तीर्थों की रक्षा करना चाहिए। प्राचीनता की रक्षा करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। जो व्यक्ति अपनी संस्कृति की रक्षा नहीं कर सकता या प्राचीनता की रक्षा नहीं कर सकता वह जैन कहलाने का हकदार नहीं हो सकता। उन्होंने कहा जो पुण्य 100 नये मंदिरो का निर्माण कराने में मिलता है वही पुण्य एक प्राचीन तीर्थ का जीर्णोध्दार कराने से प्राप्त होता है। श्रीमती सरिता जैन आज से नहीं पिछले 25 वर्षो से तीर्थो के लिए समर्पित है। मुनि श्री अमोघकीर्ति महाराज ने मुनिचर्या, संयम, साधना पर अपने भाव प्रकट करते हुए कहा कि इस पंचमकाल में समाज के बीच रहकर मुनि धर्म निभाना बड़ा ही कठिन कार्य है। दिगंबर की पहचान साधू से होती है। उन्होंने जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, मुंबई से 11 तीर्थो के जीर्णोध्दार कराये जाने की घोषणा की। इसके लिए लिए जैन प्रभावना ट्रस्ट के ट्रस्टियों का स्वागत अभिनंदन किया। इस अवसर पर श्रीमती सरिता जैन ने अपनी ओर से 1 लाख 11 हजार की दान राशि देने की घोषणा की।

तीर्थक्षेत्र जीर्णोद्धार श्री क्षेत्र पालीताना, (गुजरात) की झलकियां

पूर्व स्थिति

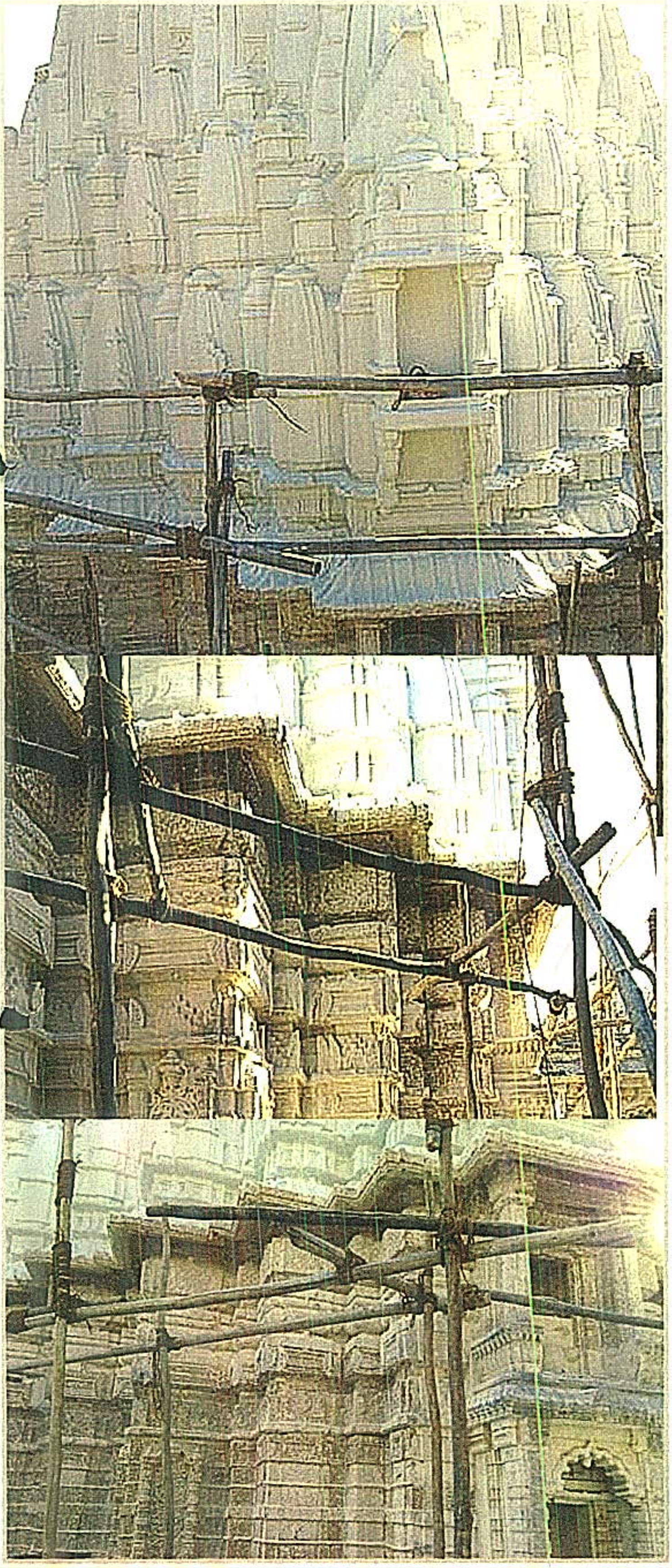

वर्तमान स्थिति

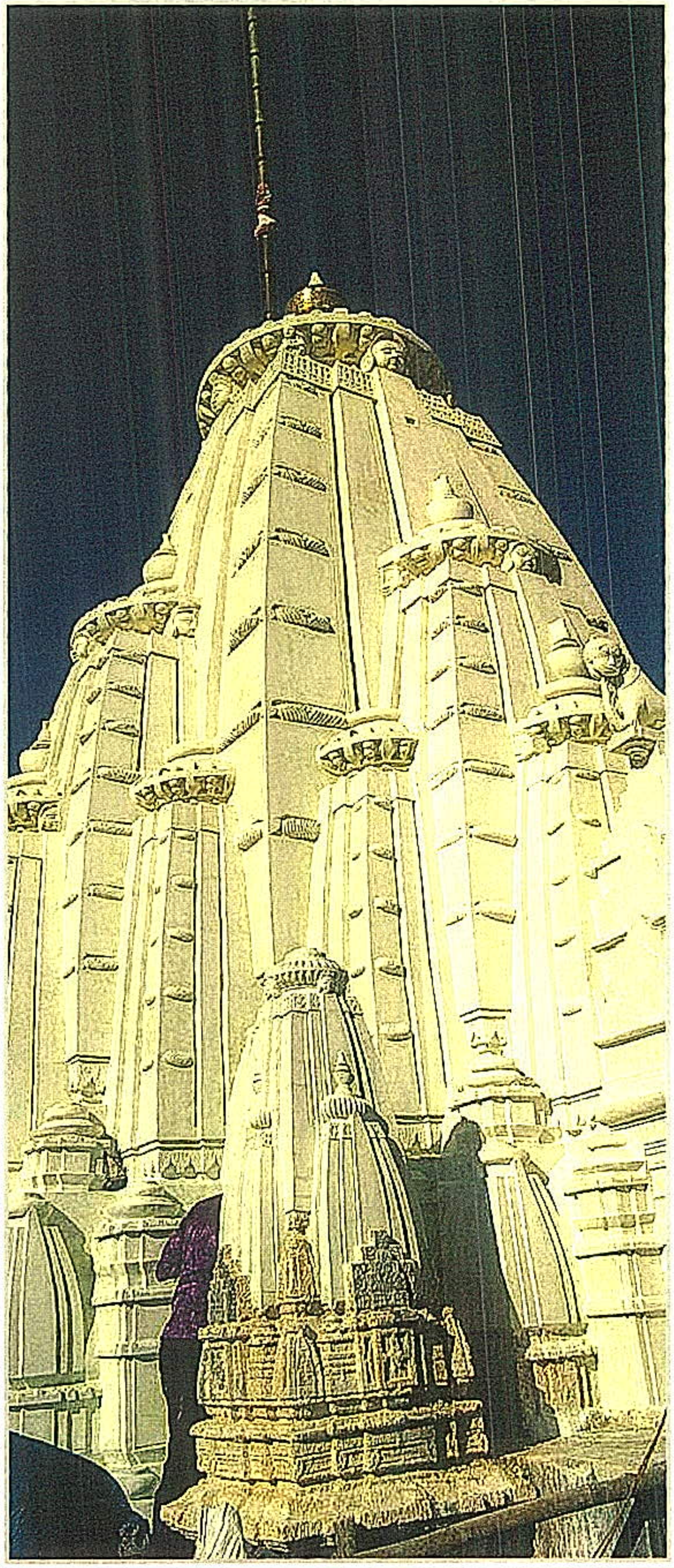

श्री 1008 केशरियानाथ दिगम्बर जैन संस्थान जामोद जिला बुलढाना (महाराष्ट्र)

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सहयोग से मंदिर जी के बाहरी भाग का पूरा जीर्णोद्धार कार्य पूर्ण कर लिया गया है। जीर्णोद्धार के बाद मंदिर जी की स्थिति इस प्रकार हुई है।

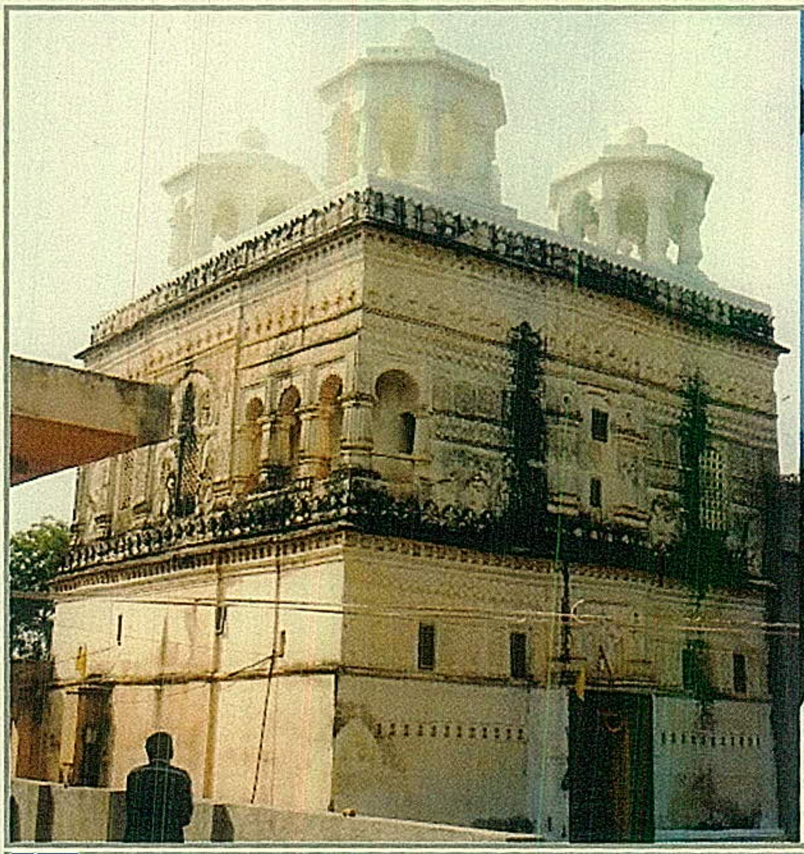

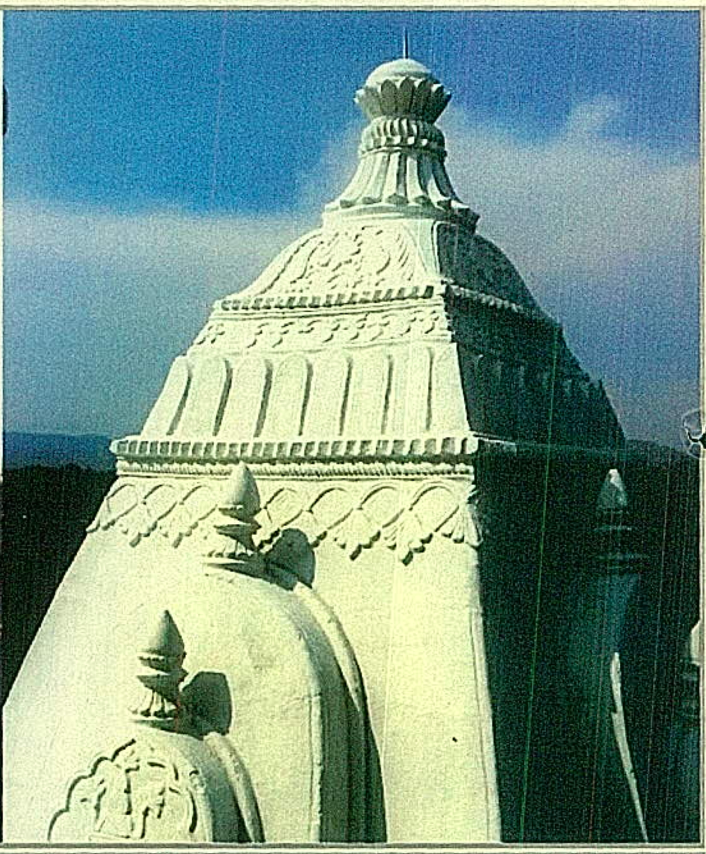

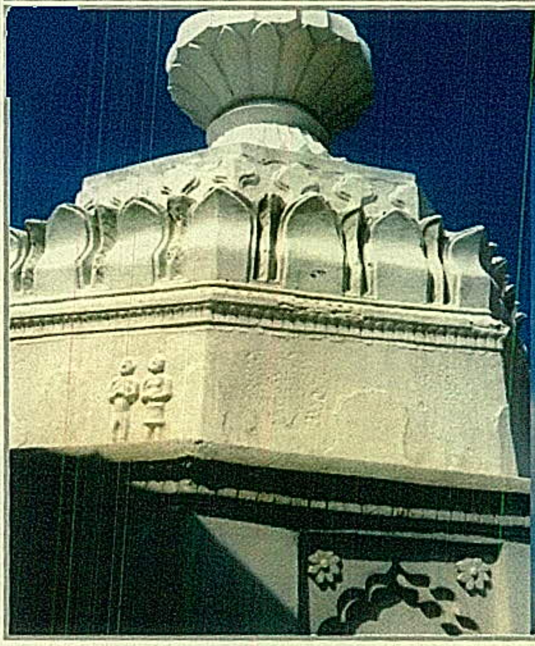

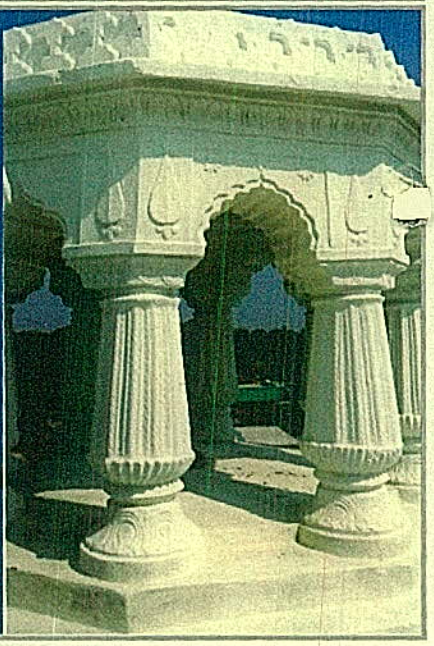

अब मंदिर जी के अंदर वाले परिसर के प्राचीन चित्रकारी के जीर्णोद्धार का जो पुरातत्व विभाग के अनुभवी कारीगारों द्वारा कलर को जीवित कराने का कार्य है। जिस पर आनुमनित 30 लाख रुपये व्यय होंगे।

देश के १५ प्राचीन जीर्ण जिनालयों का जीर्णोध्दार

जीर्णोद्धार कलश स्थापना अनुष्ठान समारोह, मुंबई दिनांक १०/०७/२०१६
कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से

जैन संस्कृति की रक्षा हेतु प्राचीन मंदिरों के जीर्णोध्दार को अग्रक्रम देते हुये, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं श्री वीरशासन प्रभावना ट्रस्ट ने साथ मिलकर कार्य करने का निश्चय किया, और मुनि युगल का इस वर्षायोग का शुभारंभ एक मंगलमय उद्देश्य पूर्ति हेतु स्थापित किया गया। परम पूज्य अमोघकिर्तीजी एवं अमरकिर्तीजी मुनियुगल की पावन प्रेरणा और आशीर्वाद से "जीर्णोध्दार अनुष्ठान" मुंबई जैसे व्यस्ततम नगरी में प्रारंभ हुआ। मुनियुगल की पावन प्रेरणा से प्रेरित होकर मुंबई महानगरी के 210 परिवार इस अनुष्ठान मे सम्मिलित हुये, अपनी चंचला लक्ष्मी का इतने पुण्यमयी आयतनों के जीर्णोध्दार में सदुपयोग करने का संभवतः यह प्रथम अवसर होगा।

इसके प्रथम चरण मे परम पूज्य श्री युगल मुनिराज की पावन प्रेरणा से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की एक टीम महाराष्ट्र, राजस्थान, तामिलनाडू, मध्यप्रदेश, गुजरात, कर्नाटक का दौरा करके देश के 15 प्राचीन मंदिरों का जीर्णोध्दार का शुभ संकल्प निश्चित किया गया। इस मंगलमय उद्देश्य की पूर्ति हेतु देश की प्राचीन संस्था भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं श्री वीरशासन प्रभावना ट्रस्ट को साथ में लेकर यह योजना क्रियान्वित करने का निश्चय किया गया। इस योजना को साकार रूप देने हेतु पूज्य युगल मुनिराज का आशीर्वाद प्राप्त किया गया है। इस कार्य की पूर्णता पूज्य गुरुदेव प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री देवनंदिजी महाराज के आशीर्वाद से पूर्ण हुई।

"जीर्णोध्दार अनुष्ठान" योजना के अंतर्गत देश के 15 प्राचीन जीनालयों का चुनाव किया गया है। जिसकी सूची निम्न है।

1. दहिगाव (महाराष्ट्र)
2. औंढा नागनाथ (महाराष्ट्र)
3. जळगाव जामोद (महाराष्ट्र)
4. भानाशिवरा (महाराष्ट्र)
5. मांगीतुंगी (महाराष्ट्र)
6. नेमगिरी जिंतूर (महाराष्ट्र)
7. काठी सावरगाव (महाराष्ट्र)
8. गलियाकोट (राजस्थान)
9. वालापंडाल (तमिलनाडु)
10. ईसाकोलात्तुर (तमिलनाडु)
11. Kizhvailamoor (तमिलनाडु)
12. Geenji (तमिलनाडु)
13. हाळे बेळगोळा (कर्नाटक)
14. मुक्तागिरी (मध्यप्रदेश)
15. पालीताणा (गुजरात)

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं श्री वीरशासन प्रभावना ट्रस्ट की ओर से इस जीर्णोध्दार अनुष्ठान मे सम्मिलित सभी परिवार का हार्दिक अभिनंदन

जीर्णोद्धार कलश स्थापना अनुष्ठान समारोह, मुंबई दिनांक १०/०७/२०१६
कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से

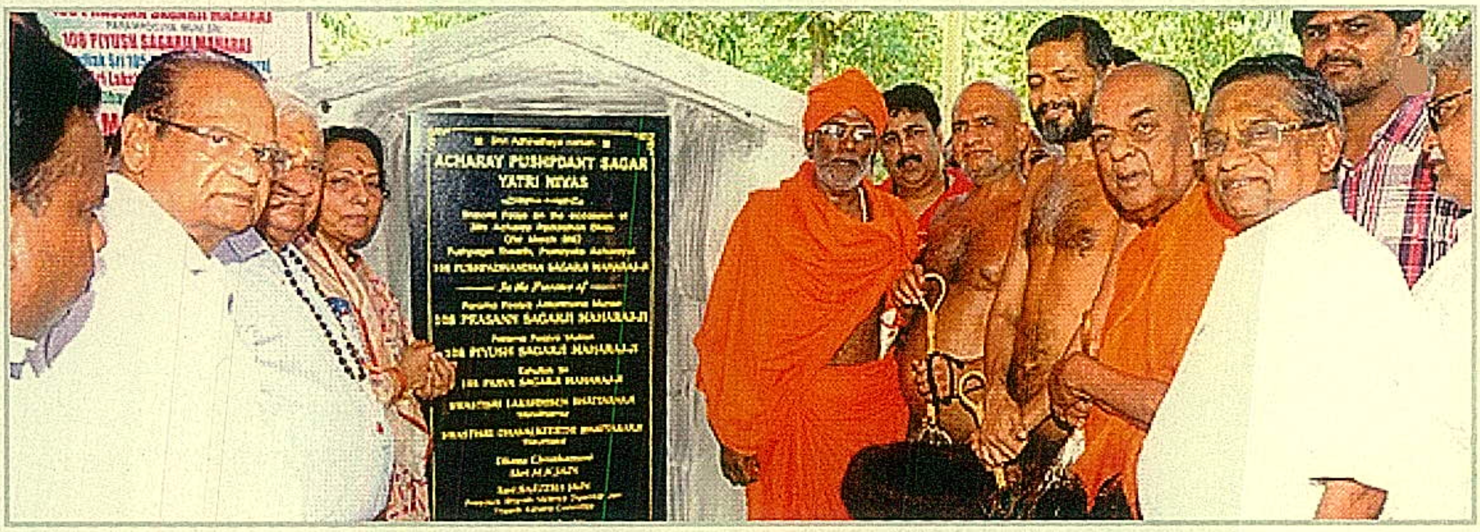

Bhojanshala at Melchittamur

Arihantgiri

Erlachery

Erlachery

Erlachery

Mel Sithamoor Ezuperum Vizha

Tyagi Niwas,
Hosur

Yatriniwas at ponnur

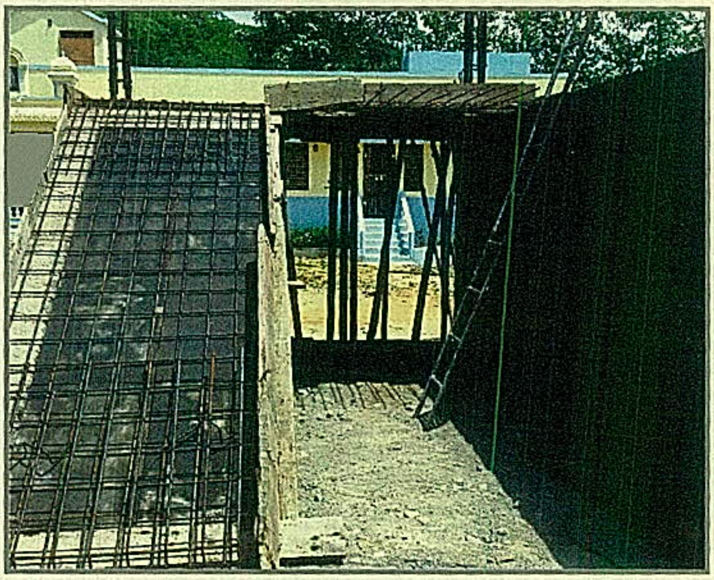
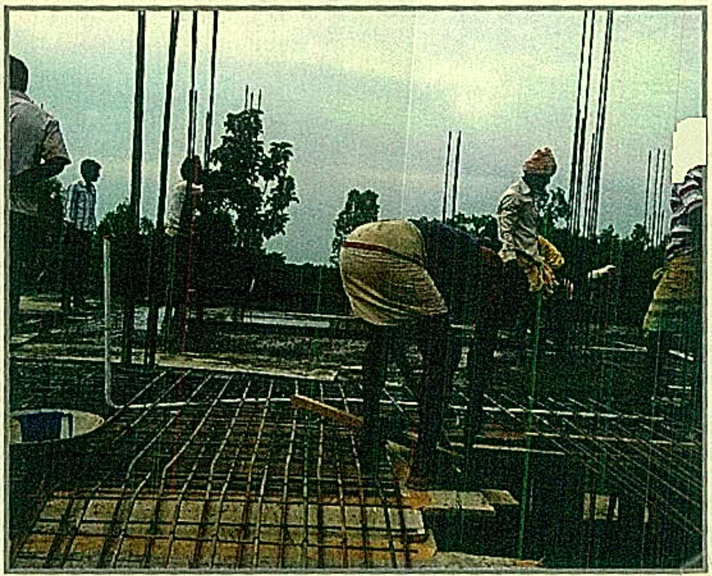

परम पूज्य मुनिद्वय श्री अमोघकीर्तिजी एवं मुनि श्री अमरकीर्तिजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में श्री वीर शासन प्रभावना ट्रस्ट, मुम्बई की ओर से प्राप्त सहयोग राशि से तमिलनाडु के प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार

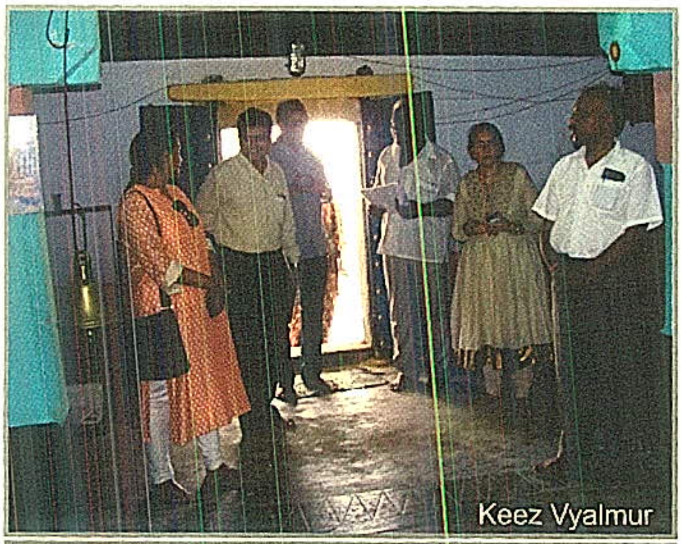

Keez Vyalmur

Ponnur Hills

Keez Vyalmur

Gingee Krishnapuram

Gingee Krishnapuram

Gingee Krishnapuram

Vazapandal

Mel Sitamur

Mel Sitamur

Mel Sitamur

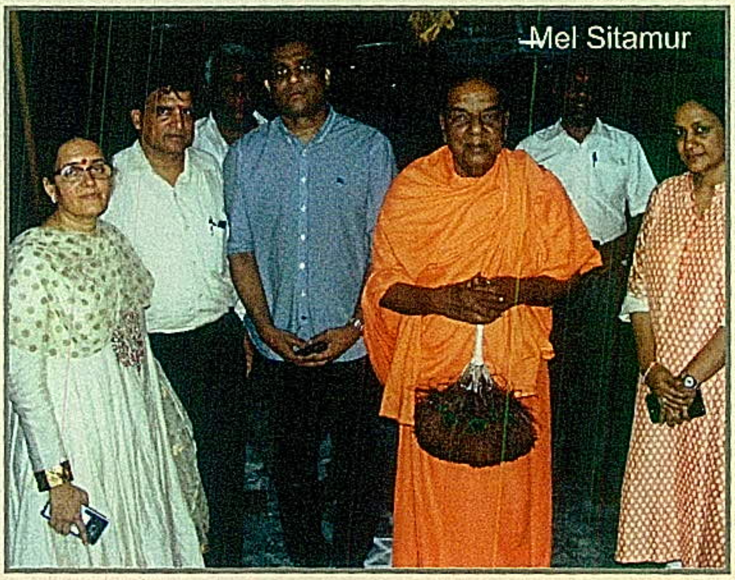
Mel Sitamur

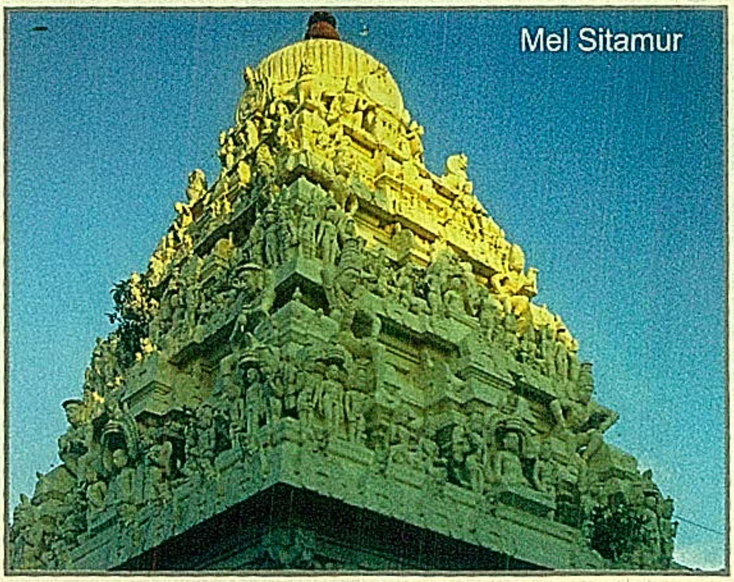
Mel Sitamur

कर्नाटक में मई 2016 से पूर्ण किये गये जीर्णोद्धार कार्यों के छायाचित्र

Shri Parshwanat Temple Aratal Dist Haveri
Before Restoration

Shri Parshwanat Temple Aratal Dist Haveri
After Restoration

Jain Basadi Haduvahalli
Before Restoration

Jain Basadi Haduvahalli
After Restoration

Kanakgiri Kshetra
Before Restoration

Kanakgiri Kshetra
after Restoration

श्री 1008 खजुराहो क्षेत्र पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रदत्त आंशिक सहायता राशि से पूर्ण कार्य की झलकियाँ

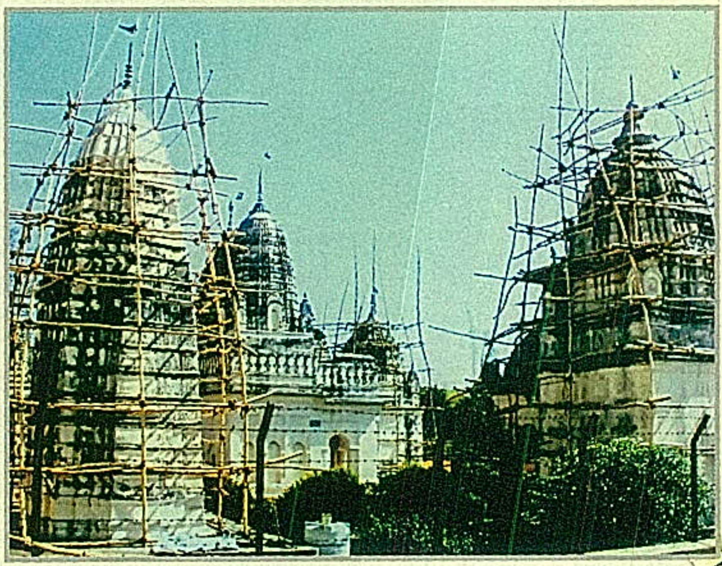

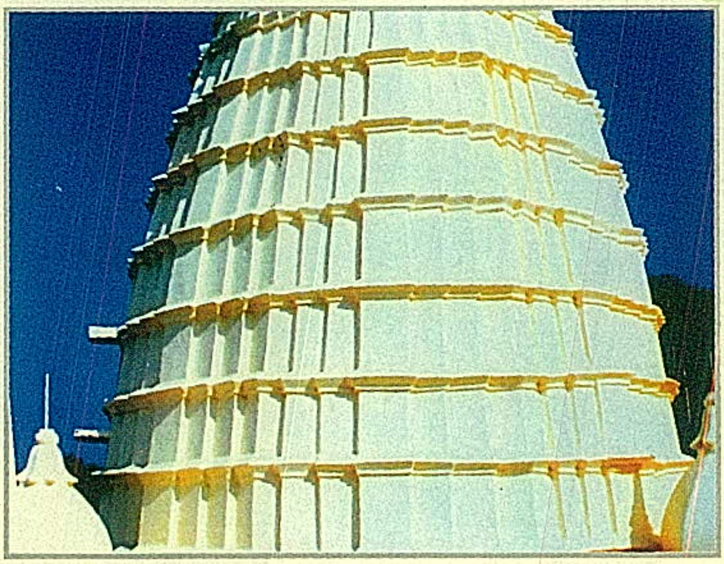

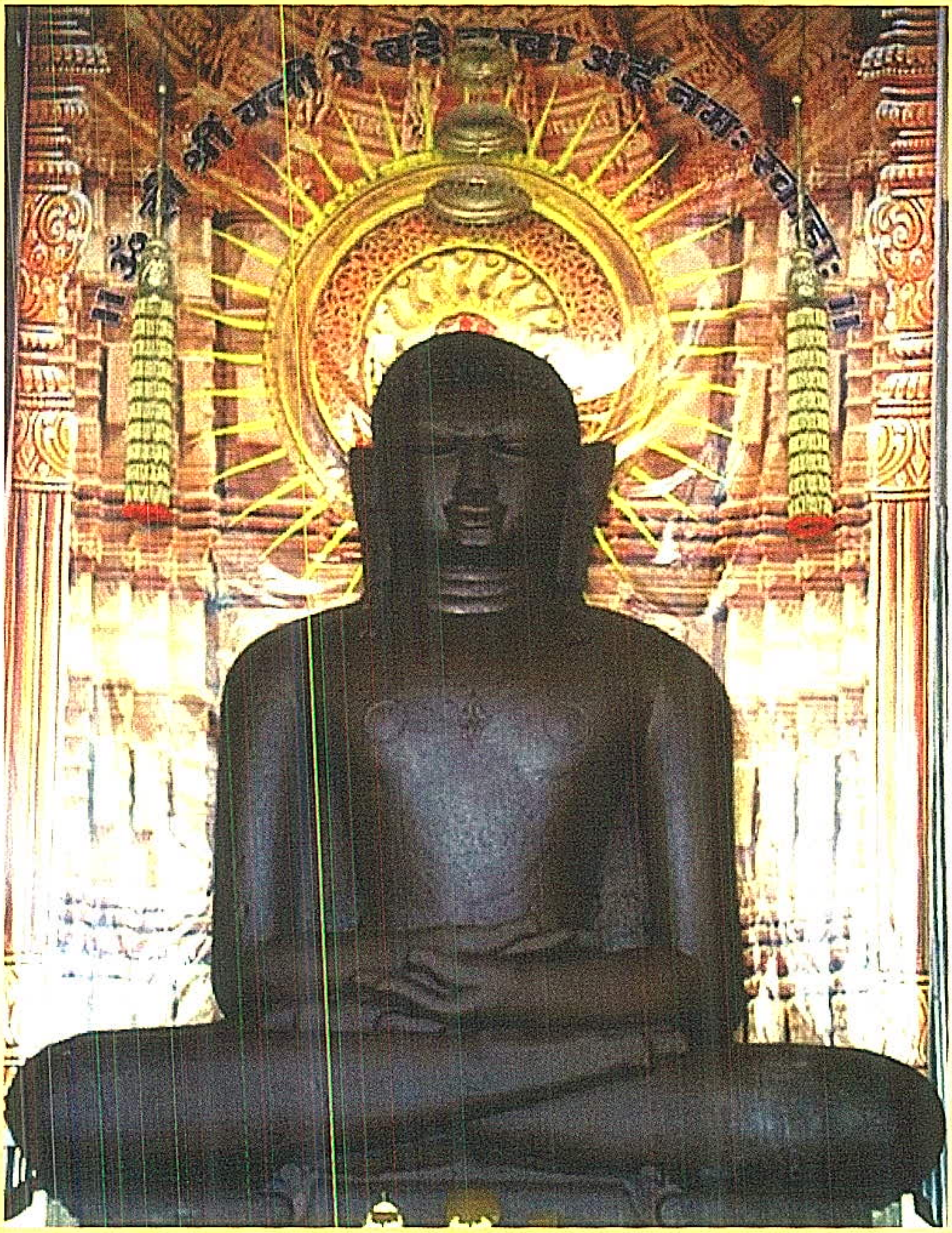

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com